# विषय-प्रवेश

## वाणी, भाषा और लिपि

मन के भावों और उद्‌गारों को मुख से प्रकट करना, यही वाणी है। पशु, पक्षी अथवा मनुष्यों में जब कोई वर्ग एक प्रकार की वाणी बोलता है, उस बोली से परस्पर भावो को कहता, सुनता और समझता है, तब वाणी के उस प्रकार को उस विशिष्ट-वर्ग की भाषा की सज्ञा दी जाती है। और उसी भाषा को जब चिह्नों-आकृतियों मे लिख कर प्रकट किया जाता है, तब उन्हीं चिह्नो और आकृतियों को उस वर्ग-विशेष की लिपि कहा जाता है।

कुछ विद्वानों के मत से धरातल पर पृथक्-पृथक् भूखण्डों में विभिन्न समयो पर मानवों की सृष्टि और विकास होता रहा है। वे सब एक ही स्थान पर एक ही मानव से उत्पन्न नही है। फलतः उन सब की भाषाएँ भी एक दूसरे से बिलकुल पृथक् और स्वतन्त्र है। इन पृथक् कुलों को ये विद्वान् आर्य, मगोल, सेमेटिक, हेमेटिक, द्रविड़ आदि की सज्ञा देते है।

किन्तु भारतीय मत की घोषणा इसके विपरीत है, और इस्लामी तथा ख्रीष्ट मान्यता भी उसका अनुमोदन करती है। इस मत के अनुसार सारी मानव जाति एक ही मूल पुरुष मनु अथवा आदम की सन्तान हो कर मानव अथवा आदमी कहलायी। कालान्तर मे विभिन्न भूखण्डों मे फैलने, एक दूसरे से अलग-थलग होने और वहाँ की विशिष्ट जलवायु और संस्कारों से प्रभावित होने के फल-स्वरूप वह मानव जाति अनेक रूप, रंग, आकार और बोलियों में विभक्त होती गई। यह परिवर्त्तन लाखों-वर्षो से चलते आ रहे है और इसलिए उन मानव-समूहों के रूप, रंग, आकार और बोलियों के अन्तर भी इतने सघन हो गये है कि ज्ञान की उपेक्षा करने वाले और केवल तर्क, अनुमान, प्रयोग, अनुसधान आदि भौतिक साधनों को ही ज्ञान मान कर उन पर निर्भर रहने वाले पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके अनुवर्ती भारतीयो का भ्रमित होजाना स्वाभाविक ही है। यह बात इनसे ओझल हो जाती है कि कितना भी बडा वैषम्य इन जातियों के लक्षणो मे दिखाई देता हो, उनकी आकृतियो और भाषाओं मे कुछ ऐसे तथ्य लाखों वर्ष बाद भी झलकते है जो सारी मानव जाति को किसी पुरातन काल में एक मूल मानव का पितृत्व प्रदान करते है।

भारतीय वाङ्मय के सृष्टिक्रम-सम्बन्धी विशाल ज्ञानकोश को विस्तार-भय से किनारे भी रख दे, तो भी जन-साधारण की समझ में आने वाली

कुछ बाते तो हमारे मत की पुष्टि करती ही हैं। उदाहरण के लिए—(१) द्रविड़कुल की भाषाएँ आर्यकुल की भाषाओं से पाश्चात्य मत में मूलतः पृथक् मानी गई है। किन्तु सस्कृत की वर्णाक्षरी, उनका वर्गीकरण तथा लिपि का बाये से दाहिने लिखा जाना उनके समान ही है। इसके विपरीत आर्यकुल की अनेक भाषाओ का खरोष्टी लिपि में (दायें से बायें) लिखा जाना और वर्णों की सख्या, क्रम, वर्गीकरण आदि में बड़ा अन्तर है। (२) अरबी और संस्कृत की शब्दावली और लिपि मे नाममात्र को भी मेल नही है, किन्तु उनकी व्याकरण में बडी समानता है, जबकि संस्कृत का अपने आर्यकुल ही की अन्य भाषाओ के व्याकरण से साम्य नगण्य सा है। (३) उत्तर-पश्चिम में सुदूरस्थ ईरान की अवेस्ता और गाथाओ की भाषा में असुर का अहुर उच्चारण है। बीच के पूरे आर्यावर्त्त में इसका अभाव होने के बाद उत्तर-पूर्व में असम प्रदेश में फिर दस को दह और गोसाईं को गोहाईं बोलते है। (४) नेपाल के आदिम निवासी आर्यकुल के रूप, आकृति से सर्वथा भिन्न है। किन्तु वहाँ कुछ ही समय से आबाद आर्यकुल के राज-परिवार तथा राना-परिवार की आकृतियों पर नेपाली प्रभाव प्रत्यक्ष है; आदि, आदि।

## भारतीय भाषाएँ

अस्तु, जब मानव मात्र एक मनु (आदम) की सन्तान हैं और आज पृथ्वी पर उपलब्ध विविध भाषाओं और बोलियों का आदि-स्रोत एक हैं, तब भारत के निवासियों और भारतीय भाषाओं को मूलतः पृथक् मानना, उनका बुनियादी वर्गीकरण करना कहाँ तक समुचित है। जहाँ तक हिन्दी, गुरुमुखी, सिन्धी, राजस्थानी, ओड़िया, बंगला, असमिया, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, सिंहली आदि भाषाओ, लिपियों अथवा बोलियों का सम्बन्ध है इन सब की वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण आदि में इतना अधिक साम्य है कि उनको एक परिवार से बाहर समझने की रत्ती भर गुंजाइश नही। ये सभी प्राचीन संस्कृत की पौत्री और भारतीय जनपदो में शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत अथवा उनके अपभ्रंशों की पुत्रियाँ है। अलबत्ता भारत की दक्षिणी भाषाओं—मलयाळम, तॅलुगु, कन्नड़ और तमिळ—का शेष भारतीय भाषाओं और लिपिओं से भेद अधिक दूर का है।

किन्तु उर्दू को तो हिन्दी से पृथक् मानना ही भूल है। उसका तो हिन्दी से वही सम्बन्ध है जो एक रूह का दो कालिब से—एक प्राण का दो शरीर से। उर्दू-हिन्दी की व्याकरण, क्रियाओ के विभिन्न कारकों, कालो में प्रत्यय और रूप—ये एवं सब एक समान है। अरबी लिपि में लिखी जाने

अथवा अरबी-फ़ारसी भाषाओं के शब्दों के अधिक समाविष्ट होजाने से वह पृथक् भाषा नही हो सकती। कदाचित् लोगों को कम पता है कि नगरो मे नही ग्रामो तक में नित्य बोली जाने वाली और हिन्दी कही जाने वाली भाषा में एक तिहाई से अधिक शब्द अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि के बार-बार बोले जाते है। उनमें ऐसे भी अरबी शब्दों की भरमार है जिनको लोग ठेठ हिन्दी की सम्पत्ति समझने लगे है, उनके अरबी-फ़ारसी होने की कल्पना भी नहीं करते। जैसे हलुवा, साइत (मुहूर्त्त), मेहरिया, हमेल, तरह, अन्दर, अगर, अचार, अजगर, अतलस, अबीर, अमीर, गरीब, अरक, मेवा, मल्लाह, मसखरा, मक्कर, लाला, लहास, स्याही, सदूक, रुमाल आदि।

## उद्देश्य

उपर्युक्त भाषाई पहलुवो के अलावा, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक दृष्टि से भी सारा देश परस्पर ऐसा गुथ गया है कि उसमें एकात्म-भाव के सर्वत्र दर्शन होते है। उसके प्रभाव की छाप सभी भाषाओ के साहित्य पर मौजूद है। इसलिए अपने-अपने क्षेत्र में विभिन्न लिपियों के फलते-फूलते रहने के बावजूद, यह जरूरी है कि राष्ट्र में सबसे अधिक सुपरिचित और व्याप्त देवनागरी लिपि के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा और साहित्य को भारत के कोने कोने तक पहुँचाया जाय। भारत भूमि के हर कोने मे प्रस्फुटित वाङ्मय को हर भारतवासी तक पहुँचाया जाय। लिपि और भाषा के सेतुकरण द्वारा सारे राष्ट्र का एकीकरण—यही इस 'भाषा-शिक्षण-सीरीज' का उद्देश्य है।

## उद्देश्य-पूर्ति का माध्यम देवनागरी लिपि

आसेतु हिमालय, सारे देश के साहित्य, सस्कृति, आचार-विचार और सन्तो की वाणी को, किसी एक क्षेत्र अथवा समुदाय तक सीमित न रहने देकर, सारे भारतीयो की सामूहिक सम्पत्ति बनाना ही राष्ट्रीय एकीकरण की उपलब्धि है। इस्लामी हदीसें, फारसी और उर्दू का विशाल गद्य-पद्य साहित्य, तमाम शायरों के दीवान, कुल्यात, मस्नवी और अदबी नावेल, नरसी मेहता के भजन, टैगोर की गीताञ्जलि, तिरुवल्लर का तिरुक्कुरळ् और सन्त नानक की अमर वाणी क्रमशः उत्तर प्रदेश, गुजरात, बगाल, तमिळनाडु और पञ्जाब को ही नही, अपितु सारे देश को प्राण प्रदान करे, यह उनके अनुवाद मात्र के द्वारा सभव नही। जिस भाषारूपी सुधाभाण्ड से यह अमृत प्रवाहित हुए है उस भाषा के बोध के विना वह प्राण सुलभ नही।

## प्रत्यक्ष प्रणाली (डाइरेक्ट मेथड)

अस्तु, एक ही मार्ग है। देवनागरी लिपि, जो सारे देश में अपेक्षाकृत सर्वाधिक व्याप्त है, भारतीय प्राचीन वाङ्मय की भाषा—देवभाषा सस्कृत की अपनी लिपि है, उसके माध्यम से हम क्षेत्रीय भाषा का आरंभिक ज्ञान प्राप्त करे। उसके किसी मान्य लोक-प्रिय ग्रंथ को चुन कर उसके अध्ययन द्वारा अपने अर्जित उपर्युक्त ज्ञान का अभ्यास किया जाय। धीरे-धीरे, अभ्यास के द्वारा उस भाषा मे अभीष्ट ज्ञान सुलभ होगा।

## अन्य लिपियों का विरोध नही

उपर्युक्त प्रयास से यह किसी प्रकार अभीष्ट नही कि भारत में प्रयुक्त अन्य लिपियो के शिक्षण अथवा प्रचार में जरा भी कमी हो। वह वैसे ही, वरन् अधिक फलती-फूलती रहें। किन्तु यह भी न भूलना चाहिए कि यदि हम इस देवनागरी लिप्यन्तरण की पद्धति से उस भाषा के अमूल्य साहित्य को देश मे प्रसारित करने में उपेक्षा करते है, तो निश्चय ही गिने-चुने व्यक्तियो अथवा सीमित समुदाय को छोड़ कर सारे देश के जनसमुदाय से वह भाषा और साहित्य दूर होता जायगा।

## उर्दू में फ़ारसी की इजाफ़त

उर्दू साहित्य को देवनागरी लिपि मे लिप्यन्तरित करते समय एक 'इजाफ़त' के विवाद को बडा महत्त्व दिया जाता है। सामासिक पदो मे फारसी मे इजाफ़त का प्रयोग होता है। दीवाने गालिव—ग़ालिव का दीवान, तीरो कमान-तीर और कमान। इनमे क्रमशः तत्पुरुष और द्वन्द्व समास है। इनमे 'दीवाने' का 'ने' और 'तीरो' का 'रो' ह्रस्व वोले जाते है। उनको दीर्घ अर्थात् हिन्दी की मात्रा के अनुरूप वोलने पर 'दीवाने' का अर्थ 'पागल' अर्थात् 'पागल गालिव' हो जायगा नकि 'गालिव का दीवान'। इसकी विधि फारसी मे उनको 'ह्रस्व' बोलने की है।

इसको समझने के लिए अ़रवी भाषा का उदाहरण प्रस्तुत है। अरवी मे 'कुर्आनुन् मजीदुन्' कर्मधारय समास है, अर्थात् 'पवित्र कुर्आन'। फ़ारसी वालों के सामने इसको वोलने के लिए दो विकल्प थे। या तो वह अ़रवी शैली पर 'कुर्आनुन् मजीदुन्' कहते, या अपनी निजी फ़ारसी-शैली-पर 'कुर्आने मजीद' कहते जिसमे 'ने' का ह्रस्व उच्चारण होता है।

यही दो विकल्प हिन्दी और उर्दू वालो के लिए है। या तो अ़रवी की पद्धति पर 'कुर्आनुन् मजीदुन्' लिखे अथवा हिन्दोस्तानी सामासिक पद्धति पर 'कुर्आनमजीद' लिखे—इसमे दोनो शब्द परस्पर मिला कर

लिखे जायँगे। इसी प्रकार हिन्दोस्तानी आलिम वोलते भी है। अस्तु, बीच मे तीसरी भाषा 'फारसी' की पद्धति इख्तिआर करने की जरूरत नही।

कहने का प्रयोजन यह कि या तो अ़रबी को अ़रबी और फारसी को फ़ारसी शैली मे लिखे-बोले, या फिर अपने हिन्दोस्तानी तरीके पर वोले, जैसे कि फारसी व़ाले अपनी फारसी शैली मे अरबी को बोलते है। या तो अ़रबी के ढग पर 'क़ुर्आनुन् मजीदुन्' लिखिए, या हिन्दोस्तानी ढग पर 'कुर्आन-मजीद', न कि फारसी का तीसरा माध्यम 'कुर्आने मजीद' ग्रहण करे।

## ह्रस्व 'े' और ह्रस्व 'ो' का देवनागरी स्वरूप

यह तो 'अरबी' के देवनागरी-लिप्यन्तरण की बात है। अब उसी सिद्धात पर फ़ारसी शब्दो के सामासिक पदो को भी लिखिए। या तो हिन्दोस्तानी ढग पर 'दीवान-गालिब' लिखिए, और उसको ऊपर दी गई दलील के अनुसार सही न मानने का कोई कारण नही; और या फिर 'फ़ारसी प्रयोग' होने के नाते फारसी ढग पर 'दीवाने गालिब' लिखिए।

अब 'दीवाने गालिव' के 'ने' और 'तीरो कमान' के 'रो' को ह्रस्व कैसे लिखा जाय, यह समस्या कठिन नही अति सरल है। दक्षिणी भापाओ मे भी 'ह्रस्व ए' और 'ह्रस्व ओ' के उच्चारण वर्तमान है। देवनागरी लिप्यन्तरण मे दीर्घ को े, ो और ह्रस्व को ॆ, ॊ लिखा जाता है। फ़ारसी-शैली पर ही लिखने के इच्छुकों को 'दीवानॆ गालिब' और 'तीरॊ कमान' लिखना चाहिए।

इस प्रकार सार यह है कि उर्दू साहित्य को सारे देश में अक्षुण्ण और व्यापक बनाने और राष्ट्रभाषा को भी अ़धिक परिपुष्टि देने के लिए यह जरूरी है कि उर्दू का समग्र मूल्यवान् साहित्य देवनागरी में लिप्यन्तरित कर दिया जाय। जय भारत !

## शरीफ़ज़ादः (आर्यपुत्र)

'शरीफ़जादः' चरित्र को समुन्नत, निष्क्रिय को सक्रिय, नैतिक, साहसी और कर्तव्यनिष्ठ बनानेवाला एक मनोरञ्जक उपन्यास है। इसके रचयिता डॉक्टर मिर्जा मुहम्मद हादी उपनाम 'रुस्वा' स्वय असाधारण प्रतिभाशाली, स्वावलम्बी, अहर्निश श्रमशील और अपने समय के अजीवॉ-ग़रीव व्यक्ति हुए है। 'उमराव जान अदा' उनकी सर्वप्रसिद्ध रचना है। विशेपता यह है कि उनके उपन्यासो मे नायक का चित्रण प्रायः उनका अपना जीवनचरित्र है। पुराने चलन पर वचपन से ही विवाह और परिवारदारी का वोझ, अपनी शिक्षा चलाना तो दूर नित्य की गुजर-वसर के लाले—इस अवस्था मे धैर्य के साथ जीविका के लिए छोटी-छोटी

ट्यूशनों पर निर्वाह करते हुए अध्ययन को जारी रख कर डाक्ट्रेट और इजीनियरी के सम्मानित पद पर उनका पहुँचना ! अनेक क़लों की ईजाद, मिस्त्रीगीरी, लुहारी, काश्तकारी आदि मे सिद्धहस्त, गद्य-पद्य के रचनात्मक साहित्यकार, परिवार को सदैव सीधी राह पर ले जानेवाले, दबे-दबाये पर तरसखाने वाले—उसको उभार कर जीवन प्रदान करनेवाले, साथ ही समाज के अवाञ्छित तत्वो के कटु और निर्भय आलोचक—कहाँ तक कहा जाय रुस्वा साहब के व्यक्तित्व के सम्वन्ध मे ! शिल्प-कला-साहित्य, कोई क्षेत्र नही जहाँ मिर्जा रुस्वा का प्रवेश न हो, अथवा उसकी सिद्धि को उन्होने चरम सीमा तक न पहुँचा दिया हो ।

'शरीफ़जाद.' के आदर्श नायक मिर्जा आबिदहुसैन की सवानःउम्री (जीवनी) मिर्जा रुस्वा की अपनी सवानःउम्री है । इस उपन्यास के द्वारा समाज की मौजूदा दुर्बलताओं पर कुठाराघात ही नहीं पथनिर्देश भी है । आजकल के नवयुवको मे व्याप्त शारीरिक श्रम में लज्जा, प्रतिष्ठा का मर्ज और चरित्र के दौर्बल्य की निन्दा न करके उनके आत्मबल को बढ़ाते हुए उन्हे नागरिक वनाने का सफल प्रयास है । रुस्वा साहव का कहना है कि यह धारणा गलत है कि ' प्रत्येक व्यक्ति की जन्मजात और सहज बुद्धि अलग-अलग होती है, प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रत्येक काम में सफलता सम्भव नही ' । उनका दृढ मत है कि सहज बुद्धि परिवेश (माहौल) से बन जाया करती है; अन्यथा ससार मे ऐसा कोई कार्य नही जिसकी सफलता मनुष्य के लिए, कमर कस लेने पर, दुरूह अथवा असम्भव हो । और यह सब उपदेश मात्र नही, मिर्जा रुस्वा ने अपनी पुस्तकों मे अपने को ही नाम बदलकर नायक स्थापित कर नवयुवको के लिए एक ऐतिहासिक आदर्श उपस्थित किया है ।

## शरीफ़ज़ादः की भाषा

'शरीफजाद.' की भाषा उर्दू है । इसमे सरल तथा क्लिष्ट दोनो प्रकार के उर्दू के नमूने मौजूद है । पाठक रोजमर्रः और साहित्यिक—दोनो प्रकार की सरस उर्दू भाषा का आनन्द ले । उपन्यास जैसे का तैसा देवनागरी लिपि में लिप्यतरित है । अलबत्ता इजाफ़त, और ह्रस्व तथा दीर्घ े और ो की मात्राओ का, ऊपर दी हुई पद्धति पर, पुस्तक मे सर्वत्र निर्वाह नही हो सका है । कारण कि क्या शैली अपनाई जाय, इसका निश्चित मत शुरू में निर्धारित न हो सका था । इस कमी को स्पष्ट स्वीकार करते हुए पाठकों से निवेदन है कि इस लिप्यन्तरण को प्रयोगमात्र मानकर शरीफजाद. के पुनर्संस्करण तथा आगे अपनाये जाने वाले अन्य उर्दू के लिप्यन्तरणों की प्रतीक्षा करे ।

—सम्पादक

# शरीफ़ज़ादः ( आर्यपुत्र )

हमारे इनायतफरमा मिर्जा आबिदहुसैन साहब के वालिद माजिद मिर्जा बाकरहुसैन मरहूम हज़रत अब्बास की दरगाह के पास कही रहते थे, पुख्ता मकान था। दस रुपया माहवार बिला शर्त खिदमत नवाब मुकर्रमुद्दौला बहादुर की सरकार से पाते थे। उसमें खुदा ने यह बरकत दी थी कि बाफरागत बसर करते थे। तीन सौ रुपये का बीबी के हाथ गले मे गहना था। सौ पचास का घर मे असासा था। दस बीस रुपये वक्त बे वक्त सन्दूक्चे से निकल भी आते थे। आबिदहुसैन की वाल्दः ने कभी आप चूल्हा नही फूका। मामा हमेशा नौकर रही। आबिदहुसैन की कोई तकरीब[1] ऐसी नही हुई जिसमे दस बीस गरीब जमा न हुए हो। डोमिनियाँ[2] न आई हो। आबिदहुसैन की शादी अपने मिकदार और हौसले के मुआफिक अच्छी तरह की। अगरचे इस तकरीब मे मिर्ज़ा साहब मरहूम किसी कद्र मकरूज हो गए थे मगर जहेज़ बेचने की नौबत नही आई। शादी के बरसवें दिन एक लडका पैदा हुआ और उसकी छठी भी बडी धूमधाम से हुई। जब तक माँ बाप ज़िन्द रहे मिर्जा आबिदहुसैन को खाने पीने की तरफ़ से फरागत थी। महल्ले मे एक मौलवी साहब रहते थे उनसे फारसी पढ़ते थे। स्कूल मे अंगरेज़ी पढने जाते थे।

जब मिर्ज़ा बाकरहुसैन ने इन्तकाल किया आबिदहुसैन मिडिल क्लास तक पहुँच गए थे। अगरचे वालिद के मरने का सदमा बहुत सख्त हुआ मगर जो तो करके मिडिल पास हो गए।

वालिद के मरने के बाद घर के इन्तजाम का कुल बार उनके सर पर पड़ा मगर इखराजात से किसी कद्र इत्मीनान था इसलिए कि नवाब की सरकार से सात रुपया माहवार उनकी वाल्दा को मिलता रहा मगर उनकी बदकिस्मती से पूरा साल न गुज़रने पाया था कि नवाब करबलाए मुअल्ला चले गये और वहाँ जाके दो ही महीने के बाद इन्तकाल फर्माया।

---

१ उत्सव २ उत्सवों में मेहतरानियों के आकर गाने बजाने का रवाज़ था।

अब यह इन्ट्रेंस क्लास में थे। जब बाहर की आमदनी बिल्कुल मौकूफ हो गई तो इखराजात रोज़मर्रः के लिए घर का असासा बिकने लगा। यहाँ तक कि सोने चाँदी का असबाब सब बिक गया। ताँबे के बर्तनो की नौबत आई वह भी एक एक करके बिक गए यहाँ तक कि सिवाए दो तीन पतीलियो और दो लोटो के कुछ बाकी न रहा।

यह अब तक स्कूल मे पढने जाते थे और तमाम उम्मीदें इम्तहान के पास होने पर मुनहसिर[1] थी। यहाँ तक कि इम्तहान का ज़माना करीब आया। हेडमास्टर ने फीस तलब की। बीवी की चूड़ियाँ गिरवी रख के दस रुपये फ़ीस के जमा किए। इम्तहान के दो दिन बाकी थे कि वाल्दा हैज़े मे मुब्तिला हुईं और ठीक उसी दिन इन्तकाल किया कि जिस दिन उन्हे इम्तहान मे शरीक होना चाहिये था। इस हादसः नागहानी की वजह से बेचारे इम्तहान से महरूम रहे। सारी मेहनत की-कराई खाक मे मिल गई।

माँ का मरना था गोया उनके सर पर आसमान टूट पड़ा। खानादारी का पूरा पूरा बोझ दफ्अतन[2] आन पडा। घर का असबाब और बीवी का जहेज माँ के जीते जी बिक कर सर्फ हो चुका था और जो कुछ रहा सहा था वह उनकी तजहीज़ व तकफीन[3] और रस्म फातिहः वगैरह मे सर्फ हो गया। अब घर मे एक हब्बा नही है जिसे गिरवी रखें या बेच लें। घर मे एक खुद हैं, एक बीवी, एक लडका कोई तीन बरस का। एक लडकी छः महीने की गोद मे। अभी तक सूरते रोजगार नही और न कही से उम्मीद है मगर इस्तिकलाल[4] यह है कि अभी तक पढे जाते है। इम्तहान के छै महीने और बाकी है। किसी तरह हो अबकी जरूर पास होना चाहिए। आखिर कुछ न बन पडा। एक फत्तू कुंजडा रहता था। मकान उसके पास सौ रुपये पर गिरवी रखा; रेहन बाकब्ज़ः था। खुद महमूदनगर के नाले पर एक कच्चा सा मकान एक रुपया माहवार किराये पर लेकर रहने लगे। खैर इम्तहान के ज़माने तक के लिए इत्मीनान हो गया। जी तोड के मेहनत की, खुदा खुदा करके पास भी हो गए। अब नौकरी की तलाश है।

आज बहुत ही परेशान घर से निकले है। मुह उतरा हुआ है, आंखो मे हल्के पड गए हैं। मारे ज़ोफ़[5] के कदम नही उठता। (दिल में कहे जाते है) अफ़सोस! आज हमारे बीवी बच्चो का दूसरा फ़ाकः है। रास्ते मे जो लोग मिलते हैं उनके चेहरे किस कद्र बश्शाश[6] नजर आते है। कुजडो की दूकानें मेवो और तरकारियो से भरी हुई है। नानबाई गरम गरम शीरमाले और खमीरी रोटियाँ तन्दूर से निकाल रहे हैं। नहारी[7] के पतीले से गरम गरम भाप निकल रही है। फत्तू की दूकान पर हलवासोहन भी ताज़ा

---

१ निर्भर २ सहसा ३ दफ़न-कफ़न की व्यवस्था ४ दृढ़ता ५ कमज़ोरी
६ खुश ७ सुबह को पकनेवाले गोश्त का बरतन।

ताज़ा बना हुआ है। तमाम रास्ता महका हुआ है। हलवाइयो की दूकानों पर पूरियाँ, कचौरियाँ, हलवे, मिठाइयाँ कैसी पटी पड़ी है। इसमे से कुछ भी हमारे और हमारे गरीब बीवी बच्चो का हिस्सा नही। सर्राफ की दूकानो पर पैसो का ढेर है, लोग कैसे छना-छन रुपये भुनाते है। हमको एक पैसा तक मयस्सर नही कि अपने बच्चो के लिए चने भुना के ले जायँ।

इंट्रेंस का सार्टिफ़िकेट जेब मे है। अगर थोड़ा सा शीरा मुमकिन होता तो बला से उर्स। को चाटते या बीवी बच्चो को चटाते। अफ़सोस मैंने बडी गलती की। जैसे ही मिडिल पास हुआ था रुडकी कालेज मे चला जाता। दो साल किसी न किसी तरह गुजर ही जाते। देखो रामचरन मेरे ही साथ मिडिल मे पास हुआ था। अब सुना है कि रायबरेली में उसे सबओवरसियरी मिल गई है। काश मेडिकल कालेज ही चला जाता। हेडमास्टर ने उस जमाने मे कैसा कैसा कहा। अफसोस मैंने अपने हाथ से अपने पावो मे कुल्हाड़ी मारी। तीन बरस मुफ्त जाय. हुए। अब क्या हो सकता है। इन्ही खयालात मे गलतॉपेचाँ लड़खडाते ठोकरे खाते गोलदरवाजे तक पहुँच गए। अब करीब दस बजे का वक्त था। जो लोग दफ्तरो मे नौकर थे, इक्को पर सवार हो हो के दफ़्तर जा रहे थे। दो एक इक्केवालो ने इन्हे भी टोका।

"मुन्शी साहब इधर आइये। हजरतगंज चलियेगा।" यह बेचारे हज़रतगंज ही की तरफ जाने वाले थे मगर पैसा कहाँ था जो सवार होके जाते। चुपके हो रहे। सड़क के किनारे पा प्याद: रवाना हुए।

मियाँ तो नौकरी की तलाश मे गए। अब बीवी का हाल सुनिए। यह बेचारी सुबह से उठ के टोपी काढने में मसरूफ़ थी। एक पल्ला तो कई दिन से तैयार था। दूसरे मे कुछ काम बाकी था। बारे[1] उस वक्त दोनो पल्ले तैयार हो गए। अब उसके फ़रोख्त करने की फिक्र हुई। मकान मे एक खिडकी थी। वहाँ जाके पुकारी—हमसाई! हमसाई[2] खिडकी के पास आई।

आबिदहुसैन की बीवी—हमसाई, तुम्हारे मियाँ घर मे है?

हमसाई—हाँ, क्या टोपी तैयार हो गई?

आबिदहुसैन की बीवी—हाँ बहन। खुदा खुदा करके आज तैयार हुई। ज़रा अपने मियाँ को दिखा दो। हमसाई टोपी मियाँ के पास ले गई।

मियाँ—हाँ, यह यह टोपी खूब तैयार हुई।

हमसाई—भला कितने की होगी?

---

१ अस्तु २ पड़ोसिन।

मियाँ—बाजार मे दिखाने से हाल मालूम होगा। मेरे अन्दाज़े मे तो कोई दस ग्यार: आने की होगी।

बीबी—अच्छा तो बेच लाओ। बेचारी के यहाँ आज तीसरा फ़ाक: है। बच्चे गश की हालत मे पड़े है।

मियाँ—तीसरा फाक: ! तुमने मुझसे न कहा। बनिये के यहाँ से कुछ ला देता।

बीबी—चुप रहो। खिडकी के पास खड़ी हैं। कही सुन न लें। बडे गैरतदार लोग है। चाहे दम निकल जाए मुह से न कहेगे। कर्ज़ दाम भी नही लेते। बीबी-मियाँ दोनो की एक राह है। जब फ़ाक: होता है, बच्चों तक को घर से निकलने नही देते।

मियाँ—बड़े आला खान्दान है। खुदा ने मुसीबत डाली है। इनके बाप के कार-खाने ही और थे। अच्छा तो लाओ मैं जल्दी से टोपी बेच लाऊँ।

यह कहके मियाँ हुसैनअली ने अलगनी पर से अंगरखा उतार के पहना, टोपी पहनी, वह टोपी जेब में रखी। घर से निकले, जल्दी जल्दी पारचे वाली गली पहुचे। दो एक दूकानदारों को वह दोनो पल्ले दिखाए। किसी ने ग्यारह आने लगाए किसी ने बारह आने लगाए। एक साहब शौकीन एक दूकान पर टोपियाँ देख रहे थे। उन्होने यू ही सरसरी निगाह से दोनो पल्ले देख के आँख से इशारा किया। यह दूकानदार से टोपी ले के थोडी दूर आगे जा के खड़े हो रहे। थोडी देर मे वह आ गए।

खरीदार—अच्छा तो कितने की दीजिएगा ?

हुसैनअली—हजरत मेरा तो माल नही है। जिसका माल है उसने कह दिया है कि एक रुपये से कम न देना। अब आपको इख्तियार है लीजिए या न लीजिए।

खरीदार—दूकानदार बारह आने लगाता है, आप एक रुपया माँगते है, इतना फर्क ?

हुसैनअली—दूकानदार तो चाहते है कमली डाल के लूट लें। जब बेचनेवाला भी दे।

खरीदार—अच्छा चौदह आने ले लो।

हुसैनकेली—रुपये से हरगिज कम न होगी।

खरीदार—(फिर एक मरतबा टोपी के दोनो पल्लो को उलट पलट के देखा) अच्छा, खैर एक ही रुपया ले लो। तुम्हारी ही जिद सही।

हुसैनअली—दुरुस्त है। ऐ हुजूर, माल नही है ?

खरीदा—इसमे शक नही, बनी अच्छी है, और इसके पास की मिल सकती है ?

हुसैनअली—जी और कहाँ ! मेरे पास एक ही कारीगर है। इस काम की दस बारह दिन मे एक टोपी तैयार होती है।

खरीदार—अच्छा तो अबकी टोपी जो बने तो हम ही को देना। तुम्हारा मकान कहाँ है ?

हुसैनअली—आप अपना दौलतखाना बता दीजिए, जिस दिन टोपी तैयार हो जायगी लेकर हाज़िर हो जाऊँगा।

खरीदार—यह क्या झवाई टोला है, हकीम साहब के मकान के करीब नवाब मुहम्मद अब्बास साहब कमरे में बैठे रहते हैं। उन्ही से पूछ लेना। मीर साहब कहाँ रहते हैं, बल्कि मैं वही मिलूँगा। ऐ लो यह रुपया तो लो। बातो में देना ही भूल गया।

हुसैनअली—क्या हर्ज है फिर मिल जाता।

खरीदार तो रुपया देकर उधर रवाना हुआ। इधर मियाँ हुसैनअली खुश खुश कदम बढाते हुए घर की तरफ चले।

अहा! क्या ऐसे लोग भी जिन्दः है जो दूसरों का काम करके खुश होते है? हाँ है। और ऐसे लोगो मे है जिनको मगरूर बन्दएज़र[1] हिकारत की नजर से देखते हैं जिनका चाल-चलन बहुत ही सीधा सादा है। इसलिए लोग उन्हे बेवकूफ समझते हैं। उन्होने वह आला दरजे की तालीम नही पाई जो खुदगरज़ी के अुसूल सिखाती है, इस लिए उन्हे साद.लौह[2] का खिताब दिया जाता है। उन्होने वह इल्म-मजलिस नही हासिल किया जिसमे जाहिरदारी और बनावट इन्सानियत के असली जजबात को छुपा देती है। इसलिए बेचारे बेतमीज खयाल किए जाते हैं। उन्होंने वह लगो फल्सफ़ा नही पढा जो मज़हब के मुकद्दस[3] उसूल में शक डाल देता है। इसलिए ज़ाहिल के लकब से याद किये जाते है। यह लोग गवर्नमेन्ट की मसलहतों को नही समझते न उसमें नुक्ताचीनी करते हैं इसलिए उन्हे आला दरजे की या तमद्दुनो[4] इज्जत हासिल करने का खयाल ही नही। कौमी इस्लाह की उन्हे फ़िक्र नही रहती। इसलिए कि शोहरत की हवस उन्हे होती ही नही।

जब हुसैनअली रुपया लेके आए तो उन्होने अपनी बीवी को दिया। बीवी खुशी खुशी दौडी गई। मिर्जा आबिद्हुसैन की बीवी को खिडकी के पास बुलाया, रुपया हवाले किया। उस वक्त की खुशी उस नेकबख्त और गरीब बीवी की, जबानेकलम से अदा नही हो सकती। उस रुपये की कद्र उसी को हो सकती है जिसके बच्चो ने दो दिन से कुछ न खाया हो। जिसका शौहर रोज़ सुबह से भूखा प्यासा नौकरी की तलाश मे निकल जाता हो और शाम को मायूस घर में आकर चुपके सो रहे। बीवी ने फौरन मियाँ हुसैनअली से रुपया भुनाया, बनिए की दूकान से खाने के लिए नाज मंगाया। बच्चो को जल्दी से दो टिकियाँ डाल के खिलाईं। पानी पिला के सुला रखा। खुद कुछ नही खाया। एक टोपी का कपडा और रखा था। उसे बुक्ची से निकाला, छापे निकाले। गेरू की स्याही

---

१ घमण्डी धनी २ बुद्धू ३ पवित्र ४ सांस्कृतिक।

मे थोडा सा पानी डाल के टोपी छापी, काढ़ना शुरू कर दी। मारे भूक के आँख से टाँका नही सूझता। फूल से गाल मुरझाये जाते हैं। हाथ काँप रहे है। मगर क्या मुमकिन कि वे मियाँ के कुछ खाने। दिल कवी[1] है, चार दिन के खाने को सामान घर में मौजूद है। शाम को मियाँ आयेंगे। खुदा करे आज कही नौकरी हो जाए। क्या ही अच्छी वात है। इसी खयाल के साथ ही एक आह सर्द दिल से निकली और उसके साथ दो आँसू ढुलक के गालो तक आ गए। हाथ रुक गया। डुपट्टे के आँचल से आँसू पोछे। फिर छपाछप सुइयाँ निकलने लगी।

अव चार वजे होंगे। खाना पकाने का वक्त है। उन्हे यह खयाल है कि यह फूल और तमाम कर लूँ तो उठूँ। फूल वन गया। टोपी को हाथ मे ले के पल्ले को दोनो हाथो से फैला के शिकन मिटाई। जै फूल वन गए थे उनको गौर से देखा। फिर सुई लगा के टोपी बुक्ची मे वाँध दी। उठी, वजू किया, जहरीन की नमाज़ पढी। फिर कोठरी से तौल के आटा दाल निकाल लाईं। नमक मसाला अलाहिद: अलाहिद: करके रखा। चूल्हे में आग सुलगाई, दाल धो के चढाई, आटा गूंधने वैठ गईं। उधर आविद-हुसैन सरेशाम घर की तरफ पलट रहे हैं। दिन भर में कई दफ़्तर छान मारे, दस वारह वंगलो पर गए मगर जहाँ गए और अर्जी दी, यही सदा सुनाई दी—कोई जगह खाली नही है। एक साहव ने यह राए दी, सदर वाज़ार मे जाओ। शायद गोरो को उर्दू पढाने के लिए नौकर हो जाओ। सदर गए। वारिको मे मारे मारे फ़िरे। दो एक गोरो ने वुलाया भी। मगर न उनकी यह समझे, न वह इनकी समझे। वात यह है कि उन्होंने अंगरेज़ी अव्वल तो पढी ही क्या थी, दूसरे जो कुछ पढी थी वह हिन्दुस्तानी मास्टरो से पढी थी। इंट्रेंस क्लास मे जो साहव अंगरेजी पढाते थे उनका तलफ़्फ़ुज वहुत साफ़ था। वह भी मुश्किल से समझते थे। गोरो का लहज़: भला उनकी समझ मे क्या आता। खुलासा यह कि जहाँ गए वहाँ से डैमफूल वना के निकाले गए। इस आवार:गर्दी मे शाम हो गई। अव ज़ोफ़[2] के मारे चला नही जाता। हर क़दम पर चक्कर आते है। मगर मजबूरी, घर तो किसी न किसी तरह पहुचना ही है। घर में बीवी वच्चो को जिस हालत मे छोड़ आए थे उसकी तसवीर तो दिन भर पेश-नज़र रही मगर उम्मीद वड़ी चीज होती है जिसने दिन भर वहाल रखा, खूव दौड़ाया, जव अच्छी तरह थका चुकी तो छोड़ दिया। अव उसी पुराने रफीक[3] से काम पड़ा जिसे यास[4] कहते हैं। उससे और कुछ न हो सका। मौत के तसव्वुर को सामने लाकर खड़ा कर दिया। आखिर होना ही क्या है? अगर यही हाल है तो मर भी जायँगे। हाय, अपना मर जाना तो कुछ ऐसा दुश्वार न था, छोटे वच्चो को एड़ियाँ रगड़-रगड़ के जान देना किससे देखा जायगा। उफ? मुफ़्लिसी

---

१ मज़वूत २ वेहोशी ३ साथी ४ निराशा।

क्या बुरी वलाए है; उससे अव निजात हो, मुमकिन नही। काश बीवी बच्चे न होते, मेरे साथ इन कम्वख़्तो की भी मिट्टी ख़राव हुई। कुछ बन नही पडता। करूँ तो क्या करूँ। इसी ख़याल में थे कि एक चक्कर आया। उसने सडक के किनारे एक जगह घास पर बैठा दिया। अब उठते हैं तो उठा नही जाता। साथ ही यह ख़याल आया, घर जा के क्या करेंगे। यहाँ से सीधे मोतीमहल के पुल की मुण्डेर से अपने को दरया मे गिरा दो, डूव मरो। नाउम्मेदी की राय पसन्द आई थी कि इसके साथ ही बीवी बच्चो की बेकसी का ख़याल आया। वेइख़्तियार आँखों से आँसू निकल पडे। ख़ैर कुछ न सही। मेरे दम से वेचारो को किसी क़द्र सहारा तो है। किसी की आस तोड़ना अच्छा नही है। यह क्या बोदापन है। आलाख़ान्दानी और वेजा शरम को तर्क करना चाहिए। नौकरी इस ज़माने मे मिले, मुमकिन नही। कल से टोकरी लेके चौक मे जाना चाहिए। क्या कही मज़दूरी भी नही मिलेगी! मिहनत-मज़दूरी मे कोई ऐब नही। शाम तक दो आने तो मिलेंगे, बच्चे फ़ाके से तो न पड़े रहेगे। अच्छा अगर यह भी न हो सके, मकान जो गिरवी है उसे वेच डालना चाहिए। दस बीस जो बढें उससे नख़ास मे काट-कबाड़ की दूकान रख लें। शायद उसी से काम चले।

यह इन्ही ख़यालात में थे। इतने में एक गवाँर सा आदमी, सर मे फेंटा बँधा हुआ, मिरज़ई पहने, धोती बाँधे, इन्ही के करीब आके बैठ गया। यह उठने ही को थे कि उस शख़्स ने पूछा—मियाँ साहब, आप कुछ फारसी (फ़ारसी) पढ़े हैं।

आविदहुसैन—हाँ पढा तो हूँ, क्यों?

वह शख़्स—मुझे एक खत (ख़त) पढवाना है।

आविदहुसैन—पढ तो देता मगर यहाँ रौशनी कहाँ है?

वह शख़्स—सामने लाइट के पास चलके पढ दीजिए।

आबिद—चलो। यह कहके लालटेन के पास आए। उसने मिरजई की जेब से ख़त निकाल के दिया। ख़त काहे को एक तूमार का तूमार था।

ख़त का खुलासा यह था कि बल्देव मिस्तरी की मार्फ़त एक हज़ार रुपये का लोहा ख़रीदकर भेज दो। मुबलिग दो सौ रुपया नकद इस ख़त के साथ रवाना किया जाता है, वह दे देना। बाकी रुपया बरवक्त पहुँचने लोहे के भेज दिया जायगा। इसके बाद लोहे की फिहरिस्त थी जिसे अटक-अटक कर पढते जाते थे और वह बताता जाता था। ख़ुदा ख़ुदा करके अब वह ख़त तमाम हुआ। अब वह शख़्स कहने लगा—अच्छा तो अब इसका जवाब मैं किससे लिखवाऊँगा। आप ही लिख दीजिए। वड़ा ज़रूरी ख़त है। मिन्नत समाजत करने लगा।

वह शख़्स—थोड़ी दूर चले चलिये। बल्देव मिस्तरी का कारख़ाना है।

आबिद—मेरा मकान यहाँ से बहुत दूर है, मुझे वहुत रात हो जायगी तुम किसी और से लिखवा लेना।

वह शख्स—देर नही होने पायेगी। और अगर देर हो जायगी तो घर का इक्का है, मैं आपको सवारी पर भेज दूँगा।

आबिद—(दिल मे) हर्ज ही क्या है। चलो अच्छा हुआ चला भी नही जाता है। इक्के पर सवार होकर जल्दी से घर पहुच जायँगे।

आबिद—अच्छा तो चलो।

उस शख्स के साथ बल्देव मिस्तरी के कारखाने मे पहुंचे। देखा एक बडा सा अहाता है। उसमे चारो तरफ खपरैल पडी है। सेहन मे जिधर देखो लोहे का ढेर है। एक तरफ पत्थर के कोयलो का अम्बार लगा है।

खपरैलो मे जा बजा लोहे की भट्ठियाँ बनी हुई हैं धौकनी चल रही है। लोहा सुर्ख कर कर के उनसे निकाला जाता है। हथौड़े चल रहे है। एक खपरैल में एक चारपाई बिछी है। उसके पास दो तीन चीड के सन्दूक पडे है। उनमें से एक पर बूढा सा आदमी लेकिन बहुत ही तवाना[1], ऐनक लगाए बैठा है। क़रीने से मालूम हुआ कि बल्देव मिस्तरी यही है। जो शख्स इनको ले गया था उसने एक सन्दूक पर इनको बिठा दिया। चिरागदान ला के इनके आगे रख दिया। इनसे कहा कि ज़रा मिस्तरी जी को यह खत फिर सुना दीजिए। इन्होने खत पढ़ के सुनाया। अब जवाब लिखने के लिये कलम दावात की ज़रूरत हुई।

बल्देव ने कहा—भइया से माँग लो। उस शख्स ने माधो भइया कहके पुकारा। भइया माधो, बल्देव का लड़का, कोई चौदह पन्द्रह बरस का सिन, सामने खपरैल मे एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। सामने छोटी सी मेज लगी थी। उस पर कितावे रखी थी। लैम्प रौशन था। उस शख्स की आवाज सुनके जवाब दिया—काका क्या है?

वह शख्स—अपनी कलम दबात तनी ले आओ। थोडा कागद भी लेते आइयो।

भइया माधो कलम, दावात, कागज ले के आए। मिर्ज़ा आबिदहुसैन जवाब लिखने लगे। वह भी पास बैठ गया।

जवाब लिखने मे बड़ी देर हुई। इसलिए कि हर किस्म के लोहे का वज़न और क़ीमत मय निर्ख के लिखवाया जाता था। मिर्ज़ा साहब के हवास बेजानः थे। भइया से हिसाब करने मे इनको मदद मिली इस दरम्यान में इधर उधर की बातें भी होती जाती थी। क्योकि उन लोगो को तो यह मालूम न था कि यह बेचारे किस आफत मे मुब्तिला

---

१ करारा।

हैं, नही तो शायद जल्दी करते। यह एक नए आदमी शहर के रहने वाले वहाँ जा के फँसे थे। मामूली बातें यह कि आप का मकान कहाँ है ? इस तरफ़ क्यो आए थे ? इनसे पूछना जरूर थी। सबसे ज्यादा माधो भइया को इनके हाल पर तवज्जुह थी क्योंकि माधो भइया अंगरेज़ी पढते थे और इनके तर्ज तकरीर से मालूम हो गया था कि यह भी अगरेज़ी जानते है। शायद अस्नाए कलाम[1] मे यह भी पूछा गया था कि आपने कहाँ तक अंगरेज़ी पढी है और आपकी जबान मे बेसाख्ता निकल गया हो कि मैं इन्ट्रेंस पास हूँ। माधो भइया अभी मिडिल क्लास के दो दर्जे नीचे थे। फिर इनका फ़ारसी खत भी बहुत ही साफ और माधो भइया आज भी बदखती के लिये क्लास मे दो नम्बर उतार दिये गये थे। इन वजूह से माधो भइया के दिल मे इनकी इज्जत का खयाल समा गया था।.

इन्ट्रेस पास का नाम सुनके बल्देव मिस्त्री भी चौंक पडे थे इसलिए कि जब से माधो को स्कूल में पढने भेजा था, मिडिल और इन्ट्रेंस यह दोनो लफ्जे इतनी मरतबा सुनी थी कि अब उनका भूलना मुमकिन न था। बहुत दिन तक यह मिडिल स्कूल को आला दर्जे. समझा किये। लेकिन जब से रेल के दफ़्तर मे परशादी बाबू दस रुपया महीने पर नौकर हुये मिडिल पास की इज्जत उनकी निगाह मे कम हो गई। मगर कही सुन लिया था कि बडे बाबू जो लोको आफिस मे नौकर है, वह इन्ट्रेंस पास है। मास्टर जानकी परशाद जो माधो को घर पर अंगरेजी पढाते थे वह वकील हो गये। अब लीजिये वह भी क्या बुरे रहे। गनपत बढ़ई का लडका छोटेलाल इंट्रेंस पास करके रुडकी चला गया था। वह अव ओवरसियर है। गरज कि इन खयालात से इंट्रेंस की इज्जत इनके दिल मे वहुत कुछ थी। सारी उम्मीदें माधो के इंट्रेस पास करने पर मौकूफ थी। इंट्रेंस के दर्जे से उनको इस कद्र हुस्नेजन[2] था कि मिर्ज़ा आबिदहुसैन की परेशानहाली उनके चश्मे से नज़र ही न आ सकती थी। जब से उनको देखा था और यह सुना था कि यह इंट्रेंस पास है, दिल मे कहते थे—परमेशर वह दिन करे कि माधो भइया भी इंट्रेंस पास करलें। मगर अभी वह दिन दूर है। चार पाँच वरस बाकी है। अव कोई घर पर पढाने वाला भी नही। दिल मे ऐसे ही कुछ खयालात थे कि एक ही मरतवा मिर्जा आबिदहुसैन से पूछा।

बल्देव—आप का दौलतखाना कहाँ है ?

आबिदहुसैन—चौक के पास।

वल्देव—ओहो। आप वहुत दूर रहते हैं।

आविदहुसैन—(इस सवाल के रुख से कुछ अपने मतलब की फ़ाल[3] लिया चाहते थे) क्यो ?

---

१ वातचीत के समय २ अच्छी धारणा ३ शकुन।

वल्देव—कुछ नही। अगर कही पास मकान होता तो माधो भइया घंटा दो घंटा आप से पढ लिया करते।

आविदहुसैन—फिर दूर मकान है तो क्या है। मैं तो इस तरफ आया ही करता हूँ।

वल्देव—क्यो ?

आविदहुसैन—यू ही नौकरी की तलाश मे।

वल्देव—अच्छा तो आप माधो को पढा दिया करेंगे ?

आबिदहुसैन—बडी खुशी से।

वल्देव—मै जो मास्टर जानकीपरशाद को देता था, आपको भी दूगा।

आविदहुसैन—उनको क्या देते थे ?

वल्देव—पाँच रुपया महीना।

आविदहुसैन—बेहतर है। मै पढा दिया करूँगा।

माधो—तो फिर कव से आइयेगा ?

आबिदहुसैन—जव से कहो।

माधो—आठ दिन हमारे इम्तहान को रह गये हैं। अगर कल ही से आइये तो और अच्छा है।

आबिदहुसैन—कल ही से आऊँगा। किस वक्त आया करूँ ?

माधो—सुवह को आइये या शाम को। यही दो वक्त हैं।

आबिदहुसैन—अच्छा तो मैं सुवह को सात वजे पहुच जाया करूँगा।

खत तमाम हो चुका था। वातो मे यह मतलव भी निकल आया। अव वहाँ ठहरने की कोई वज्ह न थी। जो शख्स इनको साथ लाया था, उसने वल्देव से इक्के के लिये कहा। मालूम हुआ है कि इक्केवाला कही सवारी ले गया है। इसलिये उसने एक चवन्नी निकाल के मिर्जा आविदहुसैन के हाथ पर धर दी। पहले तो उन्होने इन्कार किया इस खयाल से कि वल्देव की निगाह मे ज़लील न हो जाऊँ। मगर वल्देव ने कहा—मियाँ साहव ले लीजिये, हुसैनगंज से इक्का कर लीजियेगा। रात ज्यादः हो गई है और फिर आप सवेरे आने को भी कहते हैं। जल्दी से घर पहुंच जाइयेगा। मिर्ज़ा आविदहुसैन ने चवन्नी ले के जेव मे रखी और कारखाने से रवाना हुये।

आबिदहुसैन की हालत सख्त मायूसी की थी। इतना सहारा जो मिला जान में जान आई। अव घर की तरफ जल्द से जल्द कदम उठने लगे। रास्ते मे इक्के वहुत से मिले मगर घर में वीवी वच्चो को उस हालत मे छोड़ के आये थे खयाल किया कि अव अगर इक्का करता हूँ तो कम से कम दो आने फजूल खर्च हो जायँगे। चार आने मे दो

वक्त रोटी चल सकती है। थोड़ा जब्र और गवारा करो, पा-प्यादह पहुच ही जाओगे। बारे[1] जिस तरह हो सका घर पहुचे।

रात के दस बज गये थे। दरवाज़े पर आकर कुण्डी खडखड़ाई। बीवी ने उठ के दरवाजा खोला। देखा घर मे चिराग जल रहा है। हैरत हुइ कि तेल कहाँ से आया और यह हैरत और भी ज्याद. हुई जब बीवी ने उनके बैठने के साथ ही दस्तरखान लाके बिछाया, खाना निकाल के आगे रखा। उन्हे हाथ धोने को पानी दिया, खुद हाथ धोया खाने को आगे बैठ गईं।

आबिद—हय, यह सब कहाँ से आया ?

बीवी—वही टोपी आज बिकी ना ?

आबिद—कमाल किया। टोपी तैयार कर ली और बिकवा भी ली।

बीवी—तो फिर क्या करती ?

आबिद—बडा काम किया। बच्चे खा चुके ?

बीवी—बच्चो को माशा अल्लाह दूसरा फेरा है। अभी तो खा पी के सोये है।

आबिद—और तुमने कुछ नही खाया ?

बीवी—अब तुम्हे मेरी क्या फिकर पड गई। लो खाओ।

आबिद—वाह क्या मै जानता नही। तुम यू ही बैठी होगी। क्या बुरी आदत है।

बीवी—और तुम्हे आज यह देर कहाँ लगी ? रोज़ तो सवेरे आ जाया करते थे।

आबिदहुसैन ने अपना तमाम वाकिअः सिरे से आखिर तक मुफस्सिल सुनाया। बीवी सुनके बाग बाग[2] हो गईं। मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी उन बीवियो मे न थी जो ख्वाहमख्वाह अपने शौहरो की शिकायत किया करती हैं। इस मौके पर उन्होने मियाँ की जो दिलजोई[3] और तस्कीन[4] की वह काबिल हजार आफरी[5] है।

बीवी—खुदा ने मेरे बच्चो पर रहम किया।

आबिद—हाँ सहारा तो हो गया है। मगर पाँच रुपये मे§ क्या होगा ?

बीवी—खुदा का शुक्र करो नमक का सहारा बहुत होता है। पाँच रुपये बहुत है। खुदा ने चाहा तो अब फ़ाक. न होगा। मेरी टोपी भी अब रुपये को जाने लगी है। महीने मे चार टोपी अगर तैयार होगी तो चार रुपये कही नही गये हैं। तुम अपना दिल मजबूत रखो।

---

१ आखिरकार २ अति आनन्दित ३ मनभराव ४ ढारस ५ शाबाशी की बात।

§ उस ज़माने में पाँच रुपये बड़ी चीज़ होते थे। आज के पचास रुपये भी कम हैं।

आबिद—मेरा दिल मजबूत है ।

दोनो मियाँ बीवी ने खाना खाया । खुदा का शुक्र किया । नमाजें पढी, सो रहे ।

दूसरे दिन सुबह को सात बजते बजते मिर्जा आबिदहुसैन बल्देव मिस्त्री के कारखाने मे पहुच गये थे । माधो बहुत ही शौकीन लडका था । वह सुबह छै बजे ही से किताबे खोलकर पढने बैठ गया था । आबिदहुसैन ने पहले अगरेज़ी किताब का सबक पढ़ाया । हर एक मुश्किल लफ़्ज के हिज्जे और मायने पूछे । फिर इमला लिखवाया । उसमे सिर्फ एक गलती निकली, उसे दुरुस्त कर दिया । उसके बाद ग्रामर (सर्फ व नहो) का सबक हुआ । अब उर्दू की बारी आई । माधो उर्दू मे बहुत ही कमज़ोर था । हरफों का तलफ्फुज सही नही बताया गया था । शीन काफ तक दुरुस्त न था, उसमे आबिद-हुसैन को बडी मिहनत करना पडी । फिर हिसाब शुरू हुए । कल दर्जे मे जो सवालात माधो को दिए गए थे वह उसने रात ही को लगा रखे थे । आबिदहुसैन ने कायदा बड़े गौर से जाँचकर जहाँ जहाँ खामी थी उसे दुरुस्त कर दिया । माधो के अंगरेज़ी और फारसी दोनो खत ठीक न थे । और न उसे इस तरफ ज्याद॰ तवज्जु॰ थी मगर आबिद-हुसैन ने दो कापियाँ उसी दिन बनवाईं और अपने सामने लिखवाना शुरू किया । जो लोग इससे पहले माधो को पढ़ाते थे वह बहुत सा वक्त बातें करने मे सर्फ़ किया करते थे । माधो को इसकी आदत पडी हुई थी मगर आबिदहुसैन बातें करना जानते ही न थे । इब्तिदाए-उम्र[१] से उन्हे मिहनत की आदत थी । माँ बाप ने ऐसी सुहबतो मे बैठने ही न दिया जिससे मजाक का मफ़्हूम उनके जेहन मे समा जाता जिससे इनको यह मालूम हो जाता कि फजूल गप्पें उडाना भी हिफ्जाने-सेहत[२] के उसूल मे दाखिल है । लखनऊ के अक्सर साहबज़ादो को गुफरान् शबाब[३] से इश्कबाज़ी का लपका पड जाता है और इसके साथ ही शेरो सुखन[४] की तरफ तबियत माएल[५] होती है । इस बहाने से अक्सर नाजाएज़ तखय्युलात[६] को उम्द॰ अल्फ़ाज़ के पैराए मे अदा करने का अच्छा मौका मिल जाता है । इन बलाओ से खुदा ने इनको महफ़ूज रखा था । अभी पूरे जवान भी न होने पाए थे कि उनके वालिद मरहूम ने अज़राहे दूरअन्देशी इनकी शादी करदी । शादी के दूसरे ही साल इनके औलाद हुई । इसके चन्द ही रोज बाद खानादारी का तमाम बार उनकी गरदन पर पड गया जिससे आज तक सर उठाने की मोहलत न मिली । न उन्हे यारो के साथ रातो को फिरने का इत्तफाक हुआ था, न ऊँचे कोठो तक उनकी नीची नजरें उठने पाई थी । न रक्सो सुरोद[७] की महफ़िलों में उन्हें बैठने का मौका मिला था । गरज कि यह उस कूचे से बिल्कुल ही नाबलद[८] थे ।

---

१ प्रारंभिक अवस्था से ही २ स्वास्थ्य रक्षा ३ तरुणाई की कृपा से ४ शेरबाज़ी ५ अनुरक्त ६ ख़यालों की उडान ७ नाचगाना ८ अनजान ।

अलकिस्सः माधो से उन्होने पूरे दो घंटे मिहनत ली और खुद भी दम न लिया। इस असना मे बल्देव कई मरतवा किसी न किसी बहाने से उस खपरैल मे आ आ के उनका पढ़ाना देख गया। यह अभी थोड़ी देर और पढाते मगर अव नौ बज गए थे। माधो के स्कूल जाने का वक्त था। यह अपनी जगह से उठे ही थे कि बल्देव मिस्त्री ने उन्हे इशारे से बुलाया और एक फ़र्द हिसाब की निकाल के पढ़वाई। उसमे कारीगरों के चिट्ठे की तफ़्सील थी। शकर लोहार और मातादीन बढई के हिसाब मे कुछ गुजलक थी उसे साफ़ करा लिया। इनका नाम भी मय शरह तनख्वाह उसी फर्द मे लिखवा दिया। अव यह घर रवाना हुए।

वल्देव के कारखाने में और तो कोई ऐसी खास बात न थी जो इनके दिल मे कोई खास असर करती मगर भारी हथौडो की आवाज़ें और बडी धौंकनियो की झंकारें अभी तक उनके कानो मे गूज रही थी। लोहे का सुर्ख होकर भट्ठी से निकलना, निहाई पर रखा जाना और उस पर तवाना हाथो की चोटो से शरारो[1] का उड़ना तखय्युल[2] के परदो पर मुनक्कश[3] हो गया था। मिहनत और जफाकशी की मुजस्सिम सूरते आखो मे फिर रही थी। जरूरत और मुफलिसी, अहले हिरफ़:[4] के ज़लील और कमरुतबा होने के वेहूद. ऐतकाद को जो दौलत, आरामतलवी और तन आसानी के मनहूस असर से दिलो मे मुद्दत हाएदराज़ से रासिख[5] हो गया है, अब इनके दिल से हटा रही थी। वल्देव मिस्त्री के कारखाने मे किसी कारीगर का रोज़ान. छै आने से कम न था। उन्होने अपने रोज़ीन का हिसाब लगाया। सिर्फ ढाई आने रोज़ से कुछ कौडियाँ ऊपर हुईं। इस हिसाव से भी सबसे कमतर ठहरे। यह खयाल दिल मे आया ही था कि हस्ब-नसब[6] के तवह्हुमात[7] ने आ के घेरा और इसके साथ ही एक किस्म का गरूर दिल में चक्कर खाने ही को था कि उन्होने उसे एक शैतानी वसवसा[8] तसव्वुर करके लाहौल[9] पढ़ी। दादा जान रिसालदार थे; लेकिन खैरियत से वह रिसाला गदर से पहले ही शिकस्त हो गया था। नाना जान नवाबज़ादे थे मगर खान्दानी पेन्शन उन्ही के हीने हयात[10] थी, अब उसका सुलस कैसा, एक हब्बा भी हमे नही मिलता। दादी अम्मा के पास चालीस लौडी गुलाम थे मगर बीवी अपने हाथ से चूल्हा फूकती हैं। बडे मामू ख़ुदा बख्शे फीलनशीन थे मगर मैं जूतियाँ चटखाता फिरता हूँ। पाँच रुपये की नौकरी ऐसी चीज़ है कि उसके लिए सवेरे उठके महमूदनगर से शहर के उस पार कोई तीन मील के फासले पा प्याद. जाता हूँ करीब दस बजे के घर जाता हूँ।

---

१ चिनगारियों २ कल्पना ३ अंकित ४ पेशावर लोगों ५ अटल ६ कुलीनता ७ भ्रान्त विचारों ८ प्रेरणा ९ लानत १० जीवनपर्यन्त।

फाक: में न आला नसवी[1] काम आई न वाला हसवी[2]। दो हरफ़ जो पढ लिए थे उससे बल्देव तक रसाई हुई और पाँच रुपये का सहारा हो गया। आइन्दा भी जो कुछ उम्मीद है उसी से है। इन मोहमल[3] खयालात से कुछ काम न चलेगा। वेहतर है कि उन्हे यही से रुख्सत करो और गंगा पार की तरफ का रास्ता वतादो।

इसी असन: में यह खयाल आया कि आखिर घर तो जाते हो, हजरतगंज की तरफ से होकर निकल चलो। आडिट आफिस मे कल अर्जी दी थीं। बड़े वावू ने तो साफ कह दिया था कि कोई जगह खाली नही। मगर साहव के मुलाहिज़: के लिए अर्जी रख ली थी। शायद साहब ने कोई हुक्म मुआफिक चढाया हो। ज़ेहन ने अभी इस वात का फैसला न किया था कि चलना चाहिए या नही और न अभी वह मुकाम आया था जहाँ से हजरतगज को रास्ता मुडता है। अब यह नहर के पुल पर थे। यहाँ से चन्द ही कदम आगे बढे होंगे कि एक कवाडिए की दूकान पर नज़र जा पडी। यहाँ वहुत सी पुरानी किताबें तले ऊपर रखी थी। जी मे आया इन किताबो मे देखूँ, शायद कोई मतलव की हो। यह उमंग दिल मे इसलिए पैदा हुई थी कि रात वाली चवन्नी अभी तक जेब मे पड़ी हुई थी। फौरन ही इफ़्लास[4] ने अपनी मुहीब[5] सूरत दिखाके चश्मा-नुमाई की[6]। उन्होने उधर से मुँह फेर लिया। आगे बढे। अव वह मुकाम आ गया जहाँ से हजरतगंज को सडक जाती है। यहाँ उन्हे चन्द लम्हे ठहरना पडा। फिर यह सोच के कि अभी सवेरा है, आडीटर साहब ग्यारह बजे दफ़्तर मे आते हैं। इस वक्त वहाँ जाके क्या करोगे। ऐसा है तो कभी चले जाना। घर की तरफ का रास्ता लो।

इसके बाद रास्ते मे कोई ऐसा वाकिय: नही हुआ जिसका वयान उनके ज़ेहनी तगय्युरात[7] को समझाने के लिए जरूरी हो। सिर्फ उन्होंने एक वात देखी और खूब समझे कि सदर बाजार से लेकर अमीनाबाद तक रास्ते मे जो लोग मिले उनके चेहरो से एक खास किस्म की संजीदगी और अज्ज़[8] के आसार पाए जाते थे। उनके लिवास मे एक तौर की वेपरवाई और सादगी नुमायाँ थी। उनकी रफ़्तार मे वह सिफत पाई जाती थी जिसे सुरअत[9] कहते है। इन सव अलामतो से ऐसा मालूम होता था कि वह कारोबारी आदमी हैं। इन मुकामो मे इनको फकीर वहुत कम मिले और न कोई मुफलिस सफ़ेदपोश नजर आया। वखिलाफ इसके अमीनावाद से होके जव मौलवीगंज में पहुँचे हैं तो उनको वहुत से आदमी ऐसे मिले जिनके हाथ मे वटेरो की कावक है। कोई गन्ना छीलता चला जाता है, कोई साहब रास्ते मे खडे तानें उडा रहे हैं, कोई किसी पर फब्ती उड़ा रहा है। दो

---

१ कुलीनता २ प्रतिष्ठा ३ व्यर्थ ४ कंगाली ५ विकराल ६ आँखें तरेरीं ७ दमाग़ी चढ़ाव-उतार ८ विवशता ९ फ़ुर्ती।

चार किसी बाज़ारी औरत से सरे राह मजाक कर रहे है। दो एक वेफ़िकरे क़िसी नेकबख्त औरत को नही मालूम कहाँ से घेरे चले आते है। वह बेचारी डर के मारे घूघट से मुह छुपाए लेती है। जल्द जल्द कदम उठाए चली जाती है। यह है कि आवाजे कस रहे है। कही दो वेतकल्लुफ़ दोस्तो में गाली गलौज हो रही है। कही दो आदमियो मे मारपीट हो रही हैं। वहुत से आदमी जमा हो गए हैं। कही बन्दर का नाच हो रहा है। रास्ते मे इस कद्र भीड है कि रास्ता चलना मुश्किल है। गरज कि अक्सर आदमी ऐसे ही थे जिनके अत्वार[१] से ऐसा मालूम होता था कि उनको दुनिया व माफ़ीहा[२] मे कोई काम नही। महज निकम्मे हैं। सिवाए तमस्खुर[३] और तज़ईअ़ औकात[४] उन्हें कोई वात की फ़िक्र नही। वहुत से ऐसे मिले जिनकी सूरत ही से ऐसा मालूम होता था कि उन पर गम का आसमान टूट पडा है। खुदा जाने कै फ़ाक़े कड़ाके के गुज़र चुके है। इन गली कूचो में फकीर भी वहुत से मिले मगर रकावगंज से यहियागंज के फाटक तक जहाँ दो तरफ़ा लोहियो, कसेरो और ठठेरो की दूकानों मे भी एक किस्म की चहल पहल नज़र आई। इस बाज़ार मे वेफिकरे कम नज़र पडे। यहियागंज के फाटक से नखास तक और वहाँ से उनके मकान तक शहर के बाँके तिरछे वदवजअ़[५] लोगो का तो गोया रमना[६] है। यह तमाशा देखते भालते अपने घर पहुचे। खाना पक्का पकाया रखा था। बच्चे खेल रहे थे। बीवी टोपी काढ रही थी। इनके जाने के साथ ही दस्तरखान बिछा। मियाँ-वीवी, लडका, लड़की सबने एक साथ मिल के खाना खाया। अब वक्त करीव ग्यारह वजे के था। इस वक्त से दूसरे दिन सुबह को छै वजे तक कोई काम और न था। हिसाव से उन्नीस घंटे हुए। अगर उनमे से सात घंटे रात के सोने का हक निकाल डालें तो भी ग्यारह घटे वचते है। निकम्मे और वक्त फजूल ज़ाय. करने वाले इसमे वहुत सा वक्त दिन को सो के काट देते हैं, मसलन ग्यारह बजे से तीन बजे तक। फिर तीन वजे से पाँच बजे तक नहाने धोने, बालो मे कंघी करने, तेल डालने, माँग पट्टियाँ दुरुस्त करने, कपड़े वदलने मे बखूबी सर्फ हो सकते थे। इसके बाद चौक की सैर को निकल जाते। इधर उधर राही तबाही मे पड़े फिरते। इस तरह सात ब़ज जाते। अव किसी दोस्त की मुलाकात का वक्त आ जाता। वहाँ सिर्फ बातें करने मे या किसी और शुग़ल मसलन गंजीफ़ः, चौसर, शतरंज वग़ैरह मे तीन चार घन्टे बडे लुत्फ़ के साथ बसर हो सकते थे। हमारे दोस्त मिर्जा आबिदहुसैन ऐसे लोगो मे न थे। इनको अपने अहलो अयाल[७] के आज़ूक.[८] की फिकर थी। तकदीर की बेजा शिकायत न इन्होने किसी किताब मे पढ़ी थी और न उनका तखय्युल[९] उसे इख़तराअ़[१०] कर सकता

---

१ ढंग २ जो कुछ उसमें है ३ मसख़रापन ४ समय की बरबादी ५ अशोभित ६ मैदान ७ परिवार ८ रोज़ी ९ विचार १० आविष्कार, गढ़ना।

था। इसलिए कि यह किसी फलकज़द:[१] शायर की सोहबत मे कभी नही बैठे थे और न इन्होने किसी नजूमी रम्माल से अपने दिन दिखवाए थे। वक्त को किसी मुफ़ीद काम में सर्फ करने की धुन उनके दिल मे समाई थी। उन्होंने किसी किताब मे पढ लिया था कि वक्त का एक लमहा सोने के रेजो की तरह कीमती है। इनको उन रेजो के जमा करने और उससे सोने की थकिया वनाने की फ़िकर थी। मगर उसकी तरकीव उन्हे नही आती थी। यह मुहन्दिस[२] की तरह इस नुस्खे की फ़िकर मे थे। मगर अभी तक कोई उस्तादे कामिल न मिला था। अब मजबूरी ने सहारा दिया था कि हम यह नुस्खा वतादेंगे।

खाना खाने के चन्द मिनट बाद उन्होने अपनी तमाम किताबें जो इंट्रेंस और नीचे दरजों मे पढी थी, उन्हे निकाला। उनमे से सिवाए तीन किताबो के कोई ऐसी किताब न थी जो सिरे से आखीर तक उनकी कई कई मरतबा की पढ़ी हुई न हो। उन किताबो में से एक तो अलजबरा था जो सर्फ मुसावात[३] दरजा अव्वल तक पढ़ाया गया था। और निस्फ़ से ज्यादा अभी पढ़ने को बाकी था। दूसरी यू-क्लिड (तहरीर अकलीदुस) जिसके सिर्फ औवल चार मकाले[४] पढ़े थे। पाँचवाँ, छठा और ग्यारहवाँ, बारहवाँ छूट गया था। तीसरे मेन्सुरेशन। इसमे सिर्फ सुतूह[५] का बयान देखा था। मुजस्सिमात[६] से बिल्कुल ही नावाकिफ़ थे। यह किताब भी निस्फ से ज्याद: पढ़ने को बाकी थी। इल्म रियाज़ी[७] से इनको खास शौक था। रियाजी के घन्टे मे अक्सर इन्ही के नम्बर बढ़ जाते थे। इनसे उतर के देवीपरशाद था। उसने इट्रेंस पास करके रुड़की के दाखिले का इम्तहान दिया और उसमे कामयाब हुआ। अब ओवरसियर क्लास मे पढता है। डेढ़ बरस के बाद पचहत्तर रुपये का मुलाजिम हो जायगा।

इन किताबो को पहले तो इन्होने हसरत की निगाह से देखा, इस खयाल से कि इनके पढने का मौका हाथ से निकल गया था। साथ के तालिबइल्म अक्सर एफ-ए क्लास मे पढते हैं। अफ़सोस! अगर मुमकिन होता तो हम भी पढ़ते। वक्त तो है। माधो को पढा के उधर ही कालेज चले जाया करते। मगर न फीस अदा करने का मकदूर है न किताबें खरीद सकते हैं। और अगर यह भी होता तो अब छै महीने से ज्यादा ज़माना गुज़र गया। साथ वाले कहाँ से कहाँ पहुंचे होगे। अब क्या हो सकता है। रुड़की कालेज में भी दाखिला नामुमकिन है। अगर इम्तहान के लिए तैयारी की और पास भी हो गए मगर वज़ीफा न हुआ तो और सदमा होगा। दूसरे उसके इम्तहान के लिए किसी कद्र

---

१ दुर्दशाग्रस्त २ गणितज्ञ ३ इक्वेशन ४ साध्य ५ समतल ६ शक्लों ७ गणितशास्त्र।

नक्शाकशी की जरूरत है, वह क्योकर सीख सकते हैं। उसमे आलात[1] के बक्स की ज़रूरत है। गरज कि मुफ़लिसी ने हमारी तरक्की की राहे मस्दूद[2] कर दी है। कुछ वन नही पडता, क्या किया जाय। मगर कुछ न कुछ करना चाहिए। वेकार बैठना अच्छा नही। अब तो आडिट आफ़िस चलना चाहिए।

एक बजे के करीब आडिट आफिस पहुँचे। अर्जी पर वही मामूली जवाब मिला, (नो वैकेन्सी) कोई जगह खाली नही। इस जवाब के मिलने से उन्हे कुछ ऐसा रंज नही हुआ। इसलिए कि उसकी तवक्को[3] पहले ही से थी। दफ़्तर से बाहर निकल कर यह चलने ही को थे कि रज़ाहुसैन इनके स्कूल का एक तालिबइल्म जिसने चौथे दरजे तक पढ़ के छोड़ दिया था, उससे मुलाकात हो गई।

आबिदहुसैन—तुम यहाँ कहाँ ?

रजाहुसैन—जी मैं तो यहाँ नौकर हूँ।

आबिदहुसैन—काहे मे नौकर हो ?

रज़ाहुसैन—ट्रेसरो मे

आबिदहुसैन—भई ट्रेसर किसे कहते हैं ?

रज़ाहुसैन—नक्शो का अक्स उतारता हूँ।

आबिदहुसैन—क्योकर ?

रजाहुसैन—ऐ लीजिए। आप को आज तक यही नही मालूम। चलिये दिखा दूँ।

रज़ाहुसैन इनको अपने दफ़्तर में ले गया। यहाँ इन्होने देखा कई ऊँची ऊँची मेजें लगी हैं। उन पर नक्शे बिछे हुए है। उन पर एक किस्म का बारीक मोमजामा (जिसे यह पहले कागज़ समझे थे) बिछाकर पीतल की कीलो से जड दिया है जिससे नीचे जो कुछ बना हुआ है ऊपर साफ नज़र आता है। औज़ारो के बक्स खुले हुए रखे हैं। कुछ लोग खडे और कुछ ऊँची तिपाइयो पर बैठे खत पर खत खीच रहे है और हरफ पर हरफ लिख रहे हैं। कोई रंग की प्यालियाँ आगे रखे रंग दे रहा है। इन्होने यहाँ की हर चीज़ को बडे गौर से देखा और जो वात समझ में न आई उसको उन लोगो ने बडी मेहरबानी से बताया। इतने मे चपरासी ने कहा—साहब आते हैं। उन्होंने इरादा किया कि दफ्तर से बाहर चला जाऊँ। उन लोगो ने कहा कि जी नही, साहब कुछ नही कहेंगे। आप ठहर जायँ। एक तिपाई पास रखी थी उस पर इन्हे बिठा दिया। साहब दफ्तर मे आया। सब लोगों का काम देखा। यह एक अजनबी आदमी थे। इनसे दरयाफ्त किया—आप कौन ? यह घबरा से गए। रज़ाहुसैन ने जवाब दिया—मेरे पास

१ औज़ार २ बन्द ३ उम्मीद।

आते हैं। साहब ने पूछा—ट्रेसर का काम जानता है? रज़ाहुसैन ने झूटमूट कह दिया अजी अभी सीखते है। साहब तो दफ्तर से चले गए।

आबिदहुसैन—तुमने खूब कही कि सीखते है।

रज़ाहुसैन—फिर और क्या कहता?

आबिदहुसैन—अच्छा तो अगर मैं सचमुच सीखूं तो सिखा दोगे?

रजाहुसैन—मैं तो क्या, मगर उस्ताद नबीबख्श से कहो। उस्ताद नबीबख्श नक्शानवीस रुड़की कालेज के सनदयाफ़्ता पास बैठे काम कर रहे थे। उन्होंने मजाक से कहा—मगर हज़रत मिठाई देना होगी।

आबिदहुसैन—मिठाई हाज़िर है मगर यह तो बताइये कितने दिनों में काम आ जायगा?

नबीबख्श—यह भी उसी वक्त बता दिया जायगा जब मिठाई दीजियेगा।

आबिदहुसैन—वाकई मज़ाक नहीं। मेरा इरादा इस काम के सीखने का है। अगर आप मेहरबानी करें तो मैं ममनून हूँगा।

नबीबख्श—मैं भी मजाक़ से नहीं कहता। अक्सकशी तो कोई चीज नहीं। अगर आप सीखने का कस्द करे तो नक़्शाकशी सिखा दी जायगी। और आप तो अंगरेजी पढे है। आपको बहुत अच्छी जगह मिल जायगी।

आबिदहुसैन—अच्छा तो मैं कल से हाज़िर हूँगा। मिठाई लेता आऊँगा।

रजाहुसैन—यह कल क्यों? क्या मिठाई के लिए दाम नहीं हैं? आबिदहुसैन कुछ चुप से हो गए।

रजाहुसैन—(एक रुपया जेब से निकाल के एक चपरासी से) अमाँ नौरोजअली एक रुपये की मिठाई तो ले आओ। उस्ताद भी क्या कहेंगे कि मुँह मीठा नहीं किया। नौरोज़अली रुपया ले के गया और चन्द ही मिनट के बाद मिठाई की टोकरी ले के आ गया। जितने अक्सकश चपरासी वगैरः वहाँ मौजूद थे, सब मे दो चार डलियाँ तक्सीम हो गईं। आबिदहुसैन नबीबख्श नक्शानवीस के शागिर्द हुए।

नबीबख्श—सुनिये मिर्ज़ा साहब! अक्सकशी की आजकल है जरूरत। साहब आप को देख ही चुके है। आज के आठवें दिन आप बीस रुपया महीने के नौकर हो जायँगे। अक्सकशी कोई चीज नहीं है। रही नक्शानवीसी। उसके लिए एक उम्र चाहिये। जितनी मुझे मालूम है उसके बताने मे दरेग न करूँगा। बाकी अगर आप को शौक होगा तो अपने आप सीखते रहियेगा।

आबिदहुसैन आठवें दिन नौकर हो जाने की खुशखबरी सुन के करीब था कि

शादोमर्ग[१] हो जाते। मगर वह रुपया जो रज़ाहुसैन ने उनकी तरफ से दे दिया था उसकी अदायगी की फिकर ने किसी कद्र उनकी मसर्रत को बेलुत्फ़ कर रखा था। इतने मे एक टुकड़ा ट्रेसिंग क्लाथ का उठा के नबीबख्श ने इनके सामने रखा। और एक जदवल[२] कलम मे स्याही भर के वता दिया कि, ऐ लीजिये इस तरह से खत खीचिये। इन्होने खतकशी शुरू की। घंटे डेढ घंटे के अरसे मे मोटे महीन खत उनके हाथ से निकलने लगे। इस असना मे नबीबख्श ने इनकी अंगरेजी तहरीर देखी। इनका अंगरेजी खत बहुत पाकीज़ था। मुन्शी नबीबख्श ने छापे के हुरूफ लिखने का तरीका वता दिया और एक वारीक कलम और थोडा रद्दी ट्रेसिंग क्लाथ दिया कि इस पर इन हुरूफों के लिखने की मश्क कीजिये। चार बजे तक इन्होने बड़ी मिहनत से काम किया। जब दफ़्तर बरखास्त हुआ और लोग अपने अपने घरो को चले यह भी उनके साथ हो लिये।

आज इनको मालूम होता था कि गोया मै नौकर हो गया। रजाहुसैन शाहगंज की तरफ के रहने वाले थे। उनका साथ बहुत दूर तक हुआ। रास्ते मे बातें होती थी। पाँच बजते बजते यह घर पहुँचे।

मिर्जा आबिदहुसैन को अपनी ज़िन्दगी मे जिस कद्र कामयाबियाँ हुईं (जिसका हाल इस किताव के मुलाहिजे से मालूम होगा) उसमे उनकी नेकबख्त बीवी की सलाहीयत[३] का बडा दखल था। इन मियाँ बीवी के बाहमी मुहब्बत के उसूल मे से एक यह बात थी कि एक दूसरे की नेकी पर पूरा भरोसा था। मियाँ के कामो पर बेहूदा नुक्ता-चीनी करना जो एक उम्द: सिफत हमारे मुल्क की औरतो मे है इनकी बीवी मे न थी। बीवी मियाँ की इज्जत करती थी और समझती थी कि उनको घर का ख़याल और बच्चो की मुहब्बत उसी तरह हे जिस तरह मुझे है। आबिदहुसैन मे रात देर तक घर से गाएब रहने की आदत न थी। अगर हुस्न इत्तफाक से कही देर होती थी तो बीवी को किसी किस्म की वदगुमानी न होती थी। न यह कि अगर कही मियाँ को देर हो गई, अब घर मे आए तो बीवी ने मानामत डाली। कियामत बरपा की। "नही तुम रण्डी के यहाँ गए थे।" मियाँ अगर वाकई खतावार हैं तो खैर। अगर नाकरद: गुनाह[४] उस सरजनिश[५] के मुस्तवजिद[६] ठहरते हैं तो अब जज-बज हो रहे हैं, कसमे खाते है, कुरान उठाते हैं, वहाँ समाअत ही नही।

मियाँ—बीवी ! तुम्हारे सर की कसम मस्जिद से नमाज पढ के मौलवी साहब किब्ला के पास गया था। शक्कियात नमाज मे कुछ दरयाफ़्त करना था।

१ हर्षाधिक्य से मृत २ ख़त खींचने का ख़ास कलम ३ गुणों ४ गुनाह नही किया हे ५ सज़ा ६ हकदार।

बीवी—वह कौन सा मौलवी उजड्डा है जो तुम्हे नौ नौ वजे तक विठा रखता है। यह नही कहते अपनी चहेती के यहाँ गए थे। खुदा गारत करे मोटी को। हैजा खाए। ढाई घडी की मौत आए। जोर से एक दो हत्तड जमीन पर मारा। देख लेना। हूँ असल नस्ल की सय्यदानी। मोटी को अठवारा न गुजरेगा। कोस कोस के खा जाऊँगी।

मियाँ—यह किस को ?

बीवी—यह उसको जो तुम्हें आधी आधी रात तक विठा रखे।

मुफलिसी के जमाने मे बीवी के जेवर और असवाव को वेंच वेंच कर, वह जो अपने वाप के घर से लाई थी, वहुत दिनो तक काम चलता रहा। यहाँ तक कि एक चाँदी का तार और ताँवे का कटोरा तक वाकी न रहा। अव तक वहुत दिनो मे वीवी की मिहनत के जरिये से घर का काम चलता था जिसका हाल नाजरीन[१] को मालूम हो चुका है मगर उसका ताना कभी मियाँ को नही दिया। आज जव सरेशाम आबिदहुसैन खुश खुश दफ़्तर से फिरे हैं तो उनको खयाल था कि बीवी से कुल हाल वयान कर दूँगा। फिर यह खयाल आया कि अव एक ही दफा वा मुराद कहेगे जिस दिन नौकर हो जायँगे।

रात को उन्होने नक्शा बनाने की स्याही एक छोटी सी प्याली मे घोली और दस ग्यारह वजे तक प्रिण्ट (नक्शे के हुरूफ़) की मश्क़ करते रहे।

दूसरे दिन सुवह को उठे। वल्देव मिस्त्री के कारखाने गए। नौ वजे वहाँ से फरागत हो करके उधर ही उधर रेल के दफ्तर पहुँचे। अभी कोई आया भी न था। यह दफ्तर के वाहर टहला किए। जव सव आगए तो यह भी गए। अक्सकशी की मश्क करने लगे। आज साहब ने फिर इन्हे देखा मगर पूछा नही। खुलासा यह कि पाँच ही चार दिन के वाद यह अच्छी तरह ट्रेस करना सीख गए। दफ्तर मे ट्रेसरो की जरूरत पहले ही से थी। नबीबख्श ने साहव से कहके इनका नाम भी लिखवा दिया। बीस रुपये महीने के नौकर हो गए। माधो का पढाना भी इन्होने तर्क नही किया, अगरचे बहुत सख्त मिहनत पडती थी। अक्सर एक ही वक्त खाना मिलता था मगर दुनिया बाउम्मीद कायम। पचीस रुपये का सहारा हो गया था। अब इन्हे किसी वात का गम न था। बीवी भी मुतमइन हो गई थी मगर उन्होने अपना काम नही छोडा। आठवें दसवें उनकी टोपी भी तैयार हो जाती थी। और मियाँ हुसैनअली वेच लाया करते थे। बहुत दिनो तक मियाँ हुसैनअली ने एक हब्बा हक-अस्सअि[२] मे नही लिया

१ पाठकों　२ मिहनताना।

मगर अब एक आना रुपया उनका भी मुकर्रर हो गया। इस तरह तीस उन्तीस रुपये मियाँ-बीवी मिल के पैदा कर लेते थे।

अगर कोई शख्स पस्त हिम्मत होता तो वह आइन्दा और कुछ तरक्की न करता। लेकिन हमारे दोस्त मिर्ज़ा आबिदहुसैन मे न वह वस्फ़ था जिसे तवक्कुल[1] कहते है। अगर ऐसा होता तो बीवी की चिकनदोज़ी के सहारे पर चारपाई के बान तोड़ा करते। और न वह सिफत थी कि जो कनाअत[2] के नाम से मशहूर है। वरना बल्देव की पाँच रुपये की नौकरी काफ़ी थी। हयात चन्दरोज़. खुश व नाखुश गुज़र ही जाती। मगर ज्याद:तलवी ने इनको चैन न लेने दिया। दोपहर को घड़ी भर सो रहने की भी मुहलत न हुई। रेल के दफ्तर मे पहुँच गए। खैर यहाँ बीस रुपये की नौकरी मिल गई मगर इनकी तकदीर मे अब भी आराम न था। अक्सकशी से नक्शाकशी सीखने का शौक हुआ। इनके उस्ताद नबीबख्श साहब रुडकी कालेज के पासशुदा तालिब-इल्म थे। उन्होने यह सलाह दी कि अगर यह काम उसूल से सीखना है तो पहले तहरीर अकलीदस का छटा मकाला[3] याद कर लीजिये। अब रात को यह छठा मक़ाला याद करने लगे। पहले तो उन्हे यह खयाल था कि कही जा के पढना होगा। मगर गौर से जो मुताल: किया आप ही आप समझ मे आने लगा। गरज कि पूरा छठा मकाला मय पाँचवें मकाले उन जरूरी शक्लो के जिसकी छठे मकाले मे जरूरत है, चन्द ही रोज मे याद कर लिया। अब मुशी नबीबख्श ने इनको नक्शाकशी के उसूल हिन्दसे सिखाना शुरू किया। दफ़्तर मे काम से फुरसत न मिलती थी। शाम से यह मुशी नबीबख्श के मकान पर पहुँचते थे। मुंशी नबीबख्श भी अपनी धुन के पक्के थे। उनको अंगरेज़ी पढने का शौक था। खुलासा यह कि यह उन्हे अगरेजी पढाते थे और वह इन्हे नक्शा सिखाते थे। नक्शाकशी के साथ ही तख्मीना इमारत के सीखने का शौक हुआ। इसके लिए अक्लीदस का ग्यारहवाँ बारहवाँ मकाला और इल्म मसाहत मुजस्समात भी हासिल किया। छ. सात महीने मे यह पूरे नक्शानवीस और एस्टीमेटर हो गए। उसी जमाने मे मुशी नबीबख्श को एक महीने की रुखसत की ज़रूरत हुई। साहब ने एवज़ी तलब की। मुशी नबीबख्श ने उन्हे पेश कर दिया। साहब ने मन्जूर कर लिया। इस जमाने मे उन्हे अपनी कारगुजारी दिखाने का बहुत उम्द: मौका मिला। साहब इनके काम से बहुत खुश हुआ मगर अभी एक बात की इनमे कसर थी। पैमायश का काम यह बिल्कुल न जानते थे। नही तो उसी जमाने मे इनको बहुत उम्द: नौकरी मिल गई होती। अब इन्होने पैमायश के सीखने का तहय्या[4] कर लिया।

---

१ राम-भ्रासरे याने निकम्मापन २ भाग्य पर सब्र ३ ज्यामिति का छठा साध्य ४ इरादा।

मुशी नबीबख्श के आने के बाद उन्हें फिर ट्रेसरी के काम पर जाना पडा। दो महीने के बाद अब इस काम की जरूरत दफ्तर मे न रही थी। सब ट्रेसर एकदम से तख्फ़ीफ[1] में आगए। यह भी मौकूफ़ हो गए। मगर महीने भर मुशी नबीबख्श की एवजी करने की वजह से साहब ने इनको बहुत उम्द: सार्टिफिकेट दिया। अब नौ बजे से इनको फ़ुरसत हो जाती थी। इस जमाने मे इन्होने सर्वेइग का काम सीखा। मुशी नबीबख्श के एक दोस्त मुशी अल्लाबख्श सदर में सब ओवरसियर होकर आए थे। उनको अक्सर पैमायश का काम रहता। यह उनके पास जाने लगे। उन्होने प्रेज्मेटिक लेविल की पैमायश इन्हे अच्छी तरह सिखा दी।

एक दिन का वाकिय: सुनिये। इनके मुहल्ले मे एक साहब मीर काज़िमअली नामी रहते थे। वह पंजाब यूनीवर्सिटी मे मौलवी-आलिम का इम्तहान देने वाले थे। इनके पास यूनीवर्सिटी का कलेन्डर ले के आए और ज़वाबित[2] इम्तहान के कवाइद इनसे पढवा के तर्जुमे करवाए। जाते वक्त भूले से कलेन्डर छोड के चले गए। यह उनके जाने के बाद उलट पलट के देखने लगे। खुशनसीबी से इनकी नज़र उस जुज़ो-किताब पर जा पडी जिसमे सीग: इंजीनियरिंग के इम्तहानो का जिक्र था। यह उसे बडे शौक से पढने लगे। थोडा सा ही पढा था कि मारे खुशी के उछल पड़े। उस जमाने में इनके एक दिली दोस्त सय्यद जाफ़रहुसैन साहब रुडकी कालेज के एक पासशुदा लायक तालिबइल्म मुलाजिम महकमा नहर रुखसत पर आए हुए थे। मिर्जा आबिदहुसैन ने फौरन कपडे पहने। कलन्डर लिए हुए शाहगंज उनके पास पहुँचे। सय्यद साहब को आवाज दी, वह घर से निकले।

सय्यद साहब—खैरियत तो है?

मिर्जा साहब—खैरियत है। ज़रा इसे देखियेगा। मेरे तो हवास ठीक नही।

सय्यद साहब—(कलेन्डर को बडे गौर से पढ़ने लगे। अब उनके चेहरे से आसार 'मुसर्रत[3] के जाहिर हुए) वाकई आप इम्तहान दे सकते है।

मिर्जा साहब—ज़रा देखिए सिन की तो कैद नही है।

सय्यद साहब—नही सिन की तो कैद नही है।

मिर्जा साहब—अच्छा तो अब देखिए मुझको किस-किस चीज़ मे ज्याद: मिहनत करना होगी।

सय्यद साहब—रियाजी तहरीर उक्लेदस, मसाहत, यह सब आप जानते है। अगरेजी की सिर्फ इंजीनियरिंग की इस्तिलाहात की दो कितावें जो रुडकी कालेज मे छपी है उन्हे देख लीजिये। सर्वेइंग, ड्राइंग मेरे नजदीक जितना आपने सीखा है काफी है।

---

१ छटनी　२ नियमावली　३ खुशी।

सिर्फ एक चीज़ से आप बिलकुल नाबलद[१] हैं। इंजीनियरिंग; उसकी किताबें मेरे पास मौजूद हैं, उन्हें पढिये और जहाँ समझ में न आए मैं अच्छी तरह समझा दूँगा।

मिर्जा साहब—इम्तहान कब होगा?

सय्यद साहब—( कलेण्डर देखके ) मई में। अभी दिन बहुत हैं। यह अगस्त का महीना है। नौ महीने आप के लिए काफी हैं। बिस्मिल्लाह करके मिहनत शुरू कर दीजिये। मगर सुनिये तो, आपने इंट्रेंस कहाँ का पास किया था?

मिर्जा साहब—( एक ज़रा मुशव्विश[२] होकर ) कलकत्ते का।

सय्यद साहब—( फिर कलेण्डर देख के ) सिंडीकेट की ख़ास इजाज़त और मिहरबानी से हर यूनिवर्सिटी का पास शुदा लिया जाता है।

मिर्जा साहब ( खुश होके ) तो अब सिंडीकेट की इजाज़त क्योंकर हासिल हो?

सय्यद साहब—मैं समझता हूँ यह एक मामूली बात है। अच्छा बेहतर है। रजिस्ट्रार को एक दरखवास्त दे दीजिये।

उसी वक्त दरखवास्त का मसविदा लिखा गया। सय्यद जाफरहुसैन ने इंजीनियरिंग की किताबें लाके हवाले की। मिर्जा आबिदहुसैन साहब घर आए। फौरन दरख्वास्त का मसविदा साफ किया। लिफाफे मे बन्द करके डाक मे छोड आए। इसके बाद इहतियातन कलेण्डर की वह तमाम इबारत नकल करके रख ली जो सीग़ इंजीनियरिंग से मुतअल्लिक थी। और उसी दिन से इंजीनियरिंग का मुतालअ[३] शुरू किया।

इंजीनियरिंग के पढने मे उनको एक तो सय्यद जाफरहुसैन से दूसरे बल्देव के कारखाने से बहुत मदद मिली। सामान इमारत और फन तामीर से तो सय्यद साहब ने इनको अक्सर इमारतो मे ले जाके खूब वाकिफ कराया। फन नज्जारी[४] और आहगरी[५] के मुतअल्लिक जो बाते की वह कारखाने मे आँख से देखी।

हम इनकी सवानेउमरी[६] मे सिर्फ इतना लिखना भूल गए हैं कि बल्देव के कारखाने से जो इनको खास दिलचस्पी थी उसकी वजह यह थी कि इन्होंने जाने के थोड़े ही दिनो बाद लोहे का काम सीखना शुरूकर दिया था। इसकी इब्तिदा[७] यो हुई कि एक दिन इनकी बीवी के पानदान के सरौते की कील टूट गई। दूसरे दिन जो यह माधो को पढ़ाने गए, हुलास लुहार को सरौता दिया कि इसमे ज़रा कील डाल देना। उसने लेके रख लिया। जब पढ़ाके चलने लगे तो उसके पास गए। वह किसी काम में लगा हुआ था, भूल गया। इनको घर जाने की जल्दी थी। एक कील वहाँ पड़ी हुई थी उसे उठाके अपने हाथ से कील डालना चाहा। कील डालके हतौडे से सर को चपटा करने लगे। हतौडी उंगली पर पड गई। उंगली पिच्ची हो गई। हुलास ने जो यह देखा, हँसने

१ अनभिज्ञ २ चिन्तित ३ अध्ययन ४ बढ़ईगीरी ५ लुहारी ६ जीवनी ७ आरंभ।

लगा। इनके हाथ से सरौता लेके कील डाल दी। एक तो इनके चोट लगी, दूसरे काम न हो सका, तीसरे खिफ़्फ़त हुई[१]। खुद फरमाते थे कि हुलास का यह कहना "मियाँ साहब यह पढना न हो, लोहे का काम है, आप लोगो से नही हो सकता।" उस वक्त मेरे दिल पर असर कर गया। मैंने इरादा कर लिया था, खुदा चाहे तो इस काम को सीखके छोड़ूँगा। दो तीन दिन मैं चुपका हो रहा। फिर उसी हुलास के पास बैठना शुरू किया। पहले तो वह कुछ दिन हँसके टाल दिया करता था मगर जब उसने देखा कि यह पीछा नही छोडते तो आखिर बताने लगा। चन्द ही रोज बाद मैंने अपने घर पर भट्ठी बनाई। एक धौंकनी मोल ली। नखास से बहुत से औजार खरीदे। रेल के दफ्तर से मैं चला आता था एक अंगरेज के बंगले पर नीलाम हो रहा था। बहुत से आदमी जमा थे। मैंने उसी दिन तनख्वाह पाई थी। मैं भी चला गया। यहाँ से एक बक्स काट-कवाड़ का खरीद लिया। उसमे बहुत सी जरूरी चीजें थी, बढई के औजार पूरे थे। कुछ लुहारी के औजार थे। एक फीता ताम्बे का था। यह बक्स सवा दो रुपये का मेरे नाम पर छूट गया। फिर एक सीने की कल पर बोली हुई। यह तीन रुपये की मिल गई। एक बरफ बनाने की कल थी। उसका एक पुर्जा टूटा हुआ था। डेढ़ रुपये की वह ले ली। घर पर लाके बरफ बनाने की कल मैंने खोल डाली। टूटे पहिये को निकाल के वैसा ही एक पुर्जा ढालने का सामान किया। ढालने का मसाला तैयार किया। पकी ईंटो की सुर्खी चलनी के टुकडे—यह सब चीजें मुनासिब मिकदार से लेके कूट-पीट कर बारीक सफूफ बना लिया। उसमे थोडा तारपीन का तेल मिला लिया। फिर एक साँचा लोहे का अपने हाथ से बना लिया। फिर उसी टूटे पुर्जे मे जो दन्दाना टूट गया था, वैसा मिट्टी का बनाके सुखा लिया। मसाले को साँचे मे डाल के दाग बना लिया और थोडा पीतल गला के वैसा ही पुर्जा ढाल लिया। फिर सोहन से साफ करके कल मे जड दिया। वह कल अच्छी खासी चलने लगी। फिर पुर्जों को खोल के सियाहताब[२] किया। बाल्टी का बारनिश उड गया था। उसे दुरुस्त किया। गरज कि कल बिल्कुल नई होगई। मियाँ हुसैनअली के हवाले की। उन्होने नखास मे दिखाई। दस रुपये की फरोख्त हुई। फिर सीने की कल के जो पुर्जे टूटे हुए थे उन्हे भी अपने हाथ से दुरुस्त कर दिया। बीवी इस कल से बहुत खुश हुईं। मियाँ हुसैनअली की बीवी मुहल्ले भर से काम ले आती थी। बीवी सिया करती थी। इस काम मे चिकन की टोपियो से ज्याद. याफ़्त[३] थी।

---

१ लाज आई २ वह रंग जो साफ़ किये हुए लोहे पर नींबू लगाकर आग में तपाने से हो जाता है ३ आमदनी।

इसके बाद लकडी के काम पर मश्क करना शुरू की। चन्द ही रोज़ में घडौचियाँ, तिपाइयाँ, इलमारियाँ, तख्त, बना बना के बेंचना शुरू किए। रेल के दफ़्तर से जब नौकरी छूटी तो उससे रोटियाँ चलती रही। जो कुछ पसंदाज[१] हुआ उसमे हाथ नही लगाया। खुदा ने इन कामो मे ऐसी बरकत दी कि इंजीनियरी का इम्तहान पास करने से पहले ही दरगाह वाला मकान छुडवा लिया। मगर वहाँ सकूनत नही इख्तियार की। जिस कुजडे के पास रेहन था उसी को किराए पर दे दिया। जिस मकान मे अब सकूनत थी उसे मोल ले लिया। बरतन बासन खरीदे। बीवी के हाथ गले मे कुछ जेवर भी हो गया। बीवी के जेवर मे मिर्ज़ा आबिदहुसैन की कमाई का एक हब्बा भी सर्फ नही हुआ। वह सब उन्होने सिलाई करके बनवाया था।

आबिदहुसैन जिस कद्र मिहनत करने जाते थे उसी कद्र मिहनत की आदत बढती जाती थी और उससे जो कामयाबी होती थी उससे शौक ज्याद: होता जाता था। उसी मिहनत का यह नतीजा था कि पंजाब यूनिवर्सिटी के इम्तहान इंजीनियरिंग मे औवल दरजे की सनद अता हुई। अब क्या था गोया सरकारी मुलाजिमत की दस्तोवज हाथ आ गई। दो ही तीन महीने के बाद नौकर हो गए। साठ रुपये तनखवाह। पन्द्रह रुपये भत्ता। पचहत्तर रुपये माहवार की आमदनी हुई। मुहकमे तामीरात मे नाजाएज आमदनी[२] की बहुत गुंजाइश है। मगर हम अपने नाज़रीन[३] को यकीन दिलाते हैं कि हमारे दोस्त ने कभी एक हब्बा सिवाए तनखवाह के नही लिया। शायद आपको यह खयाल होगा कि मिर्ज़ा साहब ने रेलवे के दफ्तर मे नौकर हो जाने के बाद बल्देव की नौकरी छोड दी होगी। नही छोडी, और फिर घर पर भी काम करते थे। बीवी अलाहिद. काम करती थी जिससे यह वहम हो सकता है कि उन मियाँ-बीवी को ज़रूरत से ज्याद. रुपये पैदा करने की हवस थी। मगर इसके साथ ही नाजाएज तरीके से रुपये पैदा करना उनका शिआर[४] न था। उन्होने जो कुछ पैदा किया वह अपने कूवत बाजू से पैदा किया। इससे उनको सरकारी मुलाजिमत मे रिश्वतखोर अहल-अमले[५] की वजह से बाज़ मौको पर दुश्वारियाँ हुईं जिसका जिक्र आइन्द. किया जायगा। पहले हम उनके उन औसाफ का[६] शिम्म:[७] ज़िक्र करते हैं जिससे उनके अफसर इनकी कद्रदानी करने लगे थे जो उनकी यौमन फयौमन[८] तरक्की का बाएस हुआ। एक मरतबा उनके अफसर आला एकजीक्यूटिव इंजीनियर साहब ने एक पुल की मिहराब के कालिब[९] का स्कीम बना के दिया और हुक्म दिया कि फौरन बढईखाने से एक ऐसा कालिब बनवा दो। परसो हम दौरे पर जाने वाले हैं। अपने साथ ले जायँगे। पूरे कद का

---

१ बचत की पूंजी २ घूस, रिश्वत की आमदनी ३ पाठकगण ४ स्वभाव ५ कर्मचारियों ६ गुणों का ७ थोडा सा ८ दिन ब दिन ९ ढाँचा।

नक्शा तैयार न था। इसलिए बढई मिस्त्री की समझ मे न आया। अब अगर नक्शा तैयार किया जाता है तो देर होती है। आखिर उन्होने कालिव अपने हाथ से खुद बनाना शुरू किया। आधा बना होगा कि साहब कारखाने मे मुआयने को आए। देखा ओवरसियर साहब खुद हाथ मे बसूला लिए काम कर रहे हैं। बढई मिस्तरी हाथ पर हाथ रखे बैठे है। साहब ने उसी हाल मे उनको आके देखा, बहुत ही खुश हुए। उस दिन से साहब को मालूम हुआ कि वह अपने हाथ से काम कर सकते है। इसी तरह लोहे का काम भी अपने हाथ से करते उनको देख लिया। जब साहब की तब्दीली हुई तो इनकी सर्विस बुक पर लिखा—"आबिदहुसैन अपना काम खूब जानता है और लुहार के काम अपने हाथ से कर सकता है। हम इसकी तरक्की की सिफारिश करते है।" उसकी सिफारिश का यह नतीजा था कि अपनी मुलाजिमत के दो ही साल के अन्दर सब-इजीनियर हो गए।

एक मर्तबः इनको कौमी शुजाअत[1] दिखाने का भी मौका मिला। बात यह हुई कि सरहद अफगानिस्तान मे कुछ दिनो के लिए इनकी तब्दीली हो गई थी। एक दिन इंजीनियर साहब के साथ यह एक पहाड के दर्रे मे पैमायश को गए थे। वहाँ दफ्अतन[2] छ सात पठानो ने आके घेर लिया। खलासी यह मामला देखकर रफूचक्कर हो गए। यह और साहब अकेले रह गए। साहब ने कमर से रिवाल्वर निकाला। इत्तफाक मे गोली न चली, इसपर अफगानी और दिलेर हो गए। इन्होने सीनःसिपर होकर[3] साहब की जान बचाई और तलवार म्यान से खीच कर बडी मर्दानगी से मुकाबिला किया। इनके वालिद मरहूम अक्सर फनून सिपहगिरी[4] मे मश्शाक[5] थे। उन्होने लड़कपन में कुछ इनको भी सिखा दिया था। वही उस दिन इनके काम आया और उस दिन इनको कदीम फनून सिपहगिरी की कद्र हुई।

इस वाकिए से साहब के दिल मे इनकी जगह हो गई। सब मातहतो से ज्यादः इनको मानते थे। चुनांचे इनके सार्टिफिकेट मे भी जो उन्होने विलायत जाते वक्त इनको बतौरेखुद[6] दिया था उसमे इस वाकिए का इशारा है।

जिस ज़माने मे मिर्जा आबिदहुसैन नहर के मुहकमे में मुलाज़िम थे, एक रिश्वतखोर हेडक्लर्क से अदावत हो गई। वजह अदावत यह थी कि दुर्गा ठेकेदार, जिसके मार्फ़त राजवाहो की पुलो की मरम्मत हो रही थी, दस रुपये सैकड़ा ओवरसियर साहब को देता था, जिसकी जगह पर मिर्जा साहब तशरीफ ले गए थे। उसमे ओवरसियर और हेडक्लर्क मे निस्फ़न-निस्फ़ी[7] का हिसाब हो जाया करता था। मिर्जा साहब भला कब

---

१ वीरता २ अकस्मात ३ डटकर ४ युद्धकला ५ अभ्यस्त ६ निजी तौर पर ७ आधम आध।

इसको जाएज रखते है। उन्होने माहवारी हिसाब पैमायश मे एक इंच की कसर न रखी। ठेकेदार की नानी मर गई। उस सूरत मे भला वह कुछ क्यो देता, मगर हेडक्लर्क साहब को सख्त नुकसान हुआ। पहले उन्होने इशारतन व किनायतन[1] मिर्जा साहब से कहा। यह ऐसी कब सुनते थे। फिर सराहतन[2] बजरिये सेकेण्डक्लर्क से कहलवाया कि हमारे मुआमलात मे दस्तन्दाजी न कीजिये। इसमे आप का भी भला है, हमारा भी। मिर्जा साहब ने जवाब दिया कि किसी का नफा क्यो न हो सरकार का तो नुकसान है जो हमको बेशबहा दरमाहा देती है। मैं उसको गवारा नही कर सकता। मुझसे ऐसी उम्मीद न रखें और न दोबार इस बारे मे मुझसे गुफ़्तगू की जाय। यह साफ जवाब, हेडक्लर्क को बहुत ही शाक हुआ। वह साहब के कान इनकी तरफ से भरने लगा। कभी किसी काम के ताखीर होने[3] का इल्जाम लगाया, कुछ हिसाब किताब मे शकूक पैदा करके साहब के गोश गुजार किए। बाज ठेकेदारो से शिकायत करा दी कि मिर्जा साहब काम नही देखते। साहब के बैरा और खानसामाँ इनसे पहले ही नामुआफ़िक[4] थे। उनसे वक़्तन फवक्तन[5] कुछ कहलवाते रहे। पहले तो इन अमूर पर साहब को एतबार न आया, मगर कहाँ तक, कहने-सुनने से पहाड टल जाते हैं। आख़िर साहब को इनकी तरफ से सूए जन[6] पैदा हो गया और उसके आसार बाहमी खत व किताबत मे जाहिर होने लगे। मिर्जा ऐसे बेवकूफ न थे, जो इस मामले को समझ न जाने। मगर बकौल शेख—"आँ रा कि हिसाब पाक अस्त अज मुहासिब चि. बाक"[7]

एक मरतबा पाँच मील का लेविल साहब ने किया था। उसकी जाँच के वास्ते मिर्जा साहब को भेजा। मिर्जा साहब ने पैमायश की। काम की उजलत थी। इस लिए रिड्यूस्ड लेविल निकालने के लिए फील्ड बुक दफ़्तर मे दे दी। यहाँ हेडक्लर्क साहब ने फील्ड बुक गलत कर दी। जब रिड्यूस्ड लेविल निकाल के साहब की फील्ड बुक से मिलान हुआ, दस फीट की गलती होगई। यह वह पैमायश है जिसमे फी मील $\frac{1}{100}$ इंच की गलती माफ है। यहाँ दस फीट की गलती पाँच मील मे। साहब निहायत ही बरहम[8] हुए। उधर मिर्जा साहब अपनी जगह पर नादिम[9] कि गलती और इस कद्र गलती। या अल्लाह यह क्या माजरा है। हालाँकि मिर्जा साहब ने बडी होशियारी से पैमायश की थी हर एक गज को दो-दो मरतबा पढा था। बहुत ही मुतरद्दिद[10] थे। बैठे फील्ड बुक के हर एक खाने को जाँच रहे थे। अक्सर मौको के गज इनको याद थे। फील्ड बुक मे इसके खिलाफ लिखा हुआ था। अब उनको कुछ

---

१ बंद-बंद, संकेत से २ स्पष्ट ३ देर होने ४ विपरीत ५ समय समय पर ६ बुरा गुमान, कुधारणा ७ "जिसका हिसाब पाक है उसको जाँच का क्या डर!" ८ नाराज़ ९ लज्जित १० चिंतित।

शक पैदा हुआ। मैगनीफायर ( शीशा खुर्दबीन ) लगा के जो देखते है। मिटे हुये पेंमिली दाग साफ पढ लिए गए। वह उनकी याद के मुताविक थे। मगर अक्सर जगह मेगनीफायर से मिटे वड़े निशान न पढ़े गए। दूसरे दिन फिर मौके पर पैमायश करने गए। पहली मरतवा लेविल करते वक्त एक कागज पर राइजफाल ( नशेव व फराज[1] ) का हिसाव किया था। वह कागज़ इत्तफाकन एक जगह सडक के किनारे पडा हुआ मिल गया। मिर्जा साहव उसी वक्त उस कागज को लिए घोडा दौडा के साहव के बंगले पर पहुँचे और हकीकत हाल वयान की। साहव हेडक्लर्क पर वहुत मेहरवान थे। मिर्जा के कहने से कुछ शक तो होगया मगर किसी किस्म का तदारुक[2] न किया। इससे वहुत ही वददिल हुए और उस दिन से दफ़्तर वालो से वहुत होशियार रहने लगे। दफ़्तर वालो का कोई काबू न चला मगर इनकी वजह से उनका माली नुकसान होता था। इसलिए यह फिक्र थी कि किसी तरह इनको निकलवाना चाहिये। आखिर एक ठेकेदार से रिश्वतदही का इज़हार साहव के सामने दिलवा दिया। और इस सलीके से मुकद्दमा वनाया कि साहव को यकीन आगया। साहव ने मिर्जा को मुअत्तल किया और मुकद्दमा फ़ौजदारी मे भेज दिया। तहकीकात शुरू हो गई। इस्तगासे की तरफ के गवाह पूरे ठीक उतर गए। मिर्जा के कौंसिल[3] ने वहुत जोर दिया। जिरह के सवालात वहुत ही सख्त किए मगर एक गवाह न टूटा। मिर्जा पर चार्ज काएम हो गया। अव डिफेन्स[4] के गवाह गुजरने लगे। मिर्जा ने उज्र किया कि जिस दिन और जिस वक्त का यह वाकिय: वयान किया गया है, मैं पचास मील के फासले पर खुद इंजीनियर साहव के साथ पैमायश कर रहा था। इंजीनियर साहव खुद गवाही मे तलव हुए थे मगर हेडक्लर्क साहव जालसाज़ी मे कामिल थे। उन्होने पहले ही इसका इन्तजाम कर लिया था। साहव के दौरे की किताव मे तारीख वदल दीगई। अगरचे साहव को खुद याद था मगर तहरीरी शहादत के मुकावले मे ज़वान क्या काम देती। मिर्जा का उज्र न चल सका। मिर्ज़ा पर जुर्म आएद होगया। जेलखाने जाने मे कोई वात वाकी न थी। मिर्ज़ा के कौसिल ने उज्र मज़ीद[5] के लिए मुहलत माँगी। शेसन जज ने मंजूर की। अगरचे मिर्ज़ा के चाल चलन से एक जमाना वाकिफ़ था। खुद अहले जूरी मिर्जा की वेगुनाही के मुकिर[6] थे। मगर शहादत तहरीरी और जवानी इस कद्र इनके खिलाफ थी कि कुछ किसी के वनाए न वनती थी। कार्रवाई इस मुकद्दमे की रोजाना अख्वारो मे छपती थी। अहले अख्वार की राए भी मिर्ज़ा के मुवाफिक थी। 'अज् कि तामे.'[7] सव को मिर्ज़ा

१ ऊँचाई-नीचाई २ रोक, उपाय ३ सलाहकार वकील ४ बचाव की तरफ़ ५ अतिरिक्त पेटिशन ६ मानने वाले ७ छोटे से वडे तक।

की बेगुनाही पर अफसोस था। दर हकीकत मिर्जा पर यह बहुत ही सख्त वक्त था। खास मिर्जा के दिल पर जो कुछ गुजर गया उसको सिवाए ख़ुदा के और कोई नही जानता। बीबी बच्चो मे कियामत बरपा थी। मुकद्दमे की आखिरी पेशी में कोई चार दिन और बाकी थे। हेडक्लर्क और उनके मातहत अहले दफ्तर जो रिश्वतखोरी मे उनके कास.लेस[१] थे, बहुत ही खुश थे। साहब को मिर्जा के साथ कोई हमदर्दी न थी। एक तो यह इस सबब से कि हेडक्लर्क ने उनको मिर्जा की तरफ से पहले ही बदजन कर रखा था, दूसरे एक सबब यह भी था कि साहब बहादुर किसी कद्र बदजबान थे और मिर्ज़ा को उसकी बरदाश्त न थी। एक दिन दौरे पर मिर्जा से और उनसे एक वाकिये पर तकरार होचुकी थी। वाकिय यह था।

साहब बहादुर लेविल कर रहे थे। मिर्जा पेसिंग ( कदमो से पैमायश करना ) करके खूँटियो पर गज रखवाए जाते थे। खलासी जो गज लिए हुए था पैमायश के काम से वाकिफ न था। उसने एक गज को बजाए खूँटी के जमीन पर पढवा दिया। साहब इस गज को पढ़के आगे बढ़े। मिर्ज़ा को जब इस गलती की इत्तिला हुई तो बखयाल इसके कि पैमायश गलत न होजाय साहब से कह दिया। अब साहब को दोबारः लेविल करके गज पढना पडा। इस बात पर साहब बहुत झुँझलाए और बजाए इसके कि मिर्जा से खुश होते, सखत-कलिम. कह बैठे। मिर्ज़ा को बहुत ही नागवार हुआ। मगर चूंकि इस बाब में थोड़ी सी गफलत मिर्ज़ा की भी थी इसलिए खामोश हो रहे। इस पैमायश मे थोडी दूर और आगे जाके साहब ने हुकुम दिया कि गाँव के सेहद्दे[२] पर गज रखवाओ। मिर्ज़ा इस इलाके मे चन्द ही रोज़ से आए हुए थे और कभी उस तरफ दौरे का इत्तफाक न हुआ था। इसलिए लोगो से सेहद्द. दरयाफ़्त करने लगे। इसमे देर लगी। अब शाम का वक्त था। साहब को डेरे पर पहुँचने की बहुत जल्दी थी। चाहते थे पैमायश जल्द खत्म करें। इसलिए बहुत ही झुँझलाए हुए थे। छूटते ही मिर्जा को उल्लू कह बैठे। उस वक्त मिर्ज़ा से भी यह गुस्ताखी हुई कि उन्होने साफ जवाब तुरकी ब तुरकी दिया। साहब इसके आदी न थे इसलिए सख्त नागवार हुआ। करीब था कि नौबत ब हुश्त मुश्त[३] पहुँचती। मगर चपरासियो ने बीच बचाव कर दिया। सेहद्द. मिल गया था। पैमायश खत्म हुई। गाडी साहब की पहुँच गई थी। सवार हुए। अब बिल्कुल रात होगई थी। डेरा इस मुकाम से आठ मील के फासिले पर था। मिर्जा को मालूम न था कि साहब कहाँ तक पैमायश करते जायँगे। घोडे का हुकुम न दिया था। साहब बहादुर खुद गाडी मे बैठकर रवाना हुए। मिर्जा पा प्यादः हमराह हुए। साहब का गुस्सा अब फिरो होगया था। बातें होने लगी। बडी

१ प्याला चाटने वाले २ तिराहे, गाँवों के डांड (मिलने की जगह) ३ हाथापाई।

आप खाए न दूसरो को खाने दे। बाप कसम ! भैया रामदीन, जब से यह मिर्जा इस इलाके मे आया, मेरा तो दस बारह हजार का नुकसान होगया।

रामदीन—क्यो क्या तुम्हारा कोई बिल काट दिया ?

शिवविहारी—बिल तो नही काट दिया। मगर बालू की सफाई मे हमको हजार डेढ हजार साल मे मिल जाया करते थे। चार बरस से एक कौड़ी भी नही मिली।

रामदीन—क्यो क्या ठेका तोड दिया ?

शिवबिहारी—नही, ठेका तो नही तोडा। पैमायश मे कोई गुजाइश नही रखी। दो सौ पचीस सात आने वसूल है। कहो जब इस काम मे दो सौ पचहत्तर साल मे मिले तो हम क्या खायँगे ?

रामदीन—तो पैमायश मे कम नापा होगा ?

शिवबिहारी—तुम तो समझते हो फिर नादान बनते हो। कौन कहता है कि (उन्होंने) कम नापा।

रामदीन—फिर उनकी क्या खता। जितना काम तुमने किया था उसके दाम दिलवा दिए। एक हम कहेंगे कि मिर्जा साहब पैमायश के बडे सच्चे हैं। हमने तो एक बिल बनवाया था उसमे देख लिया। हमारा जितना काम था उससे एक इंच न घटाया न बढ़ाया। न हमारा नुकसान किया न सरकार का। पूरे दाम दिलवा दिए। हेडक्लर्क साहब पाँच रुपये माँगते थे। मैंने अपना पूरा बिल आने पाई से वसूल कर लिया। कौडी नही दी। देता क्यो ? काम मैने किया, मिहनत की, रुपया लगाया। फिर हेडक्लर्क कौन होते हैं जो रुपये लेते।

शिवविहारी—कितने का बिल था ?

रामदीन—पाँच हजार छः सौ इकानवे रुपये तेरह आने सात पाई का।

शिवविहारी—और ओवरसियर साहब को क्या दिया ?

रामदीन—मिर्जा को ?

शिवविहारी—हाँ और किसे।

रामदीन—इतनी तो मैं कसम खा सकता हूँ कि मिर्ज़ा ने कभी एक पैसा घूस का नही खाया। तुमने उस गरीब को बेकार फँसाया है। देखना क्या भुगतान भुगतते हो। और फिर झूठी गंगा अदालत मे उठाई। मिर्ज़ा देवता आदमी है। उसको सता के फल न पाओगे। इतना कहके रामदीन नशे की धुन मे ज़ारोकितार रोने लगा।

शिवविहारी—मिर्ज़ा तो अब जाते है। तुम रोया करो। जो हमारा नुकसान करे उसके बाप को हम फँसायेंगे।

रामदीन—अबे जा, तूने धरम नास कर दिया। ऐसे गऊ आदमी को फँसाया।

परमेशर चाहेगा तो इसका एवज इसी जनम में मिल जायगा। और दूसरे जनम में जो भुगतना पड़ेगा उसे कौन जाने।

शिवबिहारी—और जो दूसरे का पेट काटे उसका क्या हाल होगा?

रामदीन—कौन सा तेरा पेट काटा? जितना तूने काम किया था उसका रुपया दिलवा दिया।

शिवबिहारी—और आप जो रिश्वत खाई?

रामदीन—तू झूठा है। मिर्ज़ा ने एक दमड़ी रिश्वत नहीं खाई। ७ मई को जिस दिन तूने बयान किया है कि रिश्वत दी है उस दिन मिर्ज़ा दौरे पर साहब के साथ थे। तू बयान करता है कि बुरहामपुर के पडाव पर पाँच सौ रुपये सात बजे शाम को ले गए।

शिवबिहारी—तो क्या इसमे झूठ है?

रामदीन—सब झूठ है। उस दिन चार बजे साहब ने सीता नाले का पुल देखा। मिर्ज़ा, साहब के साथ थे। वही मै भी था। मेरी मदत गई थी। मेरे चिट्ठे मे साहब का मुलाहज़ः लिखा हुआ है। वहाँ से चार मील के आगे साहब ने शिवदीन-खेड़ा मे कियाम किया। दूसरे दिन सुबह से शाम तक साहब के साथ पैमायश मे रहे। शिवदीनखेड़ा से बुरहामपुर चौतीस मील के फ़ासले पर तुझसे रिश्वत लेने किस वक्त गए थे।

शिवबिहारी—सात मई को साहब दौरे पर गएही नही। उनकी नोटबुक में सत्रह तारीख का दौरा लिखा है, तू सात मई का दौरा बक रहा है।

रामदीन—सात के सत्रह दफ़्तर मे बने हैं। हमारा चिट्ठा तो कोई देखे।

शिवबिहारी—अबे तेरा चिट्ठा कौन पूंछता है। साहब की नोटबुक सही है कि तेरा चिट्ठा सही है?

रामदीन—साहब की नोटबुक में तो जाल बना है। हमारे चिट्ठे में कौन जाल बनाता?

शिवबिहारी—फिर तूने गवाही दी होती।

रामदीन—हम गए हुए थे कानपुर, नही तो गवाही जरूर देते। और अब जो मौका होगा तो क्या गवाही न देगे।

इस तक़रीर को सुनकर शिवबिहारी जरा धीरे हुए। नशा हिरन होने लगा। क्योंकि अभी मुकद्दमे की तारीख के तीन दिन बाकी थे। मुद्दआअलैह[1] को मज़ीद उज्र[2] की गुंजाइश बाकी थी।

इधर तो दोनो ठेकेदारों में यह बातें हो रही थी, उधर लेखई चमार जो मिर्जा के भाई

१ प्रतिवादी, जिस पर दावा दायर हो २ आपत्ति।

दूर तक मिर्जा पा-प्याद गाड़ी के साथ चले गए। साहब का अर्दली और चपरासी दोनो गाडी पर थे। आखिर साहब गाडी तेज करके आगे बढ गए। मिर्जा बेचारे कोई नौ बजे रात को सर्दी खाते हुए अपने डेरे पर पहुँचे। गरज कि साहब बहादुर से और मिर्जा से नाचाकी होगई थी। अगरचे यह अम्र कुछ ऐसा न था लेकिन उसी जुर्म पर साहब ने भत्ता बन्द कर दिया था। मिर्जा ने इसकी कोई शिकायत अफ़सर आला से न की। इस वाकिए की खबर छिपी रहने वाली न थी। हेडक्लर्क साहब को हाशिया लगाने का खूब मौका मिला। मिर्जा ने बहुत चाहा कि अपनी कारगुजारियो से साहब को खुश करें, मगर साहब के दिल मे इनकी तरफ से गुंजाइश ही न थी। जो काम यह काबिल तहसीन[१] करते थे साहब उसको इनका फ़र्ज़ मन्सबी[२] तसव्वुर करते थे। और अगर बमुक्तजाए बशरीअत[३] किसी किस्मत की फिरोगुजाश्त[४] हो जाती थी तो साहब को उसकी याददाश्त की फिक्र हो जाती थी। मुकद्दमा फौजदारी में साहब से अगरचे कानूनी कार्रवाई मे कोई अम्र खिलाफ सिद्क[५] नही हुआ। इसमे साहब का क्या गुनाह था कि उनकी नोट बुक गलत करदी गई। जो लोग इन मुआमलात से वाकिफ थे उनकी यह राए थी कि साहब को मिर्ज़ा के साथ कुछ रिआयत करनी थी। अगरचे साहब को मिस्ल हेडक्लर्क के इसकी खुशी न थी कि मिर्ज़ा कैद हो जायँ, मगर मिर्जा के कैद हो जाने पर साहब को कुछ अफसोस भी न था। अफ़सर और मातहत मे ज़रूर है कि किसी कद्र हमदर्दी हो। महज कानूनी तअल्लुक मे काम नही चल सकता। यह हमदर्दी दो तरह से पैदा हो सकती है। एक तो जाएज तरीके से। वह यह कि मातहत कारगुजार[६] हो और अफसर कद्र शिनास[७]। और दूसरे बतौर नाजायज। वह यह कि मातहत खुशामदी हो और अफसर खुशामदपसन्द। न साहब खुशामदपसन्द थे न मिर्ज़ा खुशामदी। मिर्जा कारगुज़ार मातहत थे और साहब कद्रशिनास मशहूर थे। मगर हेडक्लर्क साहब ने वाकिआत पर ऐसा पर्दा डाल दिया था कि मिर्ज़ा को अपनी कारगुजारी दिखाने और साहब को कद्रशिनासी करने का मौका न दिया। मिर्जा को इसकी भी परवाह न थी। इसलिए कि यह अक्खड आदमी थे। यह सिर्फ अपना कारे-मन्सबी[८] करके खुश होते थे। कारे-मन्सबी का एवज अपनी तनख्वाह को समझते थे। इसके लिए किसी किस्म के सिले[९] या सिताइश[१०] को जोफ तबिअत[११] खयाल करते थे। इनकी सशमाही[१२] कारगुजारी की रिपोर्टें इनके गुजश्तः अफसरो ने सतरें के सतरें तारीफ मे

---

१ तारीफ़ २ नियत कर्तव्य ३ मनुष्य होने के नाते ४ भूलचूक ५ सच से परे ६ कर्तव्यपरायण ७ गुणपारखी ८ सरकारी काम ९ बदला, प्रतिकार १० तारीफ़ ११ मन का दौर्बल्य १२ छमाही।

लिखी थी; सिवाए इस सशमाही[१] के जिसमे बुरा भला कुछ न लिखा गया था और इसके वाद भत्ता वन्द कर दिया गया था।

मुआमलात की यह सूरत थी। जव मुकदमा कायम हुआ। अब सिर्फ चार दिन और वाकी है, हर शख्स जिसको इनसे तअल्लुक खातिर था, इसी अफ़सोस मे था कि मिर्ज़ा मुफ्त फँसे।

मिर्ज़ा वेचारे खामोश हैं कि शिकवा न शिकायत, तकदीर पर शाकिर है। नाकामी उम्मीद भी है रहम के काविल, मायूस है एसे की दुआ भी नही करते।

मिर्ज़ा का वयान है कि मैंने इस वाव मे खुदा से किसी किस्म की दुआ नही की। मेरा खयाल था कि मेरा अकीदः है कि खुदा मुझ पर मेरे माँ वाप से ज्यादह मिहरवान है। वह दानाए राज[२] और कारसाज है। इस हालत मे जो मेरे हक मे मुनासिव होगा वही किया जायगा। "मर्जी मौला अज हम. औला"[३]। इस खयाल से दुआ कुछ ज़रूरी नही। रही यह वात कि दुआ से शान अबूदियत[४] जाहिर होती है। इसके वास्ते दुआए कुनूत[५] और दीगर अदअियः[६] जो नमाज़ मे दाखिल है काफी है। हमारी राय इस अम्र मे मिर्ज़ा के खिलाफ है। इसलिए कि सिवाए इजहार अबूदियत[७] के एक किस्म का खुलूस[८] भी दुआ से पाया जाता है। खैर इस मौके पर इस मसले पर ज्यादः वहस करना हमको मंजूर नहीं। मिर्ज़ा की सीरत[९] का वयान 'मिन् ओ अन्'[१०] मतलूव[११] है।

मिर्ज़ा की किस्मत के फ़ैसले में तीन दिन वाकी है। शिवविहारी ठेकेदार असल मुरतगीस[१२] और रामदीन एक और ठेकेदार दोनो शरावखाने मे वैठे ठर्रा[१३] उडा रहे हैं और यह वातें हो रही हैं—

रामदीन—कहो उस मुकद्दमे मे क्या हुआ ?

शिवबिहारी—कौन मुकद्दमा ? मिर्जा वाला।

रामदीन—वही मुकद्दमा।

शिवविहारी—मिर्जा अव नही वचते। गए सात वरस को।

रामदीन—वड़े पुन[१४] का काम किया तुमने।

शिवविहारी—क्यो पुन का काम क्यो नही किया। ऐसे का जाना ही अच्छा है।

---

१ छमाही २ रहस्य का जानने वाला ३ ईश्वरेच्छा ही में हमारा भला है ४ भक्ति-महिमा ५ नमाज में संतोश के लिए एक विशेष दुआ पढ़ना ६ दुआएँ ७ भक्ति-अभिव्यक्ति ८ पवित्रता ९ स्वभाव १० अक्षरशः ११ अभीष्ठ १२ फ़ौज़दारी में दावा दाइर करने वाला १३ देशी शराब १४ पुण्य।

आप खाए न दूसरो को खाने दे। बाप कसम ! भैया रामदीन, जब से यह मिर्जा इस इलाके मे आया, मेरा तो दस बारह हजार का नुकसान होगया।

रामदीन—क्यो क्या तुम्हारा कोई बिल काट दिया ?

शिवबिहारी—बिल तो नही काट दिया। मगर बालू की सफाई मे हमको हजार डेढ़ हजार साल मे मिल जाया करते थे। चार बरस से एक कौड़ी भी नही मिली।

रामदीन—क्यो क्या ठेका तोड दिया ?

शिवबिहारी—नही, ठेका तो नही तोडा। पैमायश मे कोई गुजाइश नही रखी। दो सौ पचीस सात आने वसूल है। कहो जब इस काम मे दो सौ पचहत्तर साल मे मिले तो हम क्या खायँगे ?

रामदीन—तो पैमायश मे कम नापा होगा ?

शिवबिहारी—तुम तो समझते हो फिर नादान बनते हो। कौन कहता है कि (उन्होने) कम नापा।

रामदीन—फिर उनकी क्या खता। जितना काम तुमने किया था उसके दाम दिलवा दिए। एक हम कहेंगे कि मिर्ज़ा साहब पैमायश के बडे सच्चे है। हमने तो एक बिल बनवाया था उसमे देख लिया। हमारा जितना काम था उससे एक इंच न घटाया न बढ़ाया। न हमारा नुकसान किया न सरकार का। पूरे दाम दिलवा दिए। हेडक्लर्क साहब पाँच रुपये माँगते थे। मैंने अपना पूरा बिल आने पाई से वसूल कर लिया। कौडी नही दी। देता क्यो ? काम मैंने किया, मिहनत की, रुपया लगाया। फिर हेडक्लर्क कौन होते हैं जो रुपये लेते।

शिवबिहारी—कितने का बिल था ?

रामदीन—पाँच हज़ार छ. सौ इकानवे रुपये तेरह आने सात पाई का।

शिवबिहारी—और ओवरसियर साहब को क्या दिया ?

रामदीन—मिर्जा को ?

शिवबिहारी—हाँ और किसे।

रामदीन—इतनी तो मैं कसम खा सकता हूँ कि मिर्ज़ा ने कभी एक पैसा घूस का नही खाया। तुमने उस गरीब को बेकार फँसाया है। देखना क्या भुगतान भुगतते हो। और फिर झूठी गंगा अदालत मे उठाई। मिर्ज़ा देवता आदमी है। उसको सता के फल न पाओगे। इतना कहके रामदीन नशे की धुन मे ज़ारोकितार रोने लगा।

शिवबिहारी—मिर्ज़ा तो अब जाते है। तुम रोया करो। जो हमारा नुकसान करे उसके बाप को हम फँसायेंगे।

रामदीन—अबे जा, तूने धरम नास कर दिया। ऐसे गऊ आदमी को फँसाया।

परमेशर चाहेगा तो इसका एवज इसी जनम में मिल जायगा। और दूसरे जनम में जो भुगतना पड़ेगा उसे कौन जाने।

शिवविहारी—और जो दूसरे का पेट काटे उसका क्या हाल होगा ?

रामदीन—कौन सा तेरा पेट काटा ? जितना तूने काम किया था उसका रुपया दिलवा दिया।

शिवविहारी—और आप जो रिश्वत खाई ?

रामदीन—तू झूठा है। मिर्जा ने एक दमड़ी रिश्वत नही खाई। ७ मई को जिस दिन तूने बयान किया है कि रिश्वत दी है उस दिन मिर्ज़ा दौरे पर साहब के साथ थे। तू बयान करता है कि बुरहामपुर के पड़ाव पर पाँच सौ रुपये सात बजे शाम को ले गए।

शिवविहारी—तो क्या इसमे झूठ है ?

रामदीन—सब झूठ है। उस दिन चार बजे साहब ने सीता नाले का पुल देखा। मिर्ज़ा, साहब के साथ थे। वही मैं भी था। मेरी मदत गई थी। मेरे चिट्ठे मे साहब का मुलाहज़: लिखा हुआ है। वहाँ से चार मील के आगे साहब ने शिवदीन-खेड़ा मे कियाम किया। दूसरे दिन सुबह से शाम तक साहब के साथ पैमायश मे रहे। शिवदीनखेड़ा से बुरहामपुर चौतीस मील के फ़ासले पर तुझसे रिश्वत लेने किस वक्त गए थे।

शिवविहारी—सात मई को साहब दौरे पर गएही नही। उनकी नोटबुक में सत्रह तारीख का दौरा लिखा है, तू सात मई का दौरा बक रहा है।

रामदीन—सात के सत्रह दफ़्तर मे बने हैं। हमारा चिट्ठा तो कोई देखे।

शिवविहारी—अबे तेरा चिट्ठा कौन पूँछता है। साहब की नोटबुक सही है कि तेरा चिट्ठा सही है ?

रामदीन—साहब की नोटबुक में तो जाल बना है। हमारे चिट्ठे मे कौन जाल बनाता ?

शिवविहारी—फिर तूने गवाही दी होती।

रामदीन—हम गए हुए थे कानपुर, नही तो गवाही जरूर देते। और अब जो मौका होगा तो क्या गवाही न देंगे।

इस तकरीर को सुनकर शिवविहारी जरा धीरे हुए। नशा हिरन होने लगा। क्योंकि अभी मुकद्दमे की तारीख के तीन दिन बाकी थे। मुद्दआअलैह[1] को मज़ीद उज्र[2] की गुंजाइश बाकी थी।

इधर तो दोनो ठेकेदारो में यह बातें हो रही थी, उधर लेखई चमार जो मिर्जा के भाई

---

१ प्रतिवादी, जिस पर दावा दायर हो २ आपत्ति।

का साईस था, टके का ठर्रा उडाने भट्ठीखाने मे आया करता था। उसने जो इस मुकद्दमे की बाते सुनी, ठर्रा पीके नीम के दरख्त की आड़ में चिलम पीने लगा। मुकद्दमे की रूदाद[1] से उसको भी एक गूनः[2] तअल्लुक था। उस दिन ख्वामख्वाह टके का ठर्रा पिया और चुपका सुना किया।

घर पर पहुँचते ही अपने भाई मक्का से कुल वाकियः बयान किया। मक्का ने दूसरे दिन सुवह को मिर्ज़ा साहव से यह सब हाल कहा। चलिए रामदीन मय चिट्ठे के तलव होगए। यही शहादत मिर्ज़ा की वरीयत[3] के लिए काफ़ी थी लेकिन एक अम्र[4] खुदासाज[5] वाके हुआ। शिवविहारी और रामदीन की तकरीर अगरचे चन्दाँ दिलचस्प न थीं मगर मिर्जा साहव के एक दोस्त ने उसको लेखई से दोवारः सुना और उसे कलमवन्द करके रामदीन के आगे दुहरा दी और अंगरेजी मे तर्जुमा करके अखवार मे भेजदी। यह अखवार सुपरिंटेण्डेण्ट इंजीनियर साहव की नज़र से भी गुजरता था। उन्होने जो उसको पढ़ा उसी वक्त अपनी फ़ाइल से एक डमी आफ़िशियल चिट्ठी साहव इक्जीक्यूटिव इंजीनियर की निकाल के देखी। उसमे सीता नाले के मुलाहज़े का कुछ जिक्र था। उसमे फ़ीअल्वाकिअ[6] सात मई अज़् मुकाम शिवदीनखेड़ा तहरीर था। साहव मौसूफ़[7] ने उसी वक्त एक चिट्ठी इक्जीक्यूटिव इंजीनियर को और एक सेशन जज को तहरीर की। अब मुकद्दमे की सूरत वदल गई। मिर्जा निहायत इज़्ज़त के साथ वरी हुए। शिवविहारी पर उल्टा मुकद्दमा चला। वच्चा सात वरस को गए। हेडक्लर्क फँस ही गए होते मगर जाल वनाना साबित न हो सका। इस इलाके से तब्दील कर दिए गए। मिर्ज़ा वही रहे। चन्द ही रोज वाद साहव की भी तब्दीली हुई। दूसरे साहव जो आए उनसे मिर्ज़ा से खूब मुवाफ़िकत[8] रही और सुपरवाइज़र के ओहदे तक तरक्की हुई।

❀ ❀ ❀

## अहबाब[9]

एक हकीम का कौल है कि इंसान के जेह्न[10] की तरक्की के दो सवव हैं। एक दाखिली[11] और दूसरा खारिजी[12] और फिर इनमे से हर एक की दो किस्मे है। दाखिली में खुद इंसान की जाती इस्तादाद[13] और मौरूसी काबिलियत[14] शामिल हैं और खारिजो

१ लक्षण २ कुछ-कुछ ३ छुटकारा ४ घटना ५ दैवी ६ घटना-क्रम ७ उल्लिखित ८ अनुकूलता ९ साथीसंगी १० बुद्धि, प्रतिभा ११ आन्तरिक १२ बाह्य १३ वैयक्तिक क्षमता १४ पैतृक योग्यता।

में उन असबाबे तबीई[1] का जिक्र शामिल है जो वक्त पैदाइश से नश्वोनमा[2] तक इंसान को घेरे हुए रहते हैं। इसीके साथ और निज़ामे मुआशरत[3] की तासीर[4] शामिल है। यह चार अम्र[5] इंसान की सीरत[6] के जुजो-अजम[7] है। हमे देखना है कि मिर्जा आबिदहुसैन की सीरत पर उनका किस हद तक असर पडा। जाती इस्तादाद[8] से कतानजर[9] करके जब हम और अज्जा की तरफ गौर करते है तो हमे लखनऊ के और रहने वालों मे और इनमे कुछ ज्याद: फर्क नही मालूम होता। हाँ इतना जरूर है कि मिर्ज़ा बाकर-हुसैन इनके वालिद मरहूम ने इनकी तालीम मे हत्तलवुस्अ्[10] गफलत नही की। मौरूसी काबिलियत का यह हाल है कि इनके खानदान मे सिवाए इनके और कोई ऐसा लिखा पढा न था जिसको पढा-लिखा कह सकें। वालिद माजिद[11] इनके फारसी मे कामिल थे। दादाजान सिर्फ़ मामूली पढे-लिखे थे जैसे उस जमाने के शुरफा[12] पढे होते थे। और उनसे पहले जो लोग उनके अज्दाद[13] मे थे वह सब के सब अनपढ़ नाख्वान्द:[14] (उम्मीद है कि मिर्जा साहब हमको माफ करेंगे) अक्खड़ सिपाही थे। उन लोगो मे पढना-लिखना ऐब समझा जाता था और उससे पेश्तर का हाल नागुफ्तबेह[15] है। दश्त कब्चाक[16] के कज्जाको की हालत से कौन वाक़िफ नही है। निजामे मुआशरत[3] की तरफ़ नज़र करने से बिल्कुल मैदान खाली दिखाई देता है। मिर्जा आबिदहुसैन के हममहल्ला हमउम्र लड़को मे से कोई भी इस लायक न था जिसका जिक्र इनके अफसाने के साथ किया जाय। घर के पास कुछ कहारो के घर थे। उनके लड़को मे दुर्गा पढके सरफराज महल की ड्योढ़ी पर कहारो का महरा बन गया। देबी बनिया मुहल्ले मे रहता था। उसका लड़का महकूलाल सआदतगंज मे अढ़तिया होगया। मुसलमान शरीफो मे से एक साहब फ़िदाअली नामी जो बचपन मे चन्द रोज तक इनके साथ लाल-चिरकुओ[17] के शौक मे शरीक रहे। फिदाअली ने पढके कबूतर पाले। यह स्कूल मे पढ़ते थे। इन्होने इंट्रेंस पास किया। उन्होने सौ की टुकड़ी उसी दिन उड़ाके नवाजगंज तक भेजी और कुरबानअली जो इस फन मे उस्ताद थे, उनके पन्द्रह कबूतर मार लिए। यह इंजीनियर हुए। वह तो अब शहंशाह मिर्जा की सरकार मे कबूतरबाज मुकर्रर होगए। जब यह पेन्शन लेके घर आए हैं तो मियाँ फिदाअली ने उस जमाने में नौकरी छोड़ दी थी। आखिर मे उन्होने यह रोज़गार किया था कि कबूतर, बटेर, बत, कार्जें मोल लेके मटियाबुर्ज रवाना करते थे। मुहल्ले मे एक नवाब साहब रहते थे। बहू बेगम साहबा के खान्दान मे इनके साजजादे

---

१ क़ुदरती कारण २ जन्म से जीवन पर्यन्त ३ रहन-सहन की व्यवस्था ४ प्रभाव ५ विषय ६ आचरण ७ रीढ़, आधार ८ वैयक्तिक क्षमता ९ दृष्टि हटाकर १० यथाशक्ति ११ पूज्य पिता १२ भद्रजन १३ पूर्वजों १४ अशिक्षित १५ न कहा जाय वही अच्छा १६ कब्चाक के जंगल १७ रंगबिरंगी नन्ही चिड़ियों के नाम हैं।

सुलतान मिर्जा चन्डू बनाने मे मश्शाक होगए। बालिश्त भर छींटा लटकता हुआ उन्हीं के किवाम मे देखा। छुट्टन नामी एक लडका इनके अजीजो मे था। उसने बटेर की चोच ऐसी बनाई कि शहर भर मे शोहरः होगया। अलीहुसैन एक और इनका हमजोली था। उसको वरजिश[1] से शौक था। बडा होके वेवदल बाँका हुआ। बड़े बड़े शोरेपुश्त उससे डरते थे। सआदतगंज से नखास तक और वहाँ से अमीनाबाद तक उसकी धाक थी। हजरत अब्बास का अलम[2] ऐसा उठाया कि इतना ऊँचा अलम इससे पहले शहर मे न उठा और फिर इस तरह की डोलची बाँधी न डोरियाँ लगाई। उनके फूफी के दो वेटो में एक सोजख्वान[3] था, एक हदीसख्वान[4]।

मिर्जा बाक़रहुसैन के अहबाब में से एक बुजुर्ग मिर्जा हैदरहुसैन नामी उस मुहल्ले में रहते थे। उनको शायरी का खब्त[5] था। 'हस्रत' तखल्लुस[6] फरमाते थे। साहबज़ादे उनके तसद्दुकहुसैन साहब इनके हममक्तब[7] थे। पढे-लिखे तो ब्राजवी थे मगर बकौल शख्स (अलवलदु सिर्रुन्लिअबीहि)[8] तेरह-चौदह बरस के सिन मे शेर मौजूं करते थे। 'वहशत' तखल्लुस था। तरह-तरह की गजल कहके मुशाअ़रे मे पढी। इब्तिदाई गज़ल का एक शेर ऐसा चुस्त था कि इस तरह का यह शेर उनका यादगार रह गया। मुशाअ़रे मे बार-बार पढ़वाया गया और लोग पढते हुए घर तक चले गए।

जुनूने कैस का अन्दाज़ जो था।
उसे जिन्द. किया 'वहशत' हमी ने ॥

इस शेर मे अगरचे कोई बात न थी। मगर एक तो तखल्लुस ने लुत्फ बढा दिया दूसरे कमसिन लड़के की जबान से ऐसा भला मालूम हुआ कि लोग बहुत ही महज़ूज[9] हुए।

हमारे मिर्जा आबिदहुसैन साहब को शेर के मजाक से हिस व मस[10] न था, मगर यह बात न थी कि समझते न हो। इसलिए कि फारसी अपने वालिद से बहुत तहकीक के साथ पढी थी। जब मियाँ वहशत ने दूसरे दिन बड़े फ़ख्र से यह शेर मिर्ज़ा आबिदहुसैन के सामने पढ़ा तो उन्होने अपनी यह राय जाहिर की कि माहसल[11] इस शेर का यह हुआ कि कैस जैसा मजनूँ था वैसा जुनून उस जमाने से आजतक किसी को नहीं हुआ, हमको वैसा ही जुनून हुआ। मेरे नजदीक तो इस शेर मे कोई लुत्फ नही है, न इसमें किसी हकीकत का बयान है न कोई जज्बा इंसानी इसमे ज़ाहिर किया गया है। मजनूँ का तसव्वुर हमारा

---

१ व्यायाम　२ मुहर्रम में अलम (ध्वज) उठाये जाते हैं　३ मुहर्रम में सोज़ (व्यथागान) पढ़ने वाला　४ पैग़म्बर के कथनों का पाठ करने वाला　५ उन्माद　६ उपनाम　७ सहपाठी　८ पुत्र पिता का प्रतिबिम्ब होता है　९ प्रसन्न　१० लगाव और रुचि　११ निष्कर्ष।

यह है कि वह एक शायर था और उसी के मुआसिर[1] लैला नामी एक शायरा। अरब के लोगो को जमाने जिहालत में वेहूदः शायरी मे इन्तिहा का जौक था। अक्सर सुहबते इस किस्म की हुआ करती थी जिसे हमारे जमाने में मुशाअ़रा कहते हैं। मजनूँ और लैला दोनों मुशाअ़रो मे शरीक हुआ करते थे। गोया उनमे एक क़िस्म का मुकाबला रहता था। लैला ऐसी खूबसूरत न थी मगर फिर भी औरत थी। औरतो की जबान में कुदरती लोच होता है। मजनूँ अज् बसके अहले फ़न था[2]। उसको लैला के इशारे वहुत पसन्द आते थे। इश्क की असल बिना यह है। अगर कैस इसी हद तक रहता तो अच्छा रहता। अब उसको यह हवस हुई कि लैला से मुवासलत[3] हो। इसलिए उसने अपने बाप की जबानी शादी का पैगाम दिया। लैला के वाप ने किसी वजह से इन्कार कर दिया। वजह इन्कार की जो बयान की गई है वह यह है कि कैस और लैला की मुहब्बत मशहूर हो गई थी। अगर शादी हो जाती तो लोग कहते कि पहले से नाजायज तअल्लुक था। इसी नंग[4] को लैला के बाप ने गवारा न किया। कैस को अज़हद रंज हुआ। अपने जज्बात को जब्त न कर सका इसलिए मजनूँ होगया। अगर कैस की सीरत में कूवत होती तो वह उस जज्बे को रोकता और उसे रोकना चाहिये था। फिर ऐसे ज़ईफुल्सीरत[5] शख्स की बराबरी करना कौन सी फख्र की बात है।

राक़िमुल्हुरूफ[6] के नज़दीक आबिदहुसैन साहब की यह गिरफ़्त सही नही है। इसलिए मिर्जा आबिदहुसैन ने तारीखी कैस को शेर का मौजू करार दे लिया है। तारीखी कैस और शेरी कैस मे[7] (जिसको फलसफा की जबान में कैस मिसाली कहना चाहिये) बडा फर्क है। मिसालिय: कैस को अहलेफ़न ने आशिक कामिल की जगह रखा है। और इश्क कामिल जरूरी नही है कि औरत ही के साथ हो वल्कि इश्क अरफानी का असल मक्सूद आला है और बेशक माय: फख्र[8] है। इन्सान कामिल वही है जो साहब मारिफत[9] हो। अब रही यह वात कि मिर्जा साहब के कलाम से यह भी एक पहलू एतराज़ का निकलता है कि उसमे खुदसिताई[10] है जैसा कि अक्सर शुअरा का मामूल है। यह एक अम्र लगो है। यह एतराज़ भी दुरुस्त नही। इस वजह से कि शायर जहाँ अिद्दआ[11] अपनी ज़ात का करता है वहाँ उसका मक्सूद[12] अपनी जात नही होती वल्कि अपनी जात का मसालिय: (जिसे अंगरेज़ी में आइडियल[13] कहते हैं) मक्सूद होता है। यानी अगर मैं ऐसा होता जिसको शायर ब-कायदः मजाजें मुर्सल[14] यह फर्ज़ कर लेता है कि मैं ऐसा होगया, तो यह फख्र जेबा है। मसलन यह शेर—

---

१ समकालीन २ काव्य-मर्मज्ञ ३ सहवास ४ बेशर्मी ५ चरित्रहीन ६ इन पंक्तियों का लेखक ७ एतिहासिक और कविचित्रित 'कैस' में ८ गौरव के योग्य ९ सूक्ष्मदर्शी १० आत्मप्रशंसा ११ अनधिकार दावा १२ उद्देश्य १३ नमूना, आदर्श १४ लाक्षणिककल्पना।

लडाती है फलक से मुझको मेरी हिम्मते आली।
तमाशा देख ले जोर आजमाई देखने वाले ॥

इस शेर मे शायर ने अपनी हिम्मते आली पर फ़ख्र किया है। मगर यहाँ भी उसने अपनी मौजूदः हालत को बयान नही किया बल्कि एक खल्को मक्सद[1] का इजहार किया है। माने इस शेर के यह हुए कि मुझे ऐसा होना चाहिये कि अगर मुझ पर आसमानी वलाएँ नाज़िल हो तो मैं वडी मर्दानगी से उसका मुकावला करूँ।

मगर वात यह है कि मिर्जा साहव को इब्तिदाई उम्र से हकीकत में जरूरत तवीई[2] से काम रहा है। आलमे खयाल[3] की तरफ़ मुतवज्जः होने को इनको वहुत ही कम मौका मिला। फिर इसके साथ रियाजियात[4] के शौक ने तबीअत को मुलाहजा हकीकत[5] का और भी आदी कर दिया। फलसफ़ा और शेर इन दोनो से इनको कोई वहस न थी। वह मुजस्सम तजुर्व.[6] थे।

जिन लोगों को महज उलूम तिजारती का शौक होता है अगर उनकी तवीअत को फलसफे और शेर से मुगाइरत[7] हो तो कोई तअज्जुव नहीं है। मगर ऐसे लोग मजहव की तरफ़ से भी वेपरवाह हो जाते है। लेकिन हमारे मिर्जा साहव ऐसे न थे। वह अपने मजहव मे वहुत ही पुख्त: थे। उनका वयान था कि मैं उसूल मजहव में कोई अम्र उलूम तिजारती के खिलाफ नही पाता। इससे ज़ाहिर है कि इनका मजहव भी तजुर्वी[8] था। अज वसके[9] इनकी नश्वोनमा[10] ऐसे मज़हव मे हुई थी जिसका उसूल विल्कुल हुस्न और अक्ल पर है। लिहाजा इनको उस वात मे कोई दिक्कत नही हुई। इनको अपने मजहव के उसूल मे ऐसी किसी वात के मानने की जरूरत न थी जो समझ मे न आती हो और उसे तकलीदन[11] मान लेते हो, जैसा कि वाज मजाहव के उसूल-औलिया[12] महज तकलीद[13] पर हैं। इनका मजहव ऐसा न था।

ऐतकादात के वाव मे इनका यह खयाल था कि जव मुवादी-मजहव[14] दुरुस्त हो तो उमूर तअव्वदी[15] मे कोई कलाम न करना चाहिए।

गजलगोई, चायनोशी, हुक्काकशी, दास्तान या सबसे उम्दः शुगल मुकद्दमेवाजी जो अक्सर अहले शहर[16] का मजाक है, इससे मिर्जा को सरोकार न था। इनके मजाक के दोस्त मसलन सय्यद जाफरहुसैन शहर मे मौजूद न थे। फिर शहर मे इनका दिल क्या लगता। अपने फ़ारम (कश्तजार) को इन्होंने इल्मी उसूल से दुरुस्त किया था। इस

---

१ सांसारिक लक्ष्य २ स्वाभाविक आवश्यकताएँ ३ कल्पना जगत ४ परिश्रमों ५ वास्तविकता पर दृष्टि ६ अनुभवमूर्ति ७ अरुचि ८ अनुभवजन्य ९ अगचें १० परवरिश ११ अंधभक्त होकर १२ पूर्वजों-अगुआकारों से प्राप्त १३ अन्धानुकरण १४ धर्म की मौलिक वातें १५ इवादत १६ नगरनिवासियों।

फ़ारम में रहने को मकान था। जनानः मकान से मिला हुआ एक और मुख्तसर सा मकान था। यह इनकी लेवोरेटरी (तजर्बेगाह यानी वह मकान जिसमें हुकमाए[1] इल्मी तजुर्बः करते हैं) था। इसी में हद्दादी[2] और नज्जारी[3] के आलात, इल्म कमेस्ट्री[4] और तबीआत[5] का सामान और मुख्तलिफ कलों के नमूने रहते थे। फारम के करीब इल्म नबातात[6] के नमूने जमा करने के लिए एक किता कई बीघा का अलाहिदः कर दिया था। इसी के करीब समर हाउस था जिसमें हजारहा किस्म के फ़रन और बाज और मुख्तलिफ अक्साम के खुशनुमा दरख्त जमे थे। इसी समर हाउस मे एक बैजवी[7] हौज बना हुआ था। उसके दरमियान में और समर हाउस के चारो तरफ़ पहाडो के नमूने बनाए गए थे। लेवोरेटरी के पास आब्जरवेटरी (रसदखान.) बना था और उसी से मिले हुए एक छप्पर के नीचे मौसम के मुलाहज़ः करने के आलात[8] नस्व[9] थे। माडल हाउस यानी वह कमरा जिसमें तरह तरह के नमूने कलों के जमा किए गए थे उसी के करीब था। वहाँ से किसी कद्र फासले पर अस्तबल और मवेशीखानः था और उससे कुछ फासले पर शागिर्द-पेशः[10] के मकान थे। यहाँ फारम अगर्चे फलाहत[11] के तजुर्बो के लिए मखसूस न था मगर मिर्जा आबिदहुसैन जिस कश्तज़ार के काश्तकार हो उसको ऐसा ही समझना चाहिये।

खेती का कुल काम मिर्ज़ा आबिदहुसैन खुद अपने हाथ से करते थे—जोताई, सरावन, सिंचाई, निकाई। गर्ज कि कोई काम सख्त से सख्त और मुश्किल से मुश्किल ऐसा न था जिसमे मिर्ज़ा नौकरों और मजदूरो से ज्यादः काम न करते हो। नौकर भी मिर्ज़ा ने ऐसे रखे थे जो काहिली, हुक्मउदूली, वेहूदा हुज्जत, बडबडाना जानते ही न थे।

ज़राअत[12] के काम के लिए जो लोग नौकर थे बल्कि कुल मुलाजिमों को ख्वाह मर्द हों या औरतें, एक तरह मिर्ज़ा ने उनको अपना दायमी[13] शरीक बना लिया था। पैदावार की ज्यादती और कमी के तनासुब[14] से अनाज हिस्सारसदी तक्सीम होता था इसलिए हर शख्स जी तोड के काम करता था। मिहनत और बरकत में कुछ ऐसा लुजूम[15] था कि अगर इनको मुतरादिफ़[16] लफ़्ज़ कहे तो वेजा नहीं है। औकात फुर्सत मे मिर्ज़ा अपनी लेबोरेटरी में रहते थे। हर तजुर्बः और मुशाहदा[17] कलमबन्द किया जाता था। रसदखाने मे जो मुशाहदात होते थे वह अलाहिदः किताब मे तहरीर[18] होते थे। उमूर खान.दारी[19] से मिर्ज़ा की कोई तअल्लुक नहीं था और न मिर्ज़ा इसे पसन्द करते थे।

---

१ वैज्ञानिक २ लोहारी ३ बढ़ईगीरी ४ रसायन ५ गुणद्रव्य ६ वनस्पति विज्ञान ७ अण्डाकार ८ यंत्र ९ स्थापित १० नौकरचाकर ११ खेती १२ खेती १३ हमेशा के लिए १४ अनुपात १५ अटूट सम्बन्ध १६ पर्यायवाची १७ प्रयोग १८ लिपिबद्ध १९ गृह-प्रबन्ध।

जैसा कि इससे कब्ल हम कह चुके हैं इसको वह बीवी का फर्जी काम[1] समझते थे। घर का हिसाव व किताव सब वह लिखती थी। वेटे-बहू का कारखाना मिर्ज़ा ने खुद अलाहिद: कर दिया था।

तमाम मुलाज़मत के जमाने मे मिर्जा पर भी एक सख्त मुसीवत पडी थी। मिर्जा हमेशा नेकनाम रहे। पहले पहल सवओवरसियर हुए थे। तीसरे दर्जे के सवओवर-सियर की तनख्वाह मामूली पचीस रुपये और सात रुपया महीना भत्ता होता है। भत्ता के रुपये से ज्याद: घोडे पर सर्फ़ होता है। वल्कि कुछ तनख्वाह से खिलाना पड़ता है। यह तनख्वाह वमुश्किल एक मुतवस्सित दर्जे[2] के शरीफ आदमी और उसके अहलो-इयाल[3] के लिए किफ़ायत कर सकती है[4]। मगर मिर्जा ऐसे मुहतात[5] आदमी थे कि उन्होने और उनकी वीवी ने हमेशा उसूल किफायतशारी की सख्त पावन्दी की। इस वजह से कभी कोई दिक्कत खर्च की तरफ से नही हुई।

मिर्जा ने तीसरे दर्जे की सबओवरसियरी से लेकर असिस्टेंट इंजीनियर के दर्जे तक की तरक्की की। इनका ज़ाती खयाल यह था कि वाकिआत पर नज़र करके इससे ज्याद: तरक्की मुमकिन न थी। यह तरक्की मिर्जा की लियाकत देखते हुए कुछ भी न थी। मिर्जा से कम-लियाकत लोगो की तरक्की इससे कही ज्याद. हुई। अफसोस है कि तरक्की के वाव में वसा औकात एहतियात और लियाकत कारगुजारी मुफीद नही होती। उसका कोई माकूल मेयार[6] मौजूद नही है। तरक्की और तनज्जुली अफ़सर आला की खुशी पर मौकूफ है। मुहकमाजात सरकारी मे अफसरो और मातहतो की तब्दीलियाँ वहुत जल्द हुआ करती है। इन तब्दीलियो के फवाएद[7] से हम इस वक्त वहस नही करते। लेकिन एक जरर[8] खास इससे मुतसव्वर[9] है—वह यह कि अफ़सर और मातहत मे किसी किस्म की हमदर्दी पैदा होने नही पाती। एक औसत दरजे के कद्रशिनास[10] अफसर को इसका मौका वमुश्किल मिल सकता है कि अपने मातहतों की दियानत[11], लियाकत और कारगुजारी का अन्दाज कर सके। इससे अक्सर हकतल्फी[12] होती है। वहुत से मुरतहक महरूम रहते है और वहुत से गैरमुस्तहक फ़ायदा उठा लेते हैं। एक तो अक्सर हालात मे अफसर और मातहत मुख्तलिफ कौम और मुल्क के लोग होते है। मसलन अफसर इंगलिश हैं और मातहत हिन्दुस्तानी मुसलमान। साहव वहादुर शहर के वाहर वंगले मे फर्दक्श हैं[13]। मातहत वस्तशहर[14] की किसी तारीक[15] गली मे रहते हैं। अफसर और मातहत से सिर्फ दफ़्तर मे सामना होता है। एक दूसरे की सीरत और अख्लाक

---

१ कर्तव्य　२ मध्यम वर्ग　३ परिवार　४ पर्याप्त होना　५ सावधान　६ मापदण्ड　७ लाभों　८ हानि　९ ध्यान देने योग्य　१० गुणपारखी　११ ईमानदारी　१२ अधिकार-हनन　१३ अकेले डटे हैं　१४ शहरबीच　१५ अँधेरी।

से दोनों ना-बलद[१] महज मामूली रोजाना कारोवार से मातहत को अपनी लियाकत के इजहार का वहुत ही कम मौका मिल सकता है। मसलन इसी मुहकमे तामीरात मे एक पुल या कोठी का तखमीना एक मामूली दरजे का इस्टीमेटर भी तकरीबन उतने ही वक्त मे कर सकता है जितनी देर में एक आला दर्जे का लायक इंजीनियर। यह एक मामूली काम है। इस किस्म के काम दफ्तर मे लिये जाते हैं। इससे अफसर को क्योकर यह मालूम हो सकता है कि मिर्जा आविदहुसैन की इस्तेदाद[२] और जेहानत[३] इससे ज्यादा काविल कद्र है जिसका अन्दाजः उनके बुशरह-कियाफे[४] और मामूली अन्दाज कारगुज़ारी से किसी इंगलिशमैन ने किया है। अदाए हुकूक के लिए माकूल पैमाना मुअय्यन[५] होना चाहिए। न यह कि ऐसा अम्र अहम महज वख्त-इत्तफाक[६] के हवाले कर दिया जाए।

यह एक किस्म की कुर्अ.अन्दाजी[७] है। मुमकिन है कि काविल कद्र सिफात पर उन साहवो की निगाहे न पडें जिनकी कद्रशिनासी पर किसी के हुकूक का फैसला मुनहसिर[८] है। यह सच है कि अफसरान मुहकमेजात हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस की सी लियाकत के नही हो सकते। लेकिन जिसकी हकतलफी हुई उसको ऐसे ही चीफ जस्टिस की ज़रूरत थी। अफसोस कि यह एक शख्स की अदमे लियाकत से दूसरे का नुक्सान हो; मगर ऐसा होता है। हम इस बात का फैसला नही कर सकते कि इसका तदारुक[९] क्यों कर हो सकता है। मगर शायद इसमे किसी को कलाम न होगा कि होना चाहिये। शोअरा अक्सर नामुसाअदत-जमाने[१०] की शिकायत करते रहते है, मगर यह मजमून महज शायराना नही है। दुनिया ने नेको को वहुत नुकसान पहुँचाया और उससे दुनिया का बहुत नुकसान हुआ। यह मशहूर मकूल. 'हर कसे रा बहरे कारे साख्तन्द'[११] बहुत ही सच है। यानी हर शख्स एक तबीअत और मिजाज खास और इस्तेदाद[२] खास लेके पैदा होता है। अगर किसी वजह से वह उस काम मे न लगाया जाय जिसके लिए वह पैदा होता है तो उससे जियाअ कूवत[१२] मुतसव्वर है। इससे अलावा शख्सी नुक्सान के, नौअी[१३] नुकसान वहुत होता है। अगर जार्ज इस्टीफेन्सन तमाम उम्र कोल मे काम करने पर मजवूर होता तो शायद रेलवे इंजन अभी प्लेटफार्म तक हरगिज न आ सकता।

हाँ जिसे जो कुछ करना होता है वह कर ही लेता है। यह मकूल.[१४] एक हद तक सही है। च्यूँटी हिमालय पहाड काट कर नही फेंक सकती। एक तनफ्फुस[१५] निजामे मुआशरत[१६] की बहुत बडी कूवत का मुकाबिला नही कर सकता। अगर निजामे मुआशरत

---

१ अनभिज्ञ २ योग्यता ३ बुद्धि-प्रखरता ४ सूरत-शक्ल ५ निश्चित ६ दैवसंयोग ७ लाटरी (चिट्ठी) डालना ८ निर्भर ९ निवारण १० उलटा ज़माना ११ हर व्यक्ति एक विशेष काम के लिए बना है १२ शक्ति का अपव्यय १३ मानव जाति का १४ कथन १५ श्वास का रोगी १६ सामूहिक व्यवस्था।

हर हर फर्द के लिए अलाहिद: इन्तज़ाम नही करता तो ज़रूर है कि कोई कानून ऐसा निकाल दिया जाय जिससे जियाअ कूवत[१] न हो जिसका जिक्र किया गया है।

अगर मिर्जा आविदहुसैन की सीरत से उनके अफसर वाला आगाह होते तो शायद आला तरीन ओहदा मुहकमे तामीरात तक इनकी तरक्की मुमकिन थी और यह न सिर्फ़ इनकी जात के लिए बल्कि मुल्क व कौम के लिए मुफीद होता।

अफसरो और मातहतों की अज्नवियत से मुल्क का वहुत वड़ा नुकसान होता है। नाकद्रशनासी[२] की वजह से अक्सर मुतदय्यिन[३] और कारगुजार मातहतो के दिल टूट जाते हैं। वह लोग जिनमे शराफ़त व आजादी का जौहर है वह कोल्हू के वैल की तरह डण्डे के जोर पर काम करना नही पसन्द करते। मिर्जा आविदहुसैन साहव की तवीअत के लोग भी मुल्क में वहुत हैं। किसी न किसी तरह उनकी कद्रशनासी करना निज़ाम-तमद्दुन[४] पर वाजिव है।

छोटा मुकद्दम: जो मिर्जा साहव पर दायर किया गया जिसमे एक मातद्विह[५] रकम उस रुपये की जिसे उन्होने कमाल मेहनत और जाँफ़िशानी और किफायतशारी से वरसों काम करके पस अन्दाज किया था, वैरिस्टरो के नजर न हो जाती, अगर उनके अफसर आला उनके चाल चलन से कमाहक्कहू[६] वाकिफ होते।

❀ ❀ ❀

जो लोग मिर्ज़ा को जानते थे वह एक लमहा के लिए भी मिर्जा की निस्वत सूएजन[७] न करते। अगर इनका अफसर वेपरवाई न करता तो उस जाली मुक़द्दमें की अदालत पहुँचने की नौवत ही न आती।

मिर्जा का कौल था कि मुझे अपनी जिन्दगी में अफसरों के इस्तिक़राए नाकिस[८], और सूएज़न[७] से वहुत नुकसान पहुँचा। मजहव और इल्म फ़ीमिशन का पहला उसूल यह है कि हर शख्स को वेगुनाह समझो। इसी सवव से जो शख्स किसी जुर्म के इर्तिकाव[९] का इल्जाम लगाए उसको सुवूत कामिल पहुँचाना वाजिव है और इस पर भी शुव्ह:[१०] का फ़ायदा मुलजिम को दिया जाता है। मगर मेरे साथ ज़माने ने इसके वर अक्स[११] सुलूक किया। इसलिए कि अक्सर ऐसे ही लोगों से काम पडा जो हर शख्स को गुनहगार समझते थे और वार सुवूत भी मेरे ही जिम्मे था। मुझही को अपनी वेगुनाही सावित करना होती थी। और मुशव्व.[१२] भी व़खिलाफ असल उसूल मेरे ही हक मे मुज़िर था।

---

१ शक्ति का अपव्यय २ गुणपारखी न होना ३ ईमानदार ४ अधिकारियों ५ अच्छी ख़ासी ६ सही सही, यथोचित ७ बुरी धारणा ८ बुरी राय ९ पाप १० संदेह ११ विपरीत १२ जिससे उपमा दी जाय, नज़ीर।

अगर्चे इस बाब में मेरे ही मुल्क के निजाम मुआशरत का कुसूर है। इसलिए कि मुल्की इख्लाक का मेयार बहुत घटा हुआ है। गैर मुल्को के रहने वाले अक्सर हिन्दोस्तानियो को वेईमान, काहिल और वेवकूफ समझते हैं। इस कायदे कुल्लीयः[1] के इस्तिस्ना[2] पर बहुत ही कम नज़र जाती है।

मिर्जा कहने थे कि दुनिया ईमानदार लोगो से खाली नही है। फ़रमाते थे कि जिस ज़माने मे मैं जिला सहारनपुर में ओवरसियर था मेरी अर्दली मे चपरासी था—सय्यद मुसलमान। उसकी सी एहतियात मैंने उस किस्म की तनख्वाह वाले मुलाजिमों मे बहुत कम देखी है। चपरासियो का क़ायदा है जब दौरे पर अफ़सरो के साथ जाते है, आटा, दाल, घी, लकडी, गुड़, तेल, मिट्टी के बरतन गरज़ कि जुमलः जरूरियात जहाँ तक मुमकिन होता है गरीब नावाकिफ दहकानो[3] से तरह तरह के फरेब और धमकियाँ दे के वतौर नाजाएज हासिल करते है। बसा औकात उनके अफसर यानी छोटे दरजे के ओहदेदार भी इस मज्लिमे[4] में उनके शरीक रहते हैं। खुदा रहमत करे मोहसिनअली पर, लकड़ियाँ तक मोल ले के जलाता था। उसकी सिवाय पाँच रुपये माहवारी तनख्वाह के और किसी क़िस्म के फायदे उठाने से गरज़ न थी। मिस्ल और ओकलाए हाल[5] के, मिर्ज़ा का भी यही खयाल था कि इस जमाने का इखलाक वनिस्बत जमानए साबिक के बहुत ही तनज्जुल पर है। इनका यह खयाल था कि मुहकमो और दफ्तरो में शाजोनादर खुदा के वन्दे ऐसे हैं जो हराम व हलाल मे फर्क करते हैं। अक्ल हलाल[6] और सिद्क मकाल[7] जो सबसे ज्याद. उम्दः सिफात इंसानी है उनका जिक्र कही नही।

नौकरी से पेन्शन ले के जब वतन मे आए तो मिर्जा साहब ने चन्द मौजे मुजाफ़ात[8] लखनऊ में खरीद किए। और एक किता नजूली लखनऊ मे ली। नुजूली ज़मीन पर सौम व सलात और जमीअ आमाले खैर वातिल है[9]। इसलिए अब यह फ़िक्र हुई कि असल मालिक मकान से उसको बहाल करा ले। बड़ी मुश्किल से वुरसाए अस्ल मालिक जमीन से सिर्फ एक लडकी नाबालिगः मिली। वली या वलीयः[10] जाएज इस लड़की का कोई मौजूद न था। सख्त तरद्दुद हुआ।

उस लडकी के एक दूर के अज़ीज थे। उन्ही के कब्जे में यह लड़की थी। मिर्जा साहब को एक नई बात सूझी कि अहमदअली का अक्दा[11] उसके साथ कर दिया जाय। उस सूरत मे वह जमीन असल मालिक ज़मीन के पास रहेगी और उसकी इजाज़त से आमाल खैर उस पर सही हो जायँगे।

---

१ व्यापक नियम २ अपवाद ३ देहातियों ४ अनीति, शोषण ५ आजकल के बुद्धिमानों की तरह ६ मिहनत की कमाई (भोजन) ७ बचन का सच्चा ८ आस पास का, सुबर्ब ९ नुजूली ज़मीन पर रोज़ा, नमाज़ नेक काम सब व्यर्थ हैं १० संरक्षक या संरक्षिका ११ सगाई।

जो साहब उस लडकी के सरपरस्त थे वह निहायत ही गरीब आदमी थे और उस लडकी की भी कोई जायदाद मौजूद न थी मगर मिर्जा साहब अपने इरादे मे मुस्तकिल थे। मिर्जा साहब के अक्सर अजीजों की लडकियाँ मौजूद थी और मिर्जा साहब की वजाहत[1] जाती अब इस किस्म की थी कि अगर किसी अमीर खान्दान में लडके का पैगाम देते तो वह बखूबी मंजूर कर लेता। इस बात मे मियाँ-बीवी की राय मे भी किसी कद्र इख्तिलाफ हुआ था मगर वह तो अजब तरह की नेक बीवी थी। जब मिर्जा ने असली मंशा उन पर जाहिर किया तो समझ गई। चुप हो रही।

वाकई उन मियाँ-बीवी मे वैसा ही मेल था जो खास मंशाए तजवीज है। जिस मक्सद के पूरा करने के लिए उस साने आलम[2] ने औरत को खल्क किया है, न यह कि जब घूँघट खुला बल्कि उससे भी पहले मियाँ से मोर्चा बाँध लिया। सास से सैद[3] होगई। नन्दो से तू-तू मै-मैं, जूती पैजार होने लगी। कभी मुँह फूला है, कभी नाक चढी है, कही कोस रही हैं और जो गालियो पर जबान खुली तो हफ्ताद पुश्त[4] मे किसी को न छोडा। मियाँ-बीवी के बाहमी मुआमले में एक खास बात ऐतिबार है। चाहिये कि मियाँ को बीवी पर और बीवी को मियाँ पर ऐतिबार हो। घर का कारखाना चल ही नही सकता जब तक कि साख न हो। न यह कि इधर मियाँ ने कोई बात की और उधर बीवी ने कहा—"चल झूटे" या अगर बड़ी तहजीब की—"अच्छा यूँ ही होगा फिर किसी को क्या।" और बाहमी ऐतिबार मियाँ-बीवी दोनो के लिए होता है। रास्त-बाजी[5] असल उसूल है। रास्ती मूजिब रजाए खुदा अस्त[6]।

खुदा उन्ही अफआल से राजी होता है जिनमे हमारा, तुम्हारा, दुनिया का फायदा है। वर्ना खुदा हमारे तुम्हारे बल्कि तमाम आलम के अफआल सय्य: व हसन: से बेनियाज[7] है। असल ईमान इसी का मंशा है कि असली मुआशरत[8] के उसूल ठीक मुनासिब हो। सब इस तरह मिल जुल कर रहे कि हर शखस को हर शखस से फायदा पहुँचे। बाबे मदीनतुल् इल्म हजरत अमीरुल् मुअ्मिनीन अली कर्रमल्लाहु वज्हहू[9] से किसी ने पूछा "मलूकुफ्रो या अमीरुलमुअ्मिनीन" ऐ अमीरुलमुअ्मिनीन कुफ़्र क्या है। हजरत ने इरशाद फ़र्माया "शिर्क बिल्लाहि वल् इज्रारि बिन्नास" यानी खुदा की जात मे किसी को शरीक करना और आदमियो को जरर पहुँचाना। वाकई क्या जामे व माने तारीफ कुफ्र की इरशाद फर्माई है। हर शखस जिसको कुछ भी खुदा का खौफ़ हो 'इजरारि बिन्नास' (यानी इंसानो को दुख पहुँचाने) से बचता रहे कि असल कुफ्र है। 'जुह्द रियाई खुश्क मुल्लाई[10]।'

---

१ प्रतिष्ठा २ विश्व-स्रष्टा ३ दाँव-घात (आखेट) ४ सत्तर पुश्त ५ सच्चाई ६ सच्चाई ईश्वर की प्रीति का साधन है ७ बुरे-भले से निरपेक्ष ८ नागरिकता ९ स्वयं पैगम्बर साहब इल्म का शहर थे और हजरत अली उस शहर के फाटक थे। १० दिखावटी संयम कोरा पाखण्ड है।

गरज कि हर तरह की खुदनुमाई और खुदआराई और बातिन मे महज हेच बल्कि रात दिन मे लोगो का माल गस्ब[१] करने और खल्क अल्लाह को जरर पहुँचाने की फिक्र मे रहना—ऐसे लोगो का ईमानदार होना वही बात है जैसे—बर अक्स नहन्द नाम जगी काफ़ूर[२]। कम अज कम मियाँ को बीवी से और बीवी को मियाँ से ऐसी मुआमलत रखना चाहिए कि दोनो मिलकर एक जाते वाहिद[३] के हुक्म मे हो जाँय। और इसके साथ ही दोनो को अपने अपने फ़राएज भी समझ लेना चाहिये। यह याद रहे कि हकीम मुतलक का कोई फेल (मुआजल्लाह) अबस[४] नही है। इंसान आला दर्जे के मसनूआते इलाही[५] मे से है बल्कि मजहब और हिकमत से ज्याद: का दावा करते है और इंसान को अशरफुल् मखलूकात ठहराते हैं फिर उसका खल्क बवजे औला अबस और लगो नही हो सकता। इसके बाद हमे अपने अफ़आल पर गौर करना चाहिये कि आया इनसे ऐसा मालूम होता है कि जिस मक्सूद के लिए हम पैदा किये गये हैं, वही काम हम करते है या नही। अगर ऐसा नही है तो हैफ[६] है। अब यह क्योकर मालूम हो कि हम किस काम के लिए पैदा किए गए है। जिन लोगो को अक्ल सलीम है वह अपने इस्तेदादात और कवी[७] से खुद ही इस मसले को हल कर सकते हैं। इस तरह से कि जब आँख खोल कर आलम को देखते हैं और अश्या[८] के बाहमी तअल्लुकात पर नजर करते है और चीजो का तअल्लुक अपनी जात के साथ और अपनी जात का तअल्लुक दूसरी चीजो के साथ देखते हैं। अब उन चीजो मे जविल्उकूल[९] और गैर जविल्उकूल दोनो शामिल हैं। हमारे तअल्लुकात दोनो से है और जिससे अजरूए जिन्सीयत[१०] और नोईयत[११] के तकारुब[१२] बढता जाता है उसकी निस्बत से तअल्लुकात भी ज्याद होते जाते हैं।

मियाँ-बीवी का तअल्लुक बिलकुल अनोखा है। उसको महदूद करना सख्त मुश्किल है मगर बाज हैसियतो से तमाम तअल्लुकात पर उसको तफ़र्रुक[१३] है। हमने अक्सर देखा है कि अक्सर सूरतो मे यह दोनो अपने फ़राएज को नही समझते। इससे तरह-तरह की खराबियाँ वाकै होती हैं।

मुताखरीन[१४] मे से एक हकीम का यह खयाल है कि मियाँ-बीवी दोनों को खुदमुख्तार होना चाहिये। हर वाहिद के मुआमलात और माल अलाहिदा अलाहिदा हो, मसलन मियाँ अगर किसी कारखाने मे काम करते हैं तो बीवी एक दफ्तर मे मुलाजिम। मसलन मियाँ पचास रुपया माहवार पैदा करते हैं तो बीवी सौ रुपये। दोनो अपना-अपना खाते हैं, अपना अपना पहनते हैं। एक दूसरे के मुआमलात से कोई तअल्लुक नही, न यह आपके

---

१ बलात् अपहरण २ आँख के अन्धे नाम नयनसुख ३ अकेला परमेश्वर ४ बेकार ५ ईश्वरीय रचनाओं ६ खेद ७ योग्यता और शक्ति ८ चीज़ों ९ अक़्लवाले १० यौन, शारीरिक आत्मीयता ११ लाक्षणिक समानता १२ सामीप्य १३ वैषम्य १४ पश्चात्कालीन।

मुहताज है न वह आपकी, मगर दोनो मे मुहब्बत है। इस वजह से दोनों एक साथ या अक्सर औकात राहत या तातील[१] के वक्त एक साथ रहते है। सिर्फ इसी कद्र तअल्लुक है और कुछ नही। हाँ इतना ज़रूर है कि इन्दल्हाजत[२] एक दूसरे की मदद करने को मौजूद है। मगर हर वाहिद उनमे से इसकी सओ[३] करता है कि अपना वार किसी किस्म का क्यो न हो दूसरे पर न डालें।

हरएक की उसमे से यह कोशिश है कि जहाँ तक मुमकिन हो ख्वाह अपनी जात पर तकलीफ ही क्यो न हो दूसरे से मदद न लें वअैनिही उसी तरह जैसे अहबाब मे एक दूसरे से मदद लेना आर समझा जाता है। खुसूसन मुआमलात जर[४] मे।

उस हकीम ने जो सूरत तज़वीज[५] की करार दी है बेशक काबिल ग़ौर है। इस अम्र पर दो हैसियतो से गौर करना चाहिये। एक तो यह कि ऐसा मुमकिन है कि नही, दूसरे यह कि बिलफर्ज-इमकान उस सूरत मे फ़ायदे क्या हैं और नुकसान क्या हैं।

कतानजर[६] नुकसान और फ़ायदो के, उसमे एक अम्र की कमी है। वह यह कि इस्तक्रार और तअैयुने मंजिल किसी तरह मुमकिन नही। "यानी घर नही बन सकता।" घर का मफ़हूम एक ऐसी चीज है जिसको अल्फाज में बयान करना मुमकिन नही। हर शख्स को जिसको खुदा ने दुनिया मे घर दिया है वह उसको समझ सकता है। यह बऐनिही ऐसी बात है जैसे कोई सुर्ख या सब्ज किसी रंग की तारीफ़ करना चाहे। यह ऐसी चीजें है जिनका इद्राक[७] सिर्फ मुशाहदे[८] पर मौकूफ है।

उस हकीम ने जो सूरत तज्वीज की है उसमे मर्द-औरत दोनो अपना-अपना काम करते हैं। फर्ज किया जाय कि मियाँ मसलन घडीसाजी की दूकान करते हैं। मियाँ आठ बजे शब को दूकान बन्द करके घर पर आते है और बीवी साढे पाँच बजे दफ्तर से तशरीफ लाती हैं। उमूर खानादारी सब मुलाज़मीन के महौल है (बशर्ते कि मुलाजिम रखने का मक्दूर भी हो)। मुलाजमीन ने खाना पका रखा। बिछौने बिछा दिये। दोनो मियाँ बीवी रात को सो रहे। सुबह को खाना-दाना खाके दोनो साहब फिर अपने-अपने काम पर गये।

यह जिन्दगी चन्द रोज़ तक बहुत अच्छी तरह गुजर सकती है लेकिन फ़र्ज किया जाय मियाँ या बीवी दोनो मे से कोई बीमार होगया उस सूरत मे जरूर है कि एक दूसरे की मदद करें। अगर बीवी बीमार हो तो मियाँ को रुखसत लेना होगी और मियाँ बीमार हों तो बीवी को। और अगर यह न हो तो मुल्क की तरफ से कोई ऐसा इन्तजाम हो कि बीमारो की तीमारदारी किसी खास हस्पताल मे की जाय। मसलन अगर मियाँ

---

१ अवकाश २ ज़रूरत पर ३ कोशिश ४ रुपये-पैसे ५ वैवाहिक जीवन ६ अलावा ७ अनुभूति ८ आखों देखने।

बीमार हों तो चाहने वाली बीवी सिर्फ़ अपने दिल ही मे खाली मियाँ की हालत पर अफसोस करती रहे। मियाँ की तीमारदारी उन लोगो के हवाले है जो हस्पताल से कलील तनख्वाह पाते है। एक तो मियाँ बीमार हुए। दूसरे प्यारी बीवी से छूटे। खुदा ही उनकी जान का हाफिज है।

अगर यह मर्ज मर्जुलमौत[1] हो और मियाँ ने इन्तकाल किया। अब बीवी इस फिकर मे हैं कि मियाँ की यादगार क़ाइम की जाय। चन्दे की फेहरिस्त बनाकर और बाजू पर स्याह कपड़ा बाँधकर अहबाब से चन्दा तहसीलती फिरती हैं। यह उन लोगो की किस्मत का जिक्र है जो कि नामी और नामवर हैं वर्ना ··· ······मर गये मरदूद जिनका फातिहः न दुरूद। बीवी ने तजवीज[2] का मुआहिदः किसी और से कर लिया।

यह तो उस सूरत मे था कि जब दो से तीसरा न हो। जैसा कि हकीम मौसूफ की राय है कि सिलहिला तवालुद[3] को कता या महदूद[4] करना चाहिए यानी औलाद न हो या एक दो से ज्यादः न हो। उस सूरत मे यह फायदा शायद मुस्तहसन[5] हो लेकिन हकीम मौसूफ की राय के बरखिलाफ अगर किसी बेवकूफ मर्द या औरत को औलाद की हवस हुई तो सख्त मुश्किल पडेगी। इसलिए बीवी को वक्तन फवक्तन सिक लीव (रुख्सत बीमारी) लेना पड़ेगी और अगर इस बीमारी ने तरक्की की तो नौकरी तशरीफ ले जायगी और उस सूरत मे एक अम्र अहम यह है कि मुआमल· मुआशरत[6] मे जब मर्द और औरत दोनो का जोर और दोनो के हक मुसावी[7] है तो औलाद की परवरिश और तर्बियत और तालीम का बार किस के जिम्मे डाला जाए। उस हालत मे या तो (इस्टेट) सल्तनत की तरफ से लडको की परवरिश का बन्दोबस्त होगा और अगर बर्सबीले तहुम्म[8] वाल्दैन ने खुद अपने जिम्मे ले लिया, दोनो खुदा के फज्ल से बरसरकार है, सिवाए इसके कि ठेके पर दे दी जाय और क्या हो सकता है। हर एक औलाद को वही लुत्फ आयेगा जो हजरत आदम को आया होगा। बाप की शफकत और आगोशे-मादर का लुत्फ दोनो से महरूम रहेगा।

खुलासा यह कि रफ्त· रफ्त· तमाम इंसान यह समझने लगेगे कि गोया वह बजरिये कलो के पैदा किए गए हैं। और उसूल मीकानी[9] की बिना पर उनकी परवरिश हुई है। उस हालत मे हुकूके वाल्दैन का हिस्व मस[10] किसी औलाद को बाकी न रहेगा और रफ़्त· रफ्तः वह हालत पैदा होगी कि साहबजादे बलन्द इकबाल हाईकोर्ट के जज हैं और वालिद माजिद खैरातखाने के टुकडे तोड रहे है।

---

१ प्राणघातक २ निकाह, बिवाह ३ बच्चे पैदा करना ४ बन्द या सीमित ५ उत्तम ६ सामाजिक जीवन में ७ समान ८ मामता के कारन ९ मेकैनिकल १० स्नेह और अनुरागवश।

मिर्जा साहब का मफ्हूम मियाँ-बीबी का यह था कि दोनों वजूद और बक़ाए मंजिल[1] के लिए लाजिम व मल्जूम[2] हैं और दोनो के जुदा-जुदा फ़रायज है।

मर्द का फर्ज है कि मजिल[3] के लिए जरूरियात का मुहय्या करना। औरत का फर्ज है मंजिल की अन्दरूनी हालत को दुरुस्त रखना। यह दोनो के फर्ज इन दोनों लफ्जो से बहुत अच्छी तरह ताबीर[4] किए जा सकते हैं। मर्द का फर्ज······ कमाई। औरत का फर्ज ·· गृहस्ती। उन दोनो मे जिसने अपना फर्ज अदा नही किया वह खुदा का भी गुनहगार है और निजाम मुआशरत का भी और इस गुनाह की दुनियाँ में यह सजा होना चाहिये कि ऐसे मर्द या औरत के हुकूक मंजिली[5] जब्त कर लिये जायँ। निखट्टू मियाँ शौहरियत की लियाकत नही रखता। और फूहड औरत इस काबिल नही कि वह किसी शरीफ़ की बीबी हो सके।

सकीना (उस लडकी का नाम था जिसके साथ मिर्जा साहब ने अहमदअली का अकद तजवीज किया था[6]) का सिन दस-ग्यारह बरस का था। भोली-भाली सूरत थी, माँ-बाप दोनो ही बचपने के जमाने मे मर चुके थे। माँ के मरने के बाद उसको खाला ने अपनी हिमायत मे ले लिया था। वह भी कजाए इलाही से फ़ौत हो गई। यह उस वक्त का जिक्र है जब सकीना का सिन सात बरस का था। अब यह लडकी खालू के पास रही। उन्होने ने भी जौज. के मरने के बाद अकद सानी[7] किया। इससे नाजरीन बखूबी समझ सकते हैं कि जिस घर मे सकीना रहती थी उसके घर के मालिको मे किसी को सकीना के साथ कोई तब्ई[8] तअ़लुक न था। इस यतीम लडकी की परवरिश एक तरसखुदा का काम था। सकीना के खालू बेचारे बहुत ही गरीब थे। मरसियाखवानी करते थे। साल भर के बाद सौ रुपये उनको एक देसी रियासत से मिलते। इस पर चार औलादें जौज: अव्वला से, एक लड़की जौज. सानिय.[9] से। सकीना का नसीब अच्छा था कि मिर्जा साहब के दिल मे उसकी मुहब्बत पैदा होगई। मगर उसमे एक मुश्किल यह थी कि अहमदअली का सिन पन्द्रह बरस का था। वह भी मिडिल क्लास मे पढता था। मिर्जा की यह राए थी कि इट्रेंस पास करने के बाद शादी कर देना चाहिये। मिर्जा बचपने की शादी के खिलाफ थे मगर जवान होते ही लड़के-लडकी की शादी कर देने को फर्ज समझते थे।

मिर्जा ने सकीना के खालू से मिल कर उसको अपनी सरपरस्ती मे ले लिया और फरजन्दो की तरह परवरिश करने लगे। सकीना दबी दबाई लडकी थी।

---

१ मौजूदः व शेष जीवन के लिए  २ परस्पर कर्तव्यबद्ध  ३ घर  ४ अनुमान  ५ घर-जायदाद में अधिकार  ६ सगाई तय की थी  ७ दूसरी शादी  ८ दिली  ९ दूसरी बीबी।

चन्द ही रोज़ में मिर्जा साहब की बीवी ने उसे अपने ढंग पर लगा लिया। तीन बरस के बाद अहमदअली के साथ अक्द कर दिया गया।

जिस तरह मिर्ज़ा ने बहू को तालीम दी। बअीनही यही ख़याल दामाद की निस्बत था। मगर इस मतलब के लिए उन्होंने किसी लडके को परवरिश नही किया। उसमे यह लिम थी कि अगर ऐसा किया जायगा तो साहबजादे सुसराल के टुकडे तोडने के आदी हो जायँगे। उनसे फिर कोई काम न होगा। लडकी ऐसे लडके से न दबेगी। उम्र भर बे-लुत्फी रहेगी। मगर अब लडकी भी ब्याहने के लायक होगई है। आखिर उनके दोस्तो मे से कोई एक साहब वाहिदहुसैन नामी थे, उन्होंने शादी का पैगाम दिया। लडके के चाल-चलन से मिर्ज़ा बख़ूबी वाकिफ थे। इसलिए कि अगर्चे पहले से उसका शान व गुमान भी न था कि इस लडके के साथ लडकी का अक्द किया जायगा, लेकिन मिर्जा को अपने और अपने अहबाब के लडकों की तालीम से एक कुदरती लगाव था। इसलिए मिर्जा उस लडके की हालत से बख़ूबी वाकिफ थे। पैगाम आते ही मिर्ज़ा ने मजूर किया। मामूली रुसूम के बाद शादी कर दी गई। लडके-लडकी दोनो की शादियो मे मिर्जा साहब ने खिलाफ जुम्हूर तमाम बेहूदा रस्मो को तर्क कर दिया। ख़ास अहबाब की दावत के सिवा और किसी किस्म का सामान नही किया गया। न रंडियाँ नाची न भाड-भगेतो को बुलाया। लडके की शादी मे तो दोनो तरफ का इख्तियार खुद इन्ही को था। सकीना के ख़ालू बराए नाम शरीक हो गए थे और जो कुछ उन्होने सकीना को अपनी ख़ुशी से दिया उसको निहायत ही शुक्रगुज़ारी से मज़ूर कर लिया। लडकी की शादी मे यह शर्त पहले ही कर ली गई थी कि माँझा, साचक, बरात बतौर मुतआरफ़ न होगा। सिर्फ शरई अक्द किया जायगा। दूल्हा की माँ को डोमिनियो के बुलवाने पर बहुत इसरार था मगर मिर्जा साहब ने हरगिज़ मजूर न किया। शरबत पिलाई की रस्म को मिर्जा बहुत ही बुरा जानते थे। इसलिए अक्सर अज़ीज़ो और दोस्तो से बिगड़ गई। मगर मिर्जा उन लोगो मे न थे जिनको किसी अम्र माकूल मे निज़ाम मुआशरत की मुताबअत[1] मे कोई उज्र नही है—अलावा उन उमूर जो ख़िलाफ़ खुदा ओ रसूल या खिलाफ अक्ल हो। उमूर जायज मे हम-मुआशरत की इस तरह फर्माबर्दारी जिस तरह सल्तनत के क़ानून की या तशरीअ् के अहकाम[2] की। मगर जो रस्म और कानून के खिलाफ होगा उसमे निजाम मुआशरत का मुकाबला पूरी कूवत से किया जायगा। लड़के-लडकियो की शादियो के बाद मिर्ज़ा बहुत ही सुबुकदोश[3] होगए। अब उन्होने वह तरीक: जिन्दगी इख्तियार किया जिससे दुनिया मे बिहिश्त का लुत्फ आता था। बशर्ते कि

१ अनुकरण २ शास्त्रादेश ३ उऋण, भार से हलके।

विहिश्त में तब्ओ[1] मिहनत भी अस्वाव ऐश मे दाखिल हो। मिर्जा का यह खयाल था कि वगैर मिहनत के जिन्दगी वसर नही हो सकती।

अव उन्होने लखनऊ के करीव एक मौजे में एक किता जमीन खुदकाश्त किया। साल मे सिर्फ दो एक महीना लखनऊ में रहते थे। वाकी तमाम साल गोया वही घर था। शहर मे मिर्ज़ा का दिल न लगता था इसलिए कि यहाँ इनकी दिलचस्पी का कोई सामान मुहय्या न था। इनके दो शुग़्ल थे—एक मशक्कत, दूसरे कुतुववीनी[2]। शहर के लोगों को इन दोनो वातो से नफ़रत। उनका खास शुग्ल जिससे मिर्ज़ा को नफ़रते कुल्ली थी, कवूतरवाज़ी, वटेरवाज़ी की।

❀　　❀　　❀

अगर्चे वचपने के दोस्तों का असर मिर्जा आविदहुसैन की सीरत पर नही पडा और यह अम्र काविल सताइश है कि वह इस असर की खरावी से महफूज रहे लेकिन आम नश्वोनमा के वाद अलवत्ता अक्सर कौमी तवीयतो ने इन पर असर डाला और उसका उन्हे ममनून होना चाहिए।

मसलन सय्यद जाफरहुसैन साहव जिनको इनसे खास मुहव्वत थी। सय्यद साहव की सीरत कौम और मुल्क के लिए एक उम्द: मिसाल है। इव्तदाई उम्र से सय्यद साहव के कुवा[3] इस लायक न थे कि वह किसी किस्म की सख्त तब्ओ मशक्कत कर सके। इसलिए तालीम अगरेज़ी आला दर्जे की न हासिल कर सके। सिर्फ इन्ट्रैंस क्लास पहुँच के वसवव अलालत[4] मदरसा छोड़ना पडा। मगर मसलहत-अन्देश जेहन इन्सान को हरगिज वेकार नही छोडते। इसलिए उन्होने रुड़की कालेज के दाखिले का इम्तहान पास किया और उस मदरसे मे दाखिल हो गये। यहाँ इन्होने अपनी विल् इस्तिक् मिहनत और नेक चलन से अपने उस्तादो को वहुत ही खुश रखा। अगर्चे उस मदरसे मे एक साहव और भी लखनऊ के रहने वाले उस ज़माने मे दाखिल थे और सय्यद साहव और वह ववजह हमवतन होने के एक ही वारिक वल्कि एक ही कमरे मे मुकीम थे। यह दूसरे हज़रत इन्तहा के काहिल। फ़जूलखर्च और सवसे वडा खब्त शायरी का उनके दिमाग मे समाया हुआ था। रुड़की कालेज मे दाखिल होकर वजाए इसके वह तालीमी कोर्स को याद करते, ग़ालिव और ज़ौक़ के दीवान हिफ्ज फरमाते थे। सरेशाम से आधीरात वल्कि उससे कुछ ज्याद: देर तक अपना और अपने साथियों का वक्त ज़ाया करने के सिवा उनका कोई और काम न था। सुवह को माशा-अल्लाह उस वक्त सो के उठते थे जिस वक्त कालेज का घण्टा वजता था। यानी साढ़े दस वजे। फिर उस वक्त भी अगर उनका शाहाना मिज़ाज दुरुस्त हुआ तो कालिज

---

१ शौकिया　२ पुस्तकों का अध्ययन　३ बल-पौरुष　४ बीमारी।

गए वर्ना वारिक ही में पडे रहे। माहवारी इम्तहानो में किताबे देखना कसम था। सिर्फ इम्तहान से एक दिन पहले जब तुलवा आपस मे बैठ कर मुवाहिसा किया करते थे, उसमे खौफ़े खुदा करके शरीक हो जाते थे। मगर नहीं मालूम क्या खुदा की कुदरत थी कि किसी इम्तहान में फ़ेल न हुए। सिर्फ पास होने भर के मार्क्स (नम्बर) मिल जाया करते थे। हज़रत को इसका फख्र था। सालाना मे खुदा-खुदा करके पास हो गए और एक साल के लिए सय्यद साहव को अपने हाल पर छोडके कालिज से निकल आए। नौकरी पर भी एशियाई शायरी का ज़हरीला असर और उनके मलज़ूम[1] काहिली, वेपरवाई, वद्‌दिमागी को लिये हुए पहुँचे, भला ऐसो से नौकरी क्या होती। डेढ दो वरस के वाद मौकूफ कर दिए गये। फिर मुस्तकिल सरकारी मुलाज़िमत न मिली। खुदा जाने किस तरह हैं और क्योकर है। उन हजरत के कालेज से निकल आने के वाद सय्यद साहव का पीछा छूटा। अव सय्यद साहव ने मुस्तकिल मेहनत करना शुरू की। दूसरे साल के इम्तहान मे (जो रुडकी कालेज का आख़िरी इम्तहान है) दूसरे दर्जे में पास हुए और एक मजमून मे इनाम भी पाया। इसके वाद मुहकमे नहर मे मुलाज़िम हुए। और उस मुहकमे में अव भी आला दर्जे के ओहदे पर हैं। मैं पहले एक मुकाम पर लिख चुका हूँ कि मिर्ज़ा आविदहुसैन ने इंजीनियरी का इम्तहान आप ही की राय से पास किया था। वल्कि उस इम्तहान के पास करने में आपने वडी मदद की। पैमायश व लेविल, नक्शाकशी, तख्मीना इमारत वगैरह सब आप ही से सीखा था।

सय्यद साहव को इनके साथ और इनको सय्यद साहव के साथ खास दर्जे का खुलूस[2] था। वह आपकी मद्‌ह व सना[3] गायवाना[4] करते थे। और यह उनकी तक्लीद करते थे और वह इनकी। मज़ाक दोनो का मिलता हुआ। शेरो-शायरी से इनको भी नफ़रत थी और उन्हे भी। समझते दोनों थे। मगर वाकिईयत[5] मे इस क़दर गर्क थे कि मज़ामीनखयाल[6] इनको हेच व पोच मालूम होते थे।

एक मर्तवा का जिक्र है। सय्यद जाफरहुसैन साहव के वही लखनवी हमवतन जिनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है, फसीहुलमुल्क नवाव मिर्जा साहव दाग देहलवी का तीसरा दीवान वडे ज़ौक़ व शौक़ से ख़रीद करके लाए। सय्यद साहव उस वक्त मौजूद थे। खुदा जाने क्या जी में आया, दीवान उठा के देखना शुरू किया। इत्तफाक से पेंसिल हाथ में। अश्आर-नज़री[7] करना शुरू कर दिया। सफे के सफे काट दिये और वाज़ अश्आर पर कुछ हाशिये भी चढाये। वस यही मज़ाक़ मिर्जा आविद-

---

[1] संबद्ध [2] आत्मीयता [3] प्रशंसा व गुणगान [4] पीठ पीछे [5] यथार्थ जीवन [6] विषय-कल्पना [7] छन्दावलोकन।

हुसैन साहब का भी था। मेकानिक्स मे दोनो को आला दर्जे की काबिलियत थी। सैकडो कलो की तजवीज रोजाना हुआ करती थी, नक्शे बना करते थे। बल्कि अगर मक़दूर[1] हुआ तो उसके नमूने भी बनवाये गये। वर्ना आरजूएँ[2] दिलों मे रह गईं।

मिर्जा आबिदहुसैन के अजीजो मे से भी कोई ऐसा मौजूद न था जिससे मिर्जा आबिदहुसैन के इख्लाक को कोई नफा पहुँचता हो। इनके एक अजीज का तज्किरः बतौर नमूने के किया जाता है।

मिर्जा आबिदहुसैन के दूर के रिश्तेदारो मे एक शख्स मिर्जा फिदाहुसैन नामी लखनऊ के रहने वाले बहुत तबाह-हाल और परेशान थे। किसी कदर फारसी पढ़े हुए थे और बचपने से शोरगोई[3] का भी खब्त था। उसने तबीयत को और नाजुक कर दिया था। मरसियाख्वानी के शौक ने सब्र व कनाअत[4] का सबक पढ़ा दिया था। साल भर के बाद अशर मोहर्रम मे किसी सरकार से सिर्फ पचीस रुपये की आमद थी। उसमे क्या होता था। एक बीवी, एक आप, एक लडका, दो लडकियाँ थी। गरज कि यह सब बन्दे ख़ुदा के इफ्लास[5] के पंजे मे गिरफ्तार थे। न कोई सूरत सफर की आप से आप नजर आती थी कि उस बला से नजात हासिल हो और न इतनी हिम्मत और अक्ल थी कि ख़ुद अपनी सअी बाजू[6] से मुख़लिसी[7] हासिल करे। जो लोग लखनऊ के निजाम मुआशरत से वाकिफ है, उनसे तो कुछ कहने की जरूरत नही। मगर हाँ और लोगो को इतना बताना जरूर है कि यहाँ के रहने वाले अमूमन अक्ल-मआश[8] से बेबहर. होते है। अगर्चे यह शहर अब ऐसा मुफ्लिस हो गया है कि यहाँ के मुतवस्सित दर्जे[9] के लोगो मे से अक्सर को आप फिक्रे-मआश[10] मे मुब्तिला पाइयेगा। और अगर किसी चलते पुर्जे आफत के परकाले को अक्ल मआश है भी तो वह अक्ल फसाद के साथ मिली हुई। नेक और जायज़ वसीलो से रुपया पैदा करना यहाँ के लोग नामुमकिन ख़याल करते है। और दुनिया भर मे रुपया पैदा करने के लिए तरह-तरह की तदबीरें सोची जाती है। कोई इस फिक्र मे है कि या कोई पेशा सीखें या कोई नौकरी करें, या अगर किसी क़दर रासुल्माल[11] पास है तो कोई दूकान खोले या कोई कारख़ाना करें। यहाँ इस किस्म की कोशिश करने वाले पस्तखयाल[12] अदना दर्जे के लोग समझे जाते हैं। और जो शख्स ऐसा कर लेता है, वह गोया दायरा तश्ख़ीस[13] से निकल जाता है। मसलन उन लोगो मे जो अहल तश्ख़ीस मे दाखिल हैं, यह वही लोग है जिनके आबा व अज्दाद[14] साहबे सर्वत[15] थे।

---

१ समाई २ इच्छाएँ ३ कविता रचने का ४ धैर्य और संतोष ५ कंगाली के दैवी प्रकोप ६ बाहुबल ७ मुक्ति ८ जीविकार्जन-बुद्धि ९ मध्यम वर्ग १० रोज़ी की चिन्ता ११ पूंजी १२ मंदबुद्धि १३ मर्यादावाले १४ पूर्वज १५ सम्पन्न, धनाढ्य।

यह बुजुर्ग सर्वत को तो अपने साथ मुल्के अदम को लेते गए, मगर महज़ तशख्खुस[1] और निख्वत[2] जो कि लाजिमी मिफात इस सर्वत के थे, अपनी औलाद की मीरास[3] मे छोड गये। अगर किसी ने कोई पेशा कर लिया तो वह वेचारा अगुश्तनुमा[4] हो जाता है। फिर करें क्या ? यह मुझसे सुनिये —

(१) अगर अरवी गुद-बुद पढी है और शक्कियाते नमाज[5] और मसाएल रोज-मर्रं से वाकिफ है—किसी मुज्तहिद[6] से यह सभी व सिफारिश या वइजहार रसूखियत-खान्दानी इजाज:[7] हासिल करके पेशनमाज वन जायँ। लखनऊ मे तो खैर मगर अक्सर वाहर के देहाती कस्वाती वहुत से मोतकिद[8] हो जायँगे।

(२) अगर चौगोशिया टोपी कालव[9] पर चढाना जानता है, किसी नामी मरसियाख्वान का शागिर्द हो जाय और उनसे कोई रुक्का लेकर वाहर चला जाय। हस्व हैसियत लिवास व तशख्खुस जाहिरी[10] कुछ न कुछ वसूल हो जायगा।

(३) अगर कुछ पढा नही है सिर्फ किसी कदर किर्अत[11] से वाकिफ है, खुमूसन जाल और जाद को व-सेहत अदा कर सकता है, किसी मैयित[12] के रोज: नमाज़ का उजूर[13] ले। नमाज पढे या न पढे, रोजे रखे या न रखे, यह उसका ईमान जाने। या हज या जिआरत का मुआमल: करले।

(४) अगर इल्म मजलिस से वाकिफ हो, किसी रईस का दरवार करे, नौकरी का उम्मीदवार रहे। वक्तन फवक्तन वगरज़ फाकाशिकनी[14] के कुछ वसूल हो जाया करेगा।

यह सूरतें अक्ले-हलाल[15] की है। अव अगर हराम व हलाल से कोई वहस न रखता हो और सूरत जाहिरी अच्छी हो, किसी मालदार औरत के फाँसने की फिक्र करे। आम इससे कि वह शौहरदार हो या वेवा। यह भी नामुमकिन हो तो किसी नौउम्र रईसजादे को कब्जे मे लाये। उस हालत मे अगर मुमकिन हो तो अपनी वहन या लडकी का निकाह उसके साथ कर दे या किसी और तरीके से उसके माल पर कब्ज़ा करे और जव वह यकवीनी-व-दोगोश[16] हो जाय तो उससे किनाराकशी करे, और तनहा उसकी लियाकत न रखता हो तो जालियो की कम्पनी मे शिरकत करे और जो कुछ

---

१ मर्यादा २ अभिमान ३ उत्तराधिकार ४ बदनाम, नक्कू ५ नमाज़ संबन्धी शंकाओं ६ शीआ सम्प्रदाय का धर्म-गुरु ७ पुश्तैनी योग्यता की सनद ८ श्रद्धालु, भक्त ९ टोपी चढ़ाने का साँचा १० पहनाव ओढ़ाव ११ कुरआन का शुद्ध सस्वर उच्चारण १२ मरे हुए १३ मिहनताना १४ लंघन ( उपवास ) तोड़ने के लिए १५ हलाल रोज़ी १६ बिलकुल लाचार।

रुपिया पास हो तो जाली मुकद्दमो मे रुपये से मदद दे। रुपिया न हो तो पैरवी दौड़-धूप से अपना एक हिस्सा मुस्तकिल कम्पनी मे कायम करले।

यह सब सूरतें ऐसी है कि निजामेमुआशरत में[1] इज्जत वाकी रहे और रुपिया पैदा हो, और अगर कोई खुदा न ख्वास्त पेशा कर लिया या किसी किस्म का हुनर सीख के उससे अख्ज-मआश[2] करने लगा तो लोगो की निगाहो मे जलील हो जायगा। यहाँ तक कि लडके-लडकी की शादी व्याह में दिक्कते पेश आयेंगी। छोटी उम्मत वालो मे शुमार कर लिया जायगा, ख्वाह वह कैसा ही शरीफुल्-नस्ल और शरीफुल्-ज़ात क्यों न हो। यह उमूर जो यहा लिखे गये हैं, इसको नाज़रीन मज़ाक न समझे। यह विल्कुल वाकिआत है।

गरज कि हमारे मिर्जा के अजीज मिर्जा फिदाहुसैन उसी किस्म के लोगो मे से थे जिनके ऐसे खयालात होते थे और अपने खयालात के वदौलत यह और इनके वाल-वच्चे तरह-तरह के मुसाएव[3] मे मुब्तिला थे।

जिस जमाने मे मिर्जा साहव जिला मेरठ मे असिस्टेंट इंजीनियर थे मिर्जा फिदा-हुसैन वसीगए मरसियाख्वानी उसी ज़िले मे एक रईस के मकान पर तशरीफ ले गए। मिर्ज़ा साहव भी मुहर्रम की मजलिसो मे वहाँ जाया करते थे। वही मुलाकात हुई। मिर्ज़ा फिदाहुसैन को वलिहाज़ करावत[4] एक दिन अपने इलाके पर मेहमान किया। दावत की। एक रोज़ अपने मकान पर खुद मजलिस करके मिर्जा साहव से पढवाया। वक्त-रवानगी मिर्जा साहव को रईस की सरकार से पच्चीस रुपये वसूल हुये। मिर्जा फिदाहुसैन के इफ़्लास[5] का हाल कुछ पोशीद. न था। मिर्ज़ा आविदहुसैन ने एक मजलिस की पढवाई के हीले से पचास रुपये अपने पास से दिए। दूसरे साल फिर ऐसा ही इत्तफाक हुआ। अवकी मर्तवा मिर्ज़ा फिदाहुसैन ने कहा कि अगर कोई सूरत रोज़गार की मुमकिन हो तो कर दीजिए। मिर्ज़ा आविदहुसैन ने कहा कि सूरत रोज़गार की हो सकती है वशर्ते कि मिहनत पर आमाद हो। मिर्जा फिदाहुसैन इफ्लास के हाथो वहुत तग थे, मजूर कर लिया। मिर्जा आबिदहुसैन ने साहव से कहके एक जगह मुहर्रिरी[6] की उनको दिलवा दी। पन्द्रह रुपये माहवार तनख्वाह थी। मिर्ज़ा फिदाहुसैन खुशी-खुशी लखनऊ गए। और मय अहलोअयाल[7] मिर्ज़ा आविद-हुसैन के इलाके पर पहुँच गए।

मिर्ज़ा आविदहुसैन ने उनके अहलोअयाल को अपने घर मे उतार लिया।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी सकीना वेगम बहुत ही तगमिज़ाज थी। इसके

---

१ नागरिक जीवन में　२ रोज़ी (जीविका) की प्राप्ति　३ मुसीवतों　४ आपसदारी　५ कंगाली　६ क्लर्की　७ बीवी-बच्चे।

अलावा लखनऊ के तर्ज मुआशरत[1] की आदी। आदते बिगडी हुई। सुबह के नौ वजे सो के उठना। दिन भर फुज़ल औकात जाया करना। वैसी ही कुछ बच्चो की भी खसलते थी।

उन लोगो को कभी बाहर जाने का इत्तफ़ाक न हुआ था। हर चीज बाहर की आपको बुरी मालूम होती थी। ख्वाह वह दर हकीकत बुरी हो या न हो।

मिर्ज़ा फिदाहुसैन का हाल कुछ ही क्यो न हो लेकिन उनकी बीवी समझती थीं कि मिर्जा आविदहुसैन ने जो उनके मियाँ को नौकर रखवा दिया है उसमे कुछ उन्ही का मतलव है।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी मेहमाननवाजी के लिहाज़ से जितनी उनकी खातिर-दारी करती थी वह उसको एक किस्म की खुशामद और मतलवबरारी[2] समझती थी। यह तो एक किस्म की गलतफ़हमी थी। इसके अलावा हसद[3] ने और भी आँखो पर पर्दे डाल दिये थे। एहसानफरामोशी[4] ऐब है मगर वह अपने शौहर को मिर्ज़ा आविदहुसैन का मुहसिन[5] तसव्वुर करती थी और उसी किस्म के सुलूक की मुतवक़्क़ो[6] थीं जो मुहसिनो के साथ करना चाहिए। सकीना वेगम साहिबा ने ऐसे हल्कए मुआशरत मे परवरिश पाई थी जहाँ वेगरजी से किसी के साथ नेकी करने का मफ्हूम[7] विल्कुल नामुमकिन खयाल किया जाता था। उनका यह मकूल. था कि "वे मतलव किसी को कोई कुछ नही देता।"

मिर्ज़ा फिदाहुसैन की बीवी यह समझती थीं कि मिर्ज़ा आबिदहुसैन और उनके खानदान ने इनके शौहर और खुद इनपर वह जुल्म किया है जिसकी तलाफी[8] रद्द-मज़ालिम[9] से भी मुमकिन नही।

एक तो लखनऊ से छुडवाने का गुनाह इस कदर संगीन और सख्त था कि अगर अदालत मिर्ज़ा फिदाहुसैन की बीवी के इख्तियार मे होती तो मिर्ज़ा आबिदहुसैन और उनके वीवी-बच्चों को कोल्हू मे पेलवा डालती। उठते-बैठते यह कलाम था, "हाय पन्द्रह रुपल्ली के लिए घर छोडा, बार छोडा। मुझे जगले मे आ के रहना पड़ा। क्यो वहन रुकय्या वेगम! (मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी का नाम) मैं कहती हूँ कि अगर यहाँ कोई मर जाए तो क्या हो। खटिया पर उठाया जायगा। फातिहः दुरूद भी अच्छी तरह न हो।

तुम्हारे मियाँ का खुदा भला करे किस जंगले में लाके डाला है, जहाँ अपना कोई अजीज़ न साथी। न पूछने वाला न देखने वाला। सब तो सब मेरी वतूली को

---

१ रहन सहन का तरीक़ः २ स्वार्थसिद्धि ३ ईर्ष्या ४ कृतघ्नता ५ उपकारकर्ता ६ आशा रखती थीं ७ उद्देश्य ८ उद्धार, क्षतिपूर्ति ९ प्रायश्चित्त।

दूसरा साल भर के तीसरा साल शुरू हो गया है। शहर में दूधवढाई[१] करती। चार अपने-पराये जमा होते। नजर-नियाज होती। ज़ाकिर (वडे लड़के का नाम था) को पन्द्रहवाँ साल है। माशाअल्लाह मसे भीगती हैं। उसका सील-कूडे[२] करना है। और तो ख़ैर, वडी मुश्किल यह आन पडी कि हुरमुजी (वडी लडकी का नाम है) को नवाँ वरस है। शहर मे होते तो उसकी निस्वत[३] का बन्दोवस्त करती। मुशात.[४] को वुलवा के कही से रुक्आ[५] मंगवाती। मैं कहती हूँ कि यह होता क्या है। फट पडे वह सोना जिससे टूटे कान। वाज आए हम इस पन्द्रह रुपये की नौकरी से। शहर के चने अच्छे और वाहर का पुलाव नही अच्छा।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी वहुत ही नेक और निमोही थी, मगर पन्द्रह रुपये का ताना इतनी बार दिया गया कि आख़िर कलेजा पक गया। एक आध मर्तवा वोलना ही पडा। उनका वोलना था कि अच्छी ख़ासी लडाई ठन गई। वी सकीना वेगम आप ही आप ख़फा हो गई। वातचीत तर्क कर दी। आदतें उस ख़ानदान की बिलकुल बिगडी थी। सवसे वढकर एक ख़राव आदत सवा पहर दिन चढे सो के उठना। नमाज-दुआ से कोई वाक़िफ ही न था। मिर्जा आविदहुसैन की वीवी मुँह अँधेरे सो के उठती थी और अपने साथ वेटी-वहू को भी उठाके नमाज पढ़वाती थी उसके बाद कलाम-अल्लाह का एक सिपार पढा जाता था। मामाएँ असीले[६] खाना पकाती थी। बीवियाँ या किताबे पढ रही हैं या कुछ सी-पिरो रही है। ख़ुलासा यह कि मिर्ज़ा आविदहुसैन की जफाकशी और मिहनतपसन्दी का तमाम घर पर असर था। छोटा-वडा इस ख़ान्दान का वेकारी को गुनाह अजीम समझता था। "अम्र बिलमारूफ और नही अनिल्मुन्कर" याने 'अच्छे कामो के करने की हिदायत करना और वुरी वातो से रोकना' न सिर्फ एक फर्ज़ मजहवी है वल्कि इन्सान की नेकी ख़ुद उसको कामो की तरफ मुतवज्जेह करती है। अगर तवीअतें वुराइयो की आदी न हो जायँ और उनमे तवीयत-पिज़ीरी[७] का जौहर मौजूद होता है तो इस्लाह मुमकिन है। जिन तवीअतो मे ख़राव आदतें जड पकड लेती है तो उनमे वजाए तवियत पिजीरी के एक किस्म की जिद्द का माद्दा पैदा हो जाता है। इसमे शक नही कि उनका दिल भी अपनी वुराई का मुअर्रिफ[८] होता है मगर उसके तर्क[९] पर या तो कुदरत रखते या उसे मोहाल समझते है। इसलिए तवीयत उन हीलो को तलाश करने लगती है जिससे नसीहतगरों की जवानवन्दी की जाए या अगर औरो को नेकी करते हुए देख के ख़ुद अपना नफ़्स

---

१ बच्चे के दूध छुडाने की रस्म २ किशोरावस्था के आरंभ में नज़र-नियाज़ की रस्म ३ सगाई ४ ब्याह-काम तय कराने वाली औरत ५ रुक्का (सगाई का पैग़ाम) ६ शरीफ़ नौकरानियाँ ७ गुणग्राहकता ८ प्रशंसक ९ त्याग।

मलामत करे तो उसमे जौहरशरीफ को (जो फिलहकीकत एक फिरिश्त है जो हर हालत और हर वक्त मे इसान को नेकियो की तर्गीब[1] और बुराइयो से मना किया करता है और जव उसका कहना न मान के इन्सान बुराई करता है तो उसको सख्त मलामत करता है) दवा देने वल्कि खाक मे मिला देने की कोशिश की जाती है।

मसलन जव मिर्जा आविदहुसैन की बीवी ने देखा कि कई वक्त नमाज़ के गुजर गये और मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी ने नमाज न पढी तो पहले उनको तअज्जुब सा हुआ। दो एक मर्तवा इरादा किया कि कुछ कहे लेकिन लिहाज़ के मारे कुछ न कह सकी। आखिर एक दिन मिर्ज़ा फिदाहुसैन की बीवी को अलाहिदा ले जाके इस तरह तमहीद[2] उठाई।

मिर्जा आविदहुसैन की बीवी—भाभी मुझे एक वात मे वडा तअज्जुब है मगर कहते हुए शरम आती है। अगर आप बुरा न माने तो कहूँ।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—कहो?

मिर्जा आविदहुसैन की बीवी—कहना यह है कि मैंने आपको नमाज पढते नही देखा और न लडको को। यह आप लोग नमाज किस वक्त और कहाँ पढते है कि मुझको खवर नही होती। भाई साहव की अजान और नमाज की आवाज अक्सर आती है।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—हॉ वह पढते है शायद।

मिर्जा आविदहुसैन की बीवी—हाँय, यह शायद कैसा और क्या आप नही पढती?

मिर्ज़ा फिदाहुसैन की बीवी—रमजान और मुहर्रम मे तो पाँचो वक्त की नमाज पढते हैं। और यूँ कभी पढ ली और कभी न पढी।

मिर्ज़ा आविदहुसैन की बीवी—तो क्या फकत मुहर्रम और रमजान मे नमाज वाजिव है और दिनो मे नही?

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—अब यह तो मौलवी लोग जाने, जो मैंने देखा था तुम से कह दिया।

मिर्ज़ा आविदहुसैन की बीवी—अच्छा आप क्यो नही पढती?

मिर्ज़ा फिदाहुसैन की बीवी—यह भी एक कमबख्ती की मार है। वात इतनी है कि मेरी तवीयत मे शुब्हा कुछ इस किस्म का है कि जहाँ ज़रा सी छीट पड गई या कुछ ऐसी बात हो गई बस जी नही चाहता नमाज़ पढने को?

---

१ प्रेरणा २ भूमिका।

मिर्जा आबिदहुसैन की वीवी—शुब्हा तो आप जानती है मुए शैतान की तरफ से होता है। शैतानी वसवसे[1] के खयाल से खुदा की नमाज का छोड़ना कैसा ?

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—ऐ है भाभी तुम तो पढ़ी लिखी हो। तुमसे दलील कौन मिलाये। अच्छा अवकी से नहाऊँगी तो जरूर पढ़ूँगी।

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—जान वूझ के एक मर्तवा की नमाज कज़ा करने का नही मालूम कितना अजाव है। और आपने कह दिया कि नहाऊँगी तो पढ़ूँगी। अभी परसों तो आप नहाई थी।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—ऐ है नहाई तो थी फिर छीट पड गई। कपड़े गारत हो गये।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—कहाँ छीट पड गई। जहाँ छीट पड गई हो उसको धोके गोता दे लीजिये। शौक से नमाज़ पढ़िये।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—अव यह क्या मालूम कहाँ छीट पड गई है। अगर ऐसा होता फिर क्या था।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—तो मालूम होता है आपने छीट पडते देखा नही। अगर देखा होता तो यह जरूर मालूम होता कि कहाँ पर छीट पडी।

मिर्ज़ा फिदाहुसैन की वीवी—हाँ तो मैं खुद ही कहती हूँ कि शुव्हा है।

मिर्ज़ा आविदहुसैन की वीवी—शुव्हा पर नमाज तर्क नही हो सकती।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—खुदा मारे या जिलाए। मुझसे हर सट्टे नही नहाया जाता।

मिर्जा आविदहुसैन की बीवी—आपसे हर सट्टे नहाने को कौन कहता है। हाँ तो यह कहिए कि न पढी जायगी।

मिर्ज़ा फिदाहुसैन की वीवी—कपडे तो छिया-विया और नमाज़ पढ लूँ। ऐसी नमाज से कुर्वान।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—हाँ तो कहिये कि नमाज़ न पढियेगा, और फिर जव आप ही न पढे तो लडके भला क्यो पढने लगे।

गरज कि इस तकरीर के वाद मिर्जा आविदहुसैन की वीवी को मायूसी हो गई।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी को जहाँ और शिकायतें थी उन सव में एक यह वहुत वडी शिकायत थी।

"हाय इस जंगल मे लाके डाला है जहाँ कही अजान की आवाज नही आती। जहाँ शाम हुई और गीदड वोलने लगे।"

---

1 प्रेरणा।

जिस दिन से नमाज के बाब मे गुपतगू हुई थी, अजान का जिक्र इस शिकायत से हज़्फ कर दिया गया था[१], मगर मातम की शिकायत बाकी थी बल्कि उस दिन से मातम के लफ्ज़ पर ज़्यादा जोर दे दिया गया था। वजह उसकी यह थी कि जब इन्सान की एक बुराई साबित हो जाती है तो वह अपनी बाज नेकियो को जो उसमे मौजूद हो ज़ाहिर करने की ज्यादातर कोशिश करता है, ताकि उसकी बुराई की वजह से जो उसकी जिल्लत हुई है दूसरी नेकी उसका मुवाजन.[२] कर दे।

मातम के बार-बार तज्किरे से यह मक्सूद था कि अगर्चे हम नमाज के पाबन्द नही है लेकिन मातमदारी का शौक हमे बनिस्बत और लोगो के कम अज् कम मिर्जा आबिद्हुसैन की बीवी से ज्याद है। मिर्जा आबिदहुसैन के घर मे अगरचे मातम और नौह्‌ख्वानी[३] का जिक्र न था मगर खुदा के फज्ल से छोटे से लेके बडा तक एक मज़हबी तारीख़ से वाकिफ था। पैगम्बर और अह्लेबैत[४] के नाम पर जानोदिल से फिदा थे। जिक्र-अह्‌लेबैत को इबादत समझते थे। मगर न उस तरह कि जैसा मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी का ख़याल था। आठवें दिन जुमेरात को सवा पैसे की रेवड़ियाँ मंगवा के खडे हो जाना और दो बोल सीधे उल्टे किसी धुन मे पढ लेना और मातम-हुसैन कहके सीन कोबी[५] कर लेना उनके नजदीक चन्दाँ वाजिबात[६] से न था। मिर्जा आबिदहुसैन का तरीक: दीनदारी आम लोगो के ऐसा न था और उनमे एक सिफ्त खुदादाद थी कि जिस बात को अच्छा समझ लेते थे, उसको अमल मे लाने से पहले उनको किसी से हिजाब[७] न होता था। अवाम की तक्लीद-महज[८] से उनको चिढ थी। यही तरीक आपके घर भर का हो गया था।

चन्दरोज तक मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी की इन शिकायतो का कोई जवाब नही दिया गया। आख़िर ईमान की बात थी, कहाँ तक सुकूत किया जाता[९]। एक दिन मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी को कहना पडा।

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—तो क्या तुम जुमेरात को मातम किया करती हो?

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—हाँ बीबी सौ काम दुनिया के करते हैं। कोई न कोई काम ईमान का भी तो करना चाहिए। आख़िर ख़ुदा को भी एक दिन मुँह दिखाना है।

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—मगर आप नमाज़ तो पढती नही जो असल काम ईमान का है।

---

१ निकाल दिया गया था २ क्षतिपूर्ति ३ मरे हुए के लिए रोना, मुहर्रम में मातम करना ४ पैग़म्बर की संतान ५ छाती पीटना ६ अनिवार्य कर्त्तव्यों ७ संकोच, लज्जा ८ अन्धानुकरण मात्र ९ चुप रहा जाता।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—अच्छा नमाज नही पढते न सही। मातम तो आठवे रोज का नागा नही होने पाता।

मिर्जा आबिदहुसैन की वीवी—ऐसे मातम से कोई फायदा नही। जब नमाज न पढी तो खाली मातम से क्या होता है ?

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—तौव. तौव करो। कुफ्र न वको। मातम को तुम इस तरह कहती हो ?

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—मै सच कहती हूँ। इमामहुसैन इस बात से हरगिज राज़ी न होगे कि ख़ुदा के फर्ज को आप तर्क करके उनका मातम कीजिए।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—यह तुमने क्या कहा। मातम एक पर एक है।

मिर्जा आविदहुसैन की बीवी—मगर नमाज हजार पर एक है। वगैर नमाज के मातम काम न आयेगा।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—भाभी वाहर रहते-रहते तुम्हारा ईमान दुरुस्त नही रहा और हाँ मैंने एक और बात सुनी है। तुम्हारे मियाँ ! ऐ है मुवे वह कौन कहलाते हैं, हाँ खूब याद आया नेचरी, तुम्हारे मियाँ तो नेचरी है। जानती हूँ कि तुमने भी मियाँ के साथ अपना ईमान खो दिया। जब तो तुम मातम को इस तरह कहती हो। तुम ऐसा न कहो, आल-औलाद वाली हो।

मिर्जा आविदहुसैन की बीवी—क्यो इसमे आल-औलाद को ख़ुदा न ख्वास्ता क्या ज़रर[1] है ?

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—तो इतना भी तुम नही समझती। आल-औलाद का जलल (जरर) तो होता ही है। खुदा कोई लाठी लेके मारता है। जब उसकी वातो मे तुम पै निकालती हो। उसकी सजा कुछ न कुछ होना चाहिए। या दीदो-घुटनो के आगे आये या खुदा न ख्वास्ता शैतान के कान वहरे औलाद के दुश्मनों पर वन आये। हर जुमेरात को मातम किया करती थी। शामत की मार तीन जुमेराते नागा हो गई। वतूली ऐसी माँदी हो गई कि किसी तरह बचने की कोई तवक्को न थी। आख़िर मुझे ख्वाब मे दिखाया कि तू हमारा मातम किया करती थी, उसे तूने नागा किया। आख़िर पाई न उसकी सज़ा।

दूसरे दिन से मैंने तीन वक्त मातम करना शुरू कर दिया। सुवह, दोपहर, शाम, लीजिये उसी दिन से मेरी लडकी अच्छी होने लगी।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—भाभी इमामहुसैन को भी तुम लोगो ने अपना सा वना लिया कि जरा-जरा सी वात पर ख़फा हो जाते है।

---

१ क्षति।

मिर्ज़ा फिदाहुसैन की बीवी—यह तो खफा होने की बात ही है। आपस मे देख लो। यह खयाल करो कि तुम मुझको ईद-बकरीद हिस्सा भेजती हो। और जो नागा करो तो मुझको रंज होगा या नही, बस यूँ ही समझ लो।

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—आप तो मुझको कहती है मगर मालूम हुआ कि आप ईमान की बाते बिलकुल नही जानती।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—सच है अपनी हाई औरो पर गवाँई। जैसे तुम मियाँ की मुहब्बत मे खुदा और रसूल सब भूल गई, वैसा सबको जानती हो। बस तुम्हारे ईमान का हाल तो मालूम हो गया कि शिया मोमिन होके तुम मातम की कोई असल नही समझती।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—मैं मातम की कोई असल समझती हूँ या नही, यह मेरा दिल जाने और मेरा ईमान। मगर मुझे ऐसा मालूम होता है कि आप मुसलमान होके खुदा की नमाज जो वाजिबात[1] मे से है उसी की कोई हकीकत नही समझती, न खुद पढती है न बच्चो को सिखाती है। हम लोग इमामहुसैन के गम को इतना मानते है कि रोज़ बाद नमाज और कलाम अल्लाह के, सज्जादी के अव्वा हदीस पढते है। या अगर वह बाहर होते है तो मैं खुद पढती हूँ। सब छोटे-बडे घर के सुनते हैं, जो बाते खुश होने की है उन पर खुश होती हूँ और जो रंज करने की बाते है उन पर रंज करती हूँ। जिन बातो को उन्होने मना किया है उनसे बचते है और जिन कामो के करने का हुक्म दिया है उसे हत्तल्‌मक्दूर[2] करते है।

मिर्ज़ा फिदाहुसैन की बीवी—हमने तो एक दिन भी नही देखा।

इस पर मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी बे-इख्तियार मुस्कराने लगी और कहा।

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—भाभी आप क्योकर देखती। आप तो उस वक्त सोई रहती है।

"जो सोया उसने खोया"

मिर्ज़ा फिदाहुसैन की बीवी—(इस बात पर जरा खिसियानी सी हो गईं) तो एक दिन मैं भी सुनूँगी, भाई साहब क्या पढते हैं।

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—खैर, वह आजकल दौरे पर है। आप सवेरे उठिए, मैं आपको हदीस पढ़कर सुनाऊँगी।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—जरूर कल ही सही। वायदा तो कर लिया। मगर मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी को एक दिन भी सवेरे उठना नसीब न हुआ कि वह हदीस सुनती।

---

१ अनिवार्य कर्तव्य २ यथाशक्ति।

मिर्जा फिदाहुसैन साहब की बीवी में एक और सिफ्त थी। बात-बात में गाली। ख्वाह गुस्से मे, बच्चो से बात करने मे, हर-हर लफ़्ज के बाद एक मोटी सी गाली जरूर शरीक हो गई। हुरमुजी की जबान भी माशाअल्लाह खूब आरास्त[1] थी। छोटी लडकी जो गोद मे थी उसकी जबान खुलने लगी थी। उसको गालियाँ तालीम दी जाती थी और जो एक आध लफ्ज़ उस मासूम बच्चे की जबान से निकल जाता था उससे बहुत खुश होती थी।

साहबजादे का सिन अब चौदह बरस से कुछ जाएद था। जिनके सील के कूँडे का तजकिरः पहले हो चुका है। जिला, जुगत, फब्ती मे ताक[2] थे। उनकी शिकायत सबसे बड़ी यह थी कि यहाँ कनकौए का कही ज़िक्र न था और बगैर कनकौआ उडाये आप क्योकर रह सकते थे। आखिर आपने यह कारस्तानी की कि मिर्जा साहब के दफ्तर मे से आपने एक गड्डी ट्रेसिंग पेपर की उड़ाई, और पैमायश करने की झण्डियो से एक झण्डी का बाँस जो उनकी कोन का था उसको काट के काँप-ठड्डे छीले। कई कनकौए तैयार हो गये। डोर के लिए अम्माँ की पेंचके सत्यानास की। खुलासा यह कि उन्होने अपने शुग्ल के लिए अच्छा ख़ासा सामान तैयार कर लिया। पढ़ने-लिखने से कोई गरज़ न थी।

एक दिन आप कनकौआ उडा रहे थे। इत्तफाक से कनकौआ टूट के एक गरीब किसान के खेत मे जा गिरा। उस खेत मे गेहूँ बोये हुए थे। आप बेतकल्लुफ खेत मे घुस गए और गरीब किसान की मिहनत के सरसब्ज खेत को पामाल करते हुए कनकौआ उठा लाए। दो एक मर्तब तो किसान चुप हो रहा लेकिन जब कई मर्तबा ऐसा इत्तफाक हुआ तो उसने इन्जीनियर साहब (मिर्जा आबिदहुसैन) से नालिश की। मिर्ज़ा साहब को तअज्जुब हुआ कि यहाँ कनकौआ कहाँ से आया। गरज कि वह कनकौआ मगा के देखा गया। कागज़ मिर्जा साहब ने पहचाना। निहायत जिज़बिज हुए[3]। अह्ल दफ्तर पर सख्त ताकीद की यह साहबजादे दफ्तर न जाने पायें और ट्रेसिंग पेपर अपने पास से मंगाके दफ्तर मे दाखिल किया।

साहबज़ादे मे एक और आदत बद थी। इन्जीनियर साहब के बगले के करीब एक सरकारी बाग था। उसकी निगरानी मिर्जा साहब के ज़िम्मे थी। उसका ठेका साल के साल दिया जाता था। खुद मिर्जा साहब के घर मे मेवे और तरकारी बाजार से आती थी। या अगर बजरूरत बाग से लिया गया तो उसके दाम ठेकेदार को दिये जाते थे। साहबजादे ने उस बाग से नारगियाँ और अमरूद कच्चे-पक्के बेतकल्लुफ तोडना और खाना शुरू कर दिये। अक्सर ऐसा भी हुआ कि मियाँ ज़ाकिर ने उस

---

१ सजी-सवाँरी २ बोल बोलने, व्यंग करने में दक्ष ३ झुंझलाये।

चुराये हुए माल से चार पाँच नारगियाँ और अमरूद अपनी अम्माँ जान को भी दिये। उन्होंने भी बग़ैर उसकी तहकीक और तपतीश के कि यह कहाँ से लाता है नोश करना शुरू कर दी। आखिर उसकी भी शिकायत शुद. शुद.[1] इन्जीनियर साहब के गोश-गुजार[2] हुई। यह चोरी का मामला था। मिर्जा साहब ने जाकिर को बुलाकर सख्त तम्वीह की। और मजीद तम्बीह के लिहाज से यह भी कह दिया कि अगर अवकी ऐसा हुआ तो मैं तुमको थाने पर भेज दूँगा। यह खबर मियाँ जाकिर की माँ तक पहुँची। ऐ लीजिए कियामत आ गई। गोया किसी ने भिड के छत्ते को छेड दिया। कोई कोसना और ग़ाली बाकी न रखी। कई दिन तक बडवडाया की। है है थाने पर भेजने वाला गारत हो। ऐ लो, बच्चे ने दो नारगियाँ बाग से तोड ली, उस पर बच्चा थाने पर भेजा जाता है। यह अजीजदारी है। सच है इस वक्त के अज़ीज यजीद[3] होते हैं।

आखिर यहाँ तक कि मिर्जा आविदहुसैन की बीवी को बोलना पडा। धडाधडी की लडाई हुई।

मिर्जा आविदहुसैन की बीवी बेचारी लडना जानती ही न थी मगर आखिर इन्सान थी कोई फिरिश्त तो थी नही। झूठी और वेतुकी वातो पर ख्वामख़्वाह गुस्सा आ ही जाता है।

मिर्ज़ा आविदहुसैन की वीवी—भाभी आप भी कियामत करती है। यह तो कुछ ऐसी बुरा मानने की बात न थी जिस पर आप वेकुसूर बुरा भला कह रही है। लडके ने सरकारी वाग से नारंगियाँ और अमरूद चुराए, इस पर अगर उन्होंने तम्वीह के लिए कुछ कहा तो क्या वेजा किया।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—वस इसी बात पर तो मेरे दिल में आग लगती है जव तुम चोरी का नाम लेती हो। चोरी कैसी? चचा का बाग समझ के लडके ने दो फल तोड लिये तो इसमे क्या ऐब हो गया। यो रोज वही से फल-फलारी आया करती है। माशा अल्लाह घर भर खाता है तो कुछ नही।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—वस यही तो आप समझती नही। हमारे घर मे जो कुछ आता है मोल आता है।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की वीवी—यह तो हमने कही नही सुना। घर के वाग मे से फल-फलारी मोल आता है।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—तो क्या हमारा वाग है यह?

---

१ धीरे-धीरे २ कानों में आई ३ ह० इमामहुसैन का कातिल।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—फिर किस का बाग है ?

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—सरकारी बाग है ।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—अच्छा वह सरकार का सही । सरकार ने तो दिया है तर-तरकारी खाने को ।

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—सरकार से तनख्वाह दी जाती है, भत्ता दिया जाता है । तर-तरकारी खाने को बाग नही दिये जाते । और दिये जायँ तो कहाँ-कहाँ दिये जायँ । आज यहाँ कल वहाँ । रोज जो बदली होती रहती है । बाग पर क्या मौकूफ । लाखो रुपये की जायदाद, माल सरकारी, इनके हवाले रहती है । उसकी जो कुछ आमदनी आई वह सरकार मे दी जाती है । मसलन यही बाग है । इसका ठेका साल के साल हो जाता है । ठेकेदार जो रुपया देता है वह सरकार मे चला जाता है ।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—हाँ, आधे-तिहाई का होगा ।

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—तौब करो । हम लोग सिवाए तनख्वाह और भत्ते के एक हब्बा के गुनहगार नही होते । जिस तरह हमारी तनख्वाह महीने-महीने सरकार से मिलती है, उसी तरह हम सरकारी माल का दाम-दाम सरकार को देते है । उसमे हमारा क्या हक है जो हम ले लें ।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—अच्छा तो क्या फल-फलारी से भी गये गुजरे ?

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—हमारी क्या हकीकत है । बडे इजीनियर साहब जब दौरे पर आते हैं, उनके लिए जो मेवा, तरकारी जाता है उसके दाम उनसे वसूल कर लिये जाते है और वह ख़ुशी से दे देते है ।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—यह तो सब कहने की बाते है । बच्चे ने दो नारगियाँ तोड ली उस पर तूमार बाँधा । अभी भाई साहब या मियाँ बाकर दो अमरूद तोड लेते तो उनका हाथ कौन पकड लेता । अच्छा वह सरकार ही का बाग है फिर क्या सरकार हर वक्त देखा करती है ।

मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी—भाभी फिर वही कहे जाती है । यह सच है, कोई हाथ न पकड लेता और न कोई हर वक्त देखता रहता है । मगर खुदा देखता है । यह तो खुली-खुली चोरी है । भला उनके दुश्मन क्यों चोरी करते । क्या ख़ुदा ने हमे पैसा नही दिया है जो हम मोल ले लेते ।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी—यह तो हमने यही आके सुना । ककडी के चोर की गरदन नही मारी जाती । फल-फलारी इसी लिए होता है जिसके हाथ लगा उसने तोड लिया । ऐ लो हमारे मैके मे खाला हमसाई के घर मे बेरी का दरख़्त था ।

हम और हमारी वहने, लड़कियाँ थी। खाला हमसाई दिन भर चिल्लाया करती थीं। और हम लोग दिन-दिन भर झोरा करते थे। एक दिन उन्होने मुझे उसी बात पर कोसा था। दोपहर को वह तो सो गई, मैने मारे ढेलो के वेर का सुथराव कर दिया।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—आपने वडा अच्छा काम किया। मगर वह खाला हमसाई की वेरी थी। वह चीख-पीट के चुप हो रही होगी और यहाँ पाँच करेलो के लिए अगले साल एक शख्स को दो महीने की कैद हो गई। यह सरकारी माल है। इसे कोई हाथ नही लगा सकता।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—अच्छा वीवी, अव तो हम तुम्हारे वस मे है। चाहे कैद करवाओ, चाहे फाँसी दिलवाओ। तुम यहाँ की हाकिम हो, जो जी चाहे करो। हम तो खतावार वन्दे हैं।

मिर्ज़ा आविदहुसैन की वीवी—अच्छा तो वस। अव इस ज़िक्र को जाने दीजिये, आपका मलाल वढता जाता है और जो असल बात है वह आप समझती नही और वेफायदे ताने देती हैं।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—ताने सहने की तो मेरी आदत नही है। और समझ को जो तुमने कहा, वेशक समझ तो मेरी उलटी है। सीधी समझ तो आजकल की छोकरियो की है और हजार वात की एक वात तो यह है कि समझ उसी की ठीक होती है जिसके पास चार पैसे होते हैं। मुफलिसी मे आई अक्ल जाती रहती है। अगर अक्ल ठीक होती तो इस बुढापे में अपना शहर, घर-वार छोड़के इस परदेस मे पराए घरो पर क्यो आके पडते और लोगो की जूतियाँ क्यो खाते।

उम दिन खराश तकरीर[1] के हर-हर लफ्ज ने वेचारी मासूम-सिफत[2] मिर्ज़ा आविदहुसैन की वीवी के दिल पर नश्तर का काम किया। मगर बेचारी ने सब्र किया और कुछ जवाव न दिया। मगर यह कायदा है कि जो लोग किसी का दिल दुखाने के लिए कुछ कहते है और जव यह मालूम होता है कि दूसरे शख्स पर उसका कुछ असर नही होता तो उन्हें और गुस्सा आता है। इस तकरीर के वाद मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी मुन्तजिर थी कि मिर्जा आविदहुसैन की वीवी जरूर कुछ वोलेंगी। मगर वह वेचारी लहू के घूट पी के चुप हो रही। इस पर मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी का गुस्सा और वढा। इस मौके पर एक और नाशुदनी वाकिअ[3] हुआ।

मिर्जा आविदहुसैन के एक दोस्त ने उनको कई टोकरे अमरूद और नारगियों के और उसके साथ और कई किस्म का मेवा था, तोहफे के तौर पर भेजे थे। मिर्ज़ा साहव ने महज़ अपनी साद दिली से या बतौर तलाफी-माफात[4] या वतौर

---

**१ कठोर वचन २ निष्पाप स्वभाव ३ अनहोनी घटना ४ बीती को भुलाने के लिए।**

मेहमान-नवाज़ी-दिलजोई वह सव टोकरे विजिन्सिही मिर्जा फ़िदाहुसैन की बीवी के पास भेज दिये। सूरत वाकिअ की यह हुई कि जव यह टोकरे मेवे के आये, जाकिर, मिर्ज़ा साहव के पास चुपका गरीब वना हुआ था। मिर्जा साहव के दिल मे यह ख़याल आया कि मैने जाकिर को उस दिन जो तम्बीह की थी मुमकिन है वह किसी कद्र जरूरत से ज्याद: हो। इसलिए कि जाकिर की अभी इतनी अक्ल कहाँ कि वह प्राइवेट और पब्लिक प्रापर्टी (यानी माल जाती और माल सरकारी) की हकीकत को समझ सके। मुमकिन है कि उसने मेरा माल समझ के मेवा तोडा हो। अगर्चे उस दिन की चश्मनुमाई[1] मेरी वेजा न थी और इस ख़याल के साथ ट्रेमिंग पेपर और कनकौवे वनाने का वाकिअः याद आया, और फिर उस किसान की फर्याद; मगर इन सब उमूर से कता नजर[2] करके आखिरी तम्बीह की सख्ती पर मिर्जा साहव ने अपनी करीमुन्नफ्सी[3] से अपनी जात को मुल्जिम फ़र्ज कर लिया। इनको क्या मालूम था कि घर में वाल्द: गुस्से मे भरी वैठी हैं।

जिस वक्त मिर्ज़ा साहव ने यह टोकरे जाकिर को इनायत किये उसी वक्त एक मुख़्तसर सा लेक्चर भी दिया। जिससे जाकिर की तशफ्फी और तसल्ली कमा-हक्कहू[4] हो गई।

मिर्जा साहव के लेक्चर का मजमून गालिवन यह होगा —

देखो वेटा! उस दिन जो हमने तुमको तम्वीह की थी, उसका सवव यह था कि वह वाग माल सरकारी है और हम उसकी हिफाजत के लिए मुकर्रर है और उसी की तनख्वाह पाते हैं। यह हमे हरगिज गवारा न होगा और जरूर है कि तुम भी इसको पसन्द न करोगे कि जो चीज़ तुम्हारे सिपुर्द की जाय उसमे से खुद सर्फ करो या किसी और को सर्फ करने दो। आज यह टोकरे मेवे के हमारे एक दोस्त ने हमको भेजे है। यह सब टोकरे हम तुमको दिये देते है। अव यह माल तुम्हारा हो गया। इसमे से जिस कदर जी चाहे खुद खाओ या किसी को दो, तुमको इख्तियार है। यह तसल्ली देने वाली तकरीर और फिर उसके साथ मे टोकरे, विलायती नारंगियो और वड़े अमरूदों से भरे हुए; मुमकिन न था कि ज़ाकिर के दिल मे किसी किस्म की आज़र्दगी[5] का शोव:[6] भी वाकी रहता।

जव मिर्ज़ा साहव तकरीर खत्म कर चुके और मियाँ ज़ाकिर को यकीन हो गया कि यह सब के सब टोकरे नारंगियो और अमरूदो के उनका माल है, पहले तो यह अन्दाज किया कि इनको क्योंकर यहाँ से उठा ले जाऊँ। मगर यह उनकी ताकत

१ आँखे टेढ़ी करना २ दृष्टि हटाकर ३ नेकदिली ४ जैसा चाहिए वैसा ५ खिन्नता ६ लेशमात्र।

से बाहर था। फिर दाहिने बायें नज़र करके देखा कि अगर कोई ऐसा आदमी मिले जो इन सबको उठाके मेरे साथ ले चले। उस वक्त कोई नजर न आया। आख़िर उनकी अक्ल ने यह फैसला किया कि इनमे से थोडी नारगियाँ और अमरूद हाथ में उठा के चलते हो। यह खयाल करके फिर यह टोकरे तो किसी न किसी तरह घर में पहुँच ही जायँगे, और अगर पहुँचे भी तो वहाँ जाके हिस्सारसदी वट जायँगे, इससे अपना हिस्सा पहले ही क्यों न ले लो। उन्होने सात-आठ बडी-बड़ी नारगियाँ और चार-पाँच अमरूद जेबो मे भर लिये और कुछ हाथ मे ले के घर की तरफ रवान हुए और एक नारगी रास्ते मे छील डाली। जब यह घर के अन्दर दाखिल हुए हैं तो कई फाके उसकी नोश फरमा चुके थे। इन वेचारे को क्या मालूम था कि अम्मा जान गुस्से मे भरी बैठी है। ज्यो ही यह घर मे गए और इनकी अम्मा ने अमरूद और नारगियाँ इनके हाथ मे देखीं, आग वबूला हो गईं और ज़ाकिर को मुँह ही मुँह खूब कुचला। वह वेचारा कहता रहा कि अरे सुनो तो, मुझे चचाजान ने यह दिये हैं। उन्होंने कुछ न सुना। बराबर कुचल रही है। आख़िर मिर्ज़ा आबिद-हुसैन की बीवी ने बडी मुश्किलो से छुडाया और जिस कदर नारगियाँ और अमरूद उनको मिले उनको जूतियो के नीचे कुचल के मल डाला। उड जायँ यह नारगियाँ, गारत हो यह नारगियाँ। खाने वाला मरे। खाने वाले को हैजा खाये। मुवा कैसा मकर-मकर खा रहा था। अभी उस दिन जूतियाँ खा चुका है, वेद (वेत) खा चुका, कैद-फरग[1] भुगत चुका। मुवा वेगैरत! फिर वही नारगियाँ, वही अमरूद! ऐसे खाने से मुई बुरी चीज खाई होती।

मियाँ जाकिर जो पिट-पिटा के अलाहिद. खडे हुए तो वह अपनी हाँक बोल रहे है।

वाह मुझे तो चचाजान ने खुद दी थी। मुझे तो उन्होने तीन टोकरे अमरूदो और नारंगियों के दिये है। सब वाहर रखे है।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी-बच्चे सब उनकी खसलत से वाकिफ थे कि जब वह किसी बच्चे पर खफा होते हैं तो जरूर है कि वह दूसरे वक्त उसकी दिलजोई[2] करें। वह अस्ल रूदाद को समझ गईं। लेकिन जाकिर की माँ का गुस्सा किसी तरह फर्द नही होता। कोसने पर कोसने और गालियाँ पर गालियाँ दिए चली जाती है। मुँह खोल दिया है और आखे और दोनो कान वन्द कर लिये हैं। न कुछ देखती है न कुछ सुनती है। अपनी ज़टल हाँक रही है। जब इस चीख़-चाख़ और गाली-गलौज और कोसमकाट को बहुत देर हो गई तो आख़िर मिर्जा आविदहुसैन की बीवी को बोलना पड़ा।

---

१ अंग्रेज़ी क़ैदख़ाना २ तसल्ली।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—भाभी आप ख्वाहमख्वाह चीख रही हैं। सरीहन जाकिर कहे जाता है कि मुझको चचाजान ने नारंगियाँ दी हैं। और आप वेफायदा उस पर भी खफा होती है और हम लोगो को भी जो जी मे आता है कह रही है। खैर हम लोगो को जो चाहे कहिए। हम तो कुछ नही कह सकते। आप वड़ी हैं। मगर वच्चे को तो वेगुनाह न कोसिए।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी इसी की राह देख रही थी कि कुछ वोले तो लडाई के सिलसिले को अच्छी तरह तूल दूँ।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—वीवी हटो। तुम्हारा इसमे क्या दखल है। हम अपने वच्चो को नसीहत करते हैं, तुम्हे क्या ? तुम कौन हो ?

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—मगर कुसूर माफ कीजिएगा। यह नसीहत तो वेजा है, इसलिए कि जव वह कहे जाता है कि चचा ने मुझको तीन टोकरे नारगियो और अमरूदो के दिये हैं तो उसने कुसूर ही क्या किया है जिस पर आप ने उसको वेकार मारा भी और अव कोस भी रही है।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—वीवी हटो। उन्होने लाख दी थी। इसने क्यो ली। उस दिन की घुडकियाँ भूल गया। जेलखाने जाना भूल गया, मुआ वेगैरत।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—यह आप वेकार कहती है। उन्होने उस दिन अपना वच्चा समझ के तम्वीह के लिए कुछ कहा था। इस पर इतना वुरा माना। आपको तो और खुश होना चाहिए कि हमारे वच्चे को नसीहत की और आज उन्होने इस खयाल से कि शायद उस दिन की तम्वीह से उसको रज होगा कही से मेवे के टोकरे आए होगे उसको दे दिये। इसमे कौन सी वुराई की ?

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—तुम लोगो की वह मसल है कि सर पर जूती और मुँह मे रोटी। उस दिन तो जलील कर दिया और आज नारगियाँ देने वैठे है। मुवा वेगैरत था ना। उसने खुशी-खुशी ले ली। मैं तो ऐसी नारगियो को आग लगा देती। भले आदमी को एक वात और भले घोडे को एक चावुक।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी—अभी आप ही उस दिन कह रही थी कि मेरे दिल मे वात नही रहती। मगर आज आपकी वातो से मालूम होता है कि आप जरा-जरा सी वात मे गिरह वाँध रखती हैं। अच्छा वस अव जाने दीजिए।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—तो मैं तुम्हे कुछ कहती हूँ। मगर उस मुए का जव तक ढाई चुल्लू लहू न पी लूँगी मुझे चैन न आएगा। उसने नारंगियाँ क्यो ली। जिन नारगियो के कारन इतनी जिल्लत उठाई, जूतियाँ खाईं, वही नारगियाँ फिर खाने लगा। मुआ कगला, वेगैरत। यह मुआ है ही वेगैरत। यह क्या इसका

वावा भी वेगैरत है। जव तो मुआ वुढापे मे घर-वार छोड़के पराए टुकडो पर आके पड़ा हुआ है।

मिर्ज़ा आविदहुसैन की वीवी—अफसोस मैं लाख चाहती हूँ कि न बोलूँ लेकिन आप वाते इस तरह की करती है कि वे-वोले रहा नही जाता। पराए टुकडो पर आके क्यो रुके। नौकरी मे कोई ऐव नही। हम लोगो की मजाल क्या है जो किसी को टुकडे खिलाएँगे, और दुनिया का कारख़ाना इसी तरह चलता है। एक के हीले से एक का फायदा होता है। भाई साहव ने नौकरी के लिए कहा। यहाँ एक जगह खाली थी। उन्होने नौकर रखवा दिया। इसमे तो कोई बुराई नही हुई।

मिर्जा फिदाहुसैन की वीवी—मुई नौकरी मे नौकरी भी हो। पन्द्रह रुपये की नौकरी, उसके लिए तमाम उम्र का इहसान हो गया। वह अपने अजीजों ही का सही। इहसान तो उठाया। उम्र भर किसी के नमक की ककड़ी के शर्मिन्द नही हुए, इस बुढ़ापे मे मुँह को कालक लगाना क्या फर्ज था। मै तो उन्ही को कहती हूँ तुमको कुछ नही कहती। इसमे तुम्हारा बुरा मानना वेकार है।

मिर्जा आविदहुसैन की वीवी ने देखा कि इनकी अक्ल ठीक नही है। न यह उल्टी समझती है न सीधी। इनसे हुज्जत करना वेकार है। यह वहाँ से उठने के लिए वहाने ढूँढ रही हैं। इतने मे वाकर ने आवाज दी। अम्मा जान यहाँ आइये, यह उठ गईं। वह नेकवक्त उनके उठ जाने के वाद भी वकती रही और जाकिर तो मौका पाके खिसक गया वर्ना ख़ूव ही कोव कारी[1] होती।

वाकर मिर्जा आविदहुसैन का वडा लडका जो अभी अलीगढ कालेज से रमजान मुवारक की तातील मे आया हुआ था, उसके कान इस किस्म की वातो से ना-आश्ना[2] थे। इसलिए कि वह अपने और अपने वतन असली के तर्ज मुआसिरत से विलकुल नावाकिफ था और इसलिए कि जबसे उसने होश सभाला मिर्जा साहव वाहर रहे। घर मे ख़ुदा के फज्ल से इस किस्म की गुफ्तगू सुनी न थी। उसकी ख़सलतो मे शाइस्तगी[3] पूरा असर कर चुकी थी। कालेज की तालीम और तर्वियत[4] नें मगरवी निज़ाम इख्लाक का पहला उसूल "जिओ और जीने दो" अमली तरीको से उसके दिलनशी[5] कर दिया था। उस तरीक-तहजीब का उसे मल्क[6] हो गया था जिसमे यह सिखाया जाता है कि 'दियानत[7] वेहतरीन मसलहत है'। उसने आँख खोल-खोलकर रास्तगी[8] और हकपसन्दी[9] की जिन्द मिसालें यानी अपने वाल्दैन को देखा। मदरसे मे वाहमी मेलजोल और हमदर्दी के अक्सर लेक्चर सुने; अपने मुअल्लिमो और

---

१ कुटम्मस २ अपरिचित ३ सभ्यता ४ परवरिश ५ हृदयंगम ६ अभ्यास ७ ईमानदारी ८ सदाचार ९ सत्यप्रियता।

मुदर्रिसों मे अक्सर को इन्सान की भलाई मे दिलोजान से कोशिश करते हुए देखा। इल्म की बरकत से हुकूक वाल्दैन और उसके साथ ही उनके आला दर्जे के इख़्लाक की अज्मत उसके दिल मे समा गई थी। बुग्ज व हस्द कुफ्रान नेअमत[1], और उसके मिस्ल और गुनाहाने कबीर[2] यानी वह गुनाह जो निजाम मुआसिरत को बातिल[3] और कल अदम[4] करने वाले हैं, उससे उसको जाती तनफ्फुर[5] था। ताने-तिशने, गालियाँ, कोसने, बकना-बडबडाना और उसी किस्म की और सिफात से वह अजनबी था। अपनी माँ के साथ एक बेमगज़ी, बदज़बान और बेतुकी औरत को उलझते देखकर उसको इन्तिहा दर्जे का तैश आया। आख़िर उसने अपनी माँ को बुलाके उस वाकिए की असलियत को दरयाफ्त किया। उससे मालूम हुआ कि सरासर कुसूर उसी औरत का है और वाल्द उस मुआमले मे महज बे खता हैं जैसा कि उसको पहले ही यकीन था। उस मौके पर बाकर और उसकी वाल्दा मे जो बातें हुई वह लायक तहरीर है—

बाकर—मैंने इससे पहले कभी इस किस्म की बातें अपने घर मे नही सुनी। आप क्यो बेकार उसके साथ उलझती है। मैं ख़याल करता हूँ कि आपकी सेहत को इससे सख्त जरर पहुँचेगा।

माँ—क्या करूँ बेटा। जब से यह आई हैं नाक मे दम कर दिया है। न सीधी समझती है न उल्टी।

बाकर—मैं तो हरगिज जाइज न रखता कि ऐसे लोग घर मे रहे बल्कि वालिद से इस बाब मे अर्ज करूँगा कि इनको फौरन घर से निकाल दें।

माँ—तुम्हारे अब्बा खुद परेशान है। मगर अजीजदारी का वास्ता है। कुछ बनाए बन नही पडती।

बाकर—मैं समझता हूँ कि जो लोग हमदर्दी की कद्र न करे, उनसे किसी किस्म का सुलूक करना अपनी नेकी को जाय करना है।

माँ—हाँ यह सच है मगर क्या किया जाय। आख़िर हमे तो नेकी ही करना चाहिए। अब इस परदेस मे इनको कहाँ निकाल दे।

बाकर—अम्मा जान मैं उस दिल की नेकी का अन्दाजा नही कर सकता, जिसमे ऐसी बातें भरी हुई हैं, जो आपके मुँह से निकलती है। मगर मैं निहायत अदब के साथ आप से इख़्तिलाफ करता हूँ। किसी शख़्स के हुकूक से जियाद. उसकी रिआयत करना मेरे नजदीक एक तरह की नाइंसाफी है। आप इस मुआमले मे फिर गौर कीजिए। मुझे उम्मीद है कि काफी गौर के बाद आप मेरी राए से इत्तफ़ाक करेगी। मुझे एक दिन के लिए इनका घर मे रहना मुनासिब नही मालूम होता। और किसी

---

१ द्वेष-इर्ष्या-कृतघ्नता　२ महापाप　३ व्यर्थ　४ मिटाने वाले　५ घृणा।

मसलहत से जिसको आप समझती हो, या अब्बाजान इनका घर मे रहना जरूरी समझते हो, तो जरूर है मेरे अलाहिद. रहने का बन्दोबस्त कर दिया जाय। अगर्चे इन बेहूदगीयो का असर आप पर न पड सकेगा, मगर खान्दान के लोगों पर जो अभी कमसिन और नातजर्बेकार है, इसका बहुत बुरा असर पडेगा। मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी बात के पहलू को समझ गई। बाकरहुसैन बहुत दूर की बात कहता है। और उसकी तकरीर का साफ मशा है कि अगर यह घर मे रहेगी तो मैं हरगिज नही रहूँगा और अपने बीबी बच्चो समेत अलाहिद हो जाऊँगा।

बाकर—मुझे इस वजह से भी इनके साथ रहना मजूर नही कि चार पाँच दिन का जिक्र है नादिर को यह गोद में खिला रहीं थी। एक बेहूदा बात जबान से निकाली जिसको सुन के मेरी आँखे नीची हो गई और उनको किसी क़िस्म की गैरत न आई। बच्चे जो बाते बार-बार कानो से सुनते है उसी को दुहराने लगते है। मैं हरगिज गवारा न करूँगा कि नादिर की जबान गालियो पर खुले।

माँ—हाँ मुझे याद आया। यह इन लोगो की प्यार की बाते है।

बाकर—मैं बाज आया ऐसे प्यार से। मैं तो ख्याल करता हूँ कि इन लोगों को गालियाँ देने और गालियाँ सुनने की आदत हो गई है। यह लोग बगैर इसके रह नही सकते। कोई नही है तो मासूम बच्चे को गालियाँ दे रहे है। आखिर इसका अजाम यह होगा कि जब बच्चे की जबान खुलेगी तो वह भी गालियाँ बकने लगेगा। मेरे किसी मुहज्ज़ब[1] दोस्त की गोद मे अगर मेरे लडके ने कोई गाली जबान से निकाली तो मुझे निहायत ही हिजाब[2] होगा।

बाकर के जवाब ऐसे माक़ूल और मुदल्लल[3] थे कि माँ को सिवाए इसके कि मुकद्दमे को मिर्ज़ा आबिदहुसैन साहब के फैसले पर महमूल करें[4], कुछ कहते न बन पडा।

शब को जब मिर्जा साहब खाना खाने के लिए घर मे तशरीफ लाए तो कुल वाकिआत मिन व अन[5] उनसे बयान हुए। बाकर की राए को मिर्जा साहब ने बहुत पसन्द किया। दूसरे दिन मिर्जा फिदाहुसैन को नौकरी पर से बुलवा भेजा। निशेबो-फराज[6] समझा के इस अम्र पर आमादा किया कि वह अपने बीबी बच्चो को उस जगह जहाँ वह मुतअय्यिन[7] थे, ले जायँ।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन का जिस जगह तअय्युन[8] हुआ था वह हेडक्वार्टर से पचीस मील के फासले पर था। उस जगह पर एक डाक बंगला था। उसी के शागिदपेश.[9] के मुत्तसिल[10] एक छोटा सा सायबान मुहर्रिर के रहने के लिए बना हुआ था। मकान

१ सभ्य २ लज्जा ३ तर्कपूर्ण ४ भार छोड़ें ५ ज्यो के त्यों ६ ऊँचनीच
७ नियुक्त ८ नियुक्ति ९ नौकर-चाकरों १० पास।

से मिली हुई चौकीदार की कोठरी थी। थोडी दूर के फासले से एक बारिक मजदूरो के रहने के लिए बनी हुई थी।

इजीनियर साहब ने मजीद इनायत से पचास रुपये की मजूरी मुहर्रिर के मकान की मरम्मत और ज़रूरी तब्दीलियो के लिए करके तहवील सरकारी से वह रुपया मिर्ज़ा फिदाहुसैन को दिलवाया।

यह एक खास किस्म की अयानत थी जो मिर्जा साहब ने अपनी नौकरी के जमाने मे बहुत कम की होगी। मिर्जा साहब यह रुपया अपने पास से अदा करने पर बड़ी ख़ुशी से राजी हो जाते, मगर सरकारी मकान था, उसमे किसी किस्म के जाती मसारिफ के यह मजाज[1] न थे।

खुलासा तकरीर यह है कि मिर्जा फिदाहुसैन की बीबी, लड़की और लडका (यानी मियाँ जाकिर) इस वाकिए के तीसरे-चौथे रोज इजीनियर साहब के बगले से रुख्सत होके एक बैलगाडी मे सवार होके रवाना हुए।

जिस दिन जाने की तैयारी हो रही थी उस दिन मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी ने सुबह से बकना और बडबडाना शुरू किया—

१ आख़िर मियाँ से कहके निकलवा दिया ना। अब देखिए किस जँगले मे जाके रहना पडता है। शेर खाता है या भेडिये खाते हैं। इस बुढापे मे देखिए क्या लिखा पूरा होता है।

२ ऐ है लोगो! क्या बुरी आदत है। जरा सी बात हुई और फुस से मियाँ के कान मे फूंक दी। जब आदमी एक जगह रहता-सहता है तो लडाई-भिडाई भी होती है। ऐसी बाते कोई मर्दों के मुँह पर रखता है? निकलवा दिया तो क्या हुआ? हमे पड रहने भर को जगह न मिलेगी? आदमी इतना भी न इतराए। गुरूर खुदा को भी पसन्द नही। क्या हम मकान सर पर उठा ले जाते। और मकान भी मुआ मुफ्त का। अगरेज का बनवाया हुआ। कुछ किराया देना पडता है? ख़ैर कोई खफा हो जाए हमारा ख़ुदा खफा न हो। कोई न कोई जगह रहने को मिल ही जायगी। क्या मुर्दो को जगह जिन्दो को नहीं। परदेस का वास्ता। यहाँ दो आदमी मिल-जुल के रहते थे। दुख बीमारी मे सब तरह का आराम मिलता। मगर वह तो बाज़े लोगो को अकेले रहने की आदत है। दो से तीसरा आँख मे ठीकरा, है-है क्या बुरी आदत है! ऐसे भी लोग होते हैं जिन को चार आदमियो की आबादी नही अच्छी लगती, आदम-बेजार। यह सब बाते मिर्जा आबिदहुसैन की बीवी अपने कानो सुनती रही मगर एक कान गूंगा कर लिया, एक बहरा। खुलासा यह कि मिर्जा

---

१ अधिकारी।

फिदाहुसैन की वीवी सवार हो गई । मिर्ज़ा फिदाहुसैन को इस अलाहिदगी का ज़रूर मलाल हुआ। इस ख़याल से कि तनख्वाह् कलील थी। मियाँ कुल इख़राजात के वार से सवुकदोश थे। सिर्फ अपने दम की फिक्र थी। अब सारे घर का ख़र्चा और वही पन्द्रह रुपये। मगर इन मसलहतो को उनकी वीवी क्या समझता थी और अगर समझती भी थी तो उनकी जवान कव मानती थी !

अलकिस्सा मिर्जा फिदाहुसैन साहब ने अपने बीवी-बच्चो को उस मकान मे उतारा। उस मकान को देख के बीवी वहुत घवराई । एक दिन वह था कि इन्जीनियर साहब के वगले को यह नाम रखती थी। आय हाय ! यह भी कोई मकान है-जिसमे अंगनाई नही। कमरो मे घुटे वैठे रहो। इस मकान मे छोटी सी अगनाई जरूर थी, मगर नीची छतें, तंग मकान, दरवाजे से झाँक के इधर-उधर देखा। कोसो तक का जगल था। भला शहर के रहने वालो खुसूसन औरतो का ऐसी जगह क्या दिल लगता। कुछ दिन रहे गाड़ी पहुँची थी। सरेशाम तो विल्कुल ही दम कलक करने लगा[१]। रात को तीन वजे तक मारे ख़ौफ के नीद न आई।

दूसरे दिन ज़िन्दगी का सहारा उसी तरह हुआ कि चौकीदार की जोरू मुशी की वीवी से मिलने आई। उसने ख़ूव घुल-मिल के वाते की, सौदे सुलफ का हाल भी उससे दर्याफ्त किया। या यो चलिये कि आप ने कही उससे कहा कि मेरे पास पान नही। एक दो पैसे के पान मगवाए। मालूम हुआ कि एक गाँव यहाँ से तीन चार कोस के फासले पर है। वही से गेहूँ, चावल, दाले, नमक ख़रीद करके आता है। पान भी वही मिलते है। मगर वाजार के दिन गोश्त अठवारे मे एक मर्तबा मिलता है, वह भी अगर आदमी वक्त पर पहुँच जाय; नही तो बिक जाता है। इतने मे मिर्जा फिदाहुसैन वाहर से आए। मक्का की जोरू घूँघट से मुँह छिपाए वाहर चली गई। मिर्जा साहव अपनी वीवी की वद आदतो से वाकिफ थे और मिर्जा आविदहुसैन के घर से निकलने का गुस्सा उनके दिल मे भरा हुआ था। मक्का की जोरू को देखते ही उस दिन की तस्वीर साफ उनकी आँखो मे फिर गई जिस दिन मक्का की जोरू से फक्कड़ होती होगी। मगर उस वक्त उन्होने छेडना मुनासिब न जाना। वात दिल मे लिये रहे। वाहर जाके दो एक मर्तबा खयाल आया कि मक्का को समझा दें कि अपनी जोरू को घर मे न जाने दे। मगर कुछ कहते-सुनते न वन पडा। आख़िर वात गई गुजरी हुई। दूसरे दिन मकान की मरम्मत के लिए मजदूर लगाये। पर्दे की वजह से सख्त तकलीफ हुई। डाक वगला ख़ाली पडा था। वीवी वच्चो को चन्दरोज के लिए उसी मे उठा ले गए। यह बंगला बहुत सुथरा

१ व्याकुल होने लगा।

और जरूरियात के असबाब से आरास्ता था। बीच के हाल मे दरी का फर्श था। दर्मियान मे एक मेज लगी थी। चार पाँच कुर्सियाँ रखी थी। पहलू के दोनो कमरो मे बहुत ही उम्द नेवाडी के पलग लगे थे। किनारे एक मेज लगी थी। उस पर एक सन्दूकच सिंगारदान मय आइने के रखा हुआ था। एक तश्तरी मे साबुन रखा था। कंघी रखी थी। मेज के खाने मे कई सफेद तौलिये रखे हुये थे।

मिर्जा फिदाहुसैन की बीवी यह सामान देख के बहुत खुश हुई। मियाँ से कहने लगी आखिर जो तुम वहाँ कलकत्ते मे पडे हुए हो, यही आन के क्यो नही रहते।

मिर्जा फिदाहुसैन—यह हमारे रहने के लिए नही है। इसमे खुद मिर्जा साहब आके उतरते हैं या जब कोई अगरेज दौरे पर आता है तो वह रहता है।

बीवी—आजकल तो बिलकुल खाली पडा है। भाई साहब जब दौरे पर आएँगे, रात की रात सो रहेगे। और अगर दो एक दिन रहेगे तो क्या हर्ज है। जब अगरेज कोई आने वाला होगा, बगला खाली कर देना। उसी घर में चले जायँगे। कोई हमेशा थोड़ा ही रहेगा। रात ही रात रह कर चला जायगा।

मियाँ—यहाँ तुम्हारा रहना मुनासिब नही। जो मकान रहने के लिए दिया गया है उसी मे रहना चाहिए।

बीवी—तुम्हारे कहने से मुनासिब नही। अच्छा खासा बगला छोडके वहाँ मुर्गियों की ढाबली मे जाके रहे।

मियाँ—मुर्गियो की ढाबली हमारी तकदीर मे हो तो बंगले मे हम क्योकर रह सकते हैं ?

बीवी—तुम रहो मुर्गियो की ढाबली मे। हम तो नही रहेगे। देखें हमे कौन निकाल देता है। छोटे भइया का मिज़ाज इस तरह का नही। मैं खूब जानती हूँ। बीवी उनकी है विस की गाँठ। और एक वह मुआ फितना बाकर ठीक अपनी माँ पर पडा है। ना साहब। बाप इस तरह का नही। अगर उनका बस होता तो कभी हमको जुदा न होने देते। मगर ज़रा नेक आदमी है। बीवी से डरते हैं। जितने नेक आदमी है वह बीवियो से डरते है, बीवियो के कहे पर चलते हैं। और जितने मुए बद मर्द होते है वह बीवियो पर जूता तेज रखते हैं। इस बारे में मैं छोटे भइया को हरगिज बुरा नही कह सकती। जो चाहा छोटी भाभी ने किया। ज़रा चार पैसे हो गए तो इतराती है। वह दिन भूल गए जब दिन सुइयाँ भोकती थी तो रात को रोटी नसीब होती थी। सच है अपने दिन किसी को याद रहते हैं !

मियाँ—छोटी भाभी तो विस की गाँठ नही। यह तुम्हारी जबान कहीं चैन से न रहने देगी। मैं सब तुम्हारी हरकतें सुन चका हूँ। बस अब उन बातो को

जाने दो। तुमने मुझको कही का न रखा। छोटे भइया ने जिस वक्त मुझसे अलाहिदः होने को कहा है उस वक्त उनकी आँखो में आँसू भर आए थे।

बीवी—मैं तो खुद ही कहती हूँ कि छोटे भइया का कोई कुसूर नही। जो किया वाक़र ने और वाकर की माँ ने।

मियाँ—वाकर तो ऐसा नेक लडका है कि दुनिया जहान के ऐसे लडके हो। माशा अल्लाह इस सिन मे क्या लियाकत पैदा की है।

सामने मियाँ ज़ाकिर बगलों मे हाथ दिये खडे है। एक यह मरदूद लूँबड़ा इतना वडा हो गया है और बात करने की तमीज नही। मियाँ जाकिर ने जो यह देखा कि अव्वा जान अम्मा से लडते-लड़ते अव मेरी तरफ ढुले है, चुपके से बाहर खिसक गए।

वीवी—वाह वडे लूँवड़ा कहने वाले। तुमसे मैंने लाख दफ़ा कह दिया कि तुम मेरे वच्चो को हौंसा मत करो। जैसे उन्होने पाल-पाल के बडा किया है। बाकर की तारीफें करते हो। ज़ाकिर मे क्या बुराई। पढना-लिखना तकदीर से। बाकर-पढा क्या है? वही गिट-पिट अगरेज़ी कुछ पढ़ा हो मगर इतने सिन मे वह गुरूर है कि माज अल्लाह यह सारी बातें माँ की है। बावा बेचारे तो जब घर मे आते थे मुझे झुक झुक के सलाम करते थे। साहबजादे जो आए तो न सलाम अलैक न किसी से पूँछना न गछना। हाँ, अम्मा के कलेजे मे वेशक घुसा रहता है।

मियाँ—वाकर क्या जाने तुम कौन बला हो जो तुम्हे सलाम करता। वचपने से वह वाहर रहा। किसी अजीज कुनवे को उसने देखा होता तो वह जानता।

वीवी—अच्छा, वह मैं तो वदजवान। मगर तुम अपनी ज़वान को देखो (तुम कौन बला हो!) तुम खुद बला, भूत, पलेत हो गे!

मियाँ—अच्छा, मैं ही सही। मैंने तो एक बात कही। बाकर तुमको क्या जाने?

वीवी—अच्छा इससे क्या है। तुम वाकर की और उसकी माँ की गुलामी करो। हम नही करते।

मियाँ—अगर हम अशरफ[१] है तो जरूर बाकर की और बाकर की माँ बल्कि उनके घर के गुलामो तक की गुलामी करेंगे। छोटे भइया ने तो हमारे साथ वह इहसान किया है कि तमाम उम्र उस बारे मे सर नही उठा सकते। एक तुम बे-इहसानी हो के छोटे भइया के वीवी-बच्चो से जलती हो।

वीवी—मुई पन्द्रह रुपल्ली की नौकरी के लिए तुम जूतियाँ खाओ, और किसी को क्या गरज है। हम तो यह ख़याल करते हैं कि आख़िर अजीज कुनबा होता

[१] कुलीन, ख़ान्दानी।

किस लिए है। एक से एक का काम निकलता है। दूसरे वह ऐसा इहसान ही क्या किया जिसके लिए तुम विछे जाते हो। यही ना पन्द्रह रुपल्ली का नौकर करा दिया। फिर शहर छुडवा दिया, घर छुडवा दिया, वार छुडवा दिया। और कुछ तनख्वाह उन्हें अपनी गिरह से देनी पडती है ? सरकार में एक इस्म[१] लगा दिया है। कुछ अपने पास से देते तो एक वात थी।

मियाँ—तुम तो वेमग्जी[२] हो। अपने पास से जहाँ तक मक्दूर[३] था दिया। पचास रुपये नकद लखनऊ जाते वक्त दिये थे। यहाँ इतने दिनो सारे घर का वोझ-वार उठाया और क्या कोई अपना घर लुटा देता है।

वीवी—तुम्हारी भी क्या वातें हैं। कभी कुछ कहते हो, कभी कुछ कहते हो। तुम तो कहते थे कि वह रुपये पढवाई के दिये थे। फिर उसका इहसान क्या ?

मियाँ—लाहौल विला कूवत। क्या अक्ल है। अरे पढवाई भी क्या कोई हक है। देने का एक वहाना था। और अगर पढवाई के नाम से देते तो मैं लेता ? वच्चो के नाम से दिये थे इसलिए लेना पडा।

वीवी—अच्छा तो अगर वच्चों के नाम से दिये थे तो एक दिन के साठ दिन हैं। माशा अल्लाह उनके आगे भी तो लडकी है। जव लड़की की शादी होगी, हम भी एक चाला कर देंगे। खुदा देगा सौ रुपये का जोडा पहना के घर भेजेंगे।

मियाँ—लडकी के चाले का क्यो ज़िक्र करती हो। यह क्यो नही कहती कि छोटे भइया को सात पार्चे का ख़िलअत[४] देंगे।

वीवी—फिर क्या हुआ। वह तुम से छोटे है। अगर उनको भी कुछ दोगे तो क्या इन्कार कर सकते है ?

मियाँ—रोटी खाने को नसीव नही और छोटे भइया को सात पार्चे का खिलअत देंगे।

वीवी—तो क्या ख़ुदा को देते हुए देर लगती है ?

मियाँ—तुम्हारे गुन ही ऐसे है कि ख़ुदा तुमको देगा।

वीवी—हाँ फिर हम तो वुरे है। अच्छा फिर अव कोई अच्छी सी ढूँढ लाओ। और उसे छोटी भाभी की लौडीगरी मे दे दो।

मियाँ—अच्छा, खुलासा यह कि तुम इस वँगले मे नही रहने पाओगी।

वीवी—फिर तुमने वही वात निकाली। हम तो तुम्हारी ज़िद से यही रहेगे।

मियाँ—तुम इस तरह की वाते करती हो जैसे तुम्हारे वाप का मकान है या मेरे वाप का। हम तो यही रहेगे, क्या जवरदस्ती है। झोटा पकड के वाहर निकाल दी जाओगी।

---

१ नाम चढवा दिया २ बुद्धिहीन ३ सामर्थ्य ४ भेंट में पोशाक।

बीवी—यह तुम हँसी-हँसी मे बाप तक पहुँच जाते हो। तो अंगरेज़ हमारे बाप ठहरे और झोटा पकड के निकाली जायँ तुम्हारी अम्मा-बहनियाँ। बस मुझसे इस तरह के कलाम न करना। नही तो मुँह पीट लूँगी।

मियाँ—मैंने अपने बाप को भी कहा, इसमे बुरा नाहक मानती हो और मेरी अम्मा-बहनियाँ जब किसी के घर मे ढई[1] देंगी तो जरूर निकाली जायँगी। बल्कि जिस तरह तुम कहती हो उसी तरह। और यह धमकी है कि मुँह पीट लूँगी, तुम्हारा मुँह दुखेगा। मेरा क्या नुकसान है।

मियाँ की तकरीर सुन के बीवी ऐसी खिसियानी हुईं कि सचमुच उन्होने दो-चार तमाँचे अपने मुँह पर लगाए और चीख़ना शुरू किया। मिर्जा फिदाहुसैन तो इन हरकतो से वाकिफ थे। उनको कुछ जियाद तअज्जुब नही हुआ मगर बाहर मक्का चौकीदार और कई मजदूर जो बँगले के पास आम के दरख्त के नीचे चिलम उड़ा रहे थे, वह क्या समझे कि बँगले मे साँप निकला है। अपने अपने लट्ठ सभाल के बँगले के बरामदे मे आ खडे हुए।

"मुंशी जी ! क्या सरप[2] निकला है ? जरा पर्दा कर दीजिये।" मिर्जा फिदाहुसैन ने सबको ब लतायफुलहियल[3] टाल दिया।

अलकिस्स बीवी अपनी जिद करके उस बँगले मे रही और चार ही दिन मे बँगले को हैसियत से बे-हैसियत कर दिया। जाबजा दीवारो पर पीक के छपक्के, दरी पर पतीलियो के पेंदो की स्याही के निशान, तेल के चकत्ते। दोनो पलँगो को लडको ने कूद-कूद के दो ही दिन मे झूला कर दिया। सिंगारदान का शीशा चकनाचूर कर दिया। दरवाजो के कई शीशे तोड डाले। फर्राशी पखा जो हाल मे लगा था उसको बी हुरमुजी और मियाँ जाकिर ने झूला बनाया। एक दिन वह पखा टूट के गिरा। दोनो को सख्त चोट आई। कुर्सियो मे तो शायद ही कोई बची हो। मेज़ो की वार्निश लबालब पानी के कटोरे रखने से जाबजा ख़राब हो गई। तौलिये सब के सब सालन भरे हाथ पोछ पोछ के फलीते कर दिये। गरज कि दस ही बारह दिन मे डाक बँगला और उसके असबाब को बिलकुल तहस-नहस कर दिया। उसी ज़माने मे बडे इजीनियर साहब दौरे पर आए। इस जरूरत से बँगले को जल्दी-जल्दी ख़ाली करना पडा।

साहब ने आके बँगले का जो यह हाल देखा, बहुत ही नाखुश हुआ। मिर्जा फिदा-हुसैन को बुलवाके बहुत कुछ सख्त व सुस्त कहा। दस रुपया जुर्माना किया। और मिर्जा आबिदहुसैन साहब को एक चिट्ठी उनकी शिकायत की लिख भेजी। उसका

१ धरना २ सर्प, साँप ३ बहाने बनाकर।

मजमून यह था कि मुर्हरिर जो आपने नौकर रखा है, सख्त नालायक है। मालूम होता है कि उसने अपने खानदान को डाकवँगले में लाके रखा है। इस वजह से वँगला और बँगले का असवाब विलकुल खराव हो गया है। हमने फिलहाल दस रुपया जुर्माना मुशी पर किया और आइन्द अगर इस किस्म का कुसूर उससे सरजद होगा[1] तो उसको मौकूफ[2] कर देगे। इत्तलाअन आप को तहरीर किया गया।

मिर्जा आविदहुसैन को उस चिट्ठी के देखने से जिस कद्र मलाल हुआ, उसका अन्दाज नही हो सकता।

इस वाकिए के वाद मियाँ-वीवी मे कियामत की जग हुई मगर उस तफ़सील को व लिहाज तूल कलम-अन्दाज करते है।

मक्का की जोरू से घर के काम-काज मे वहुत मदद मिलती थी। आटा भी वही पीस देती थी। उसका शौहर मक्का सौदा सुल्फ ला देता था मगर उसमे भी आखिर एक दिन खूव फक्कड हुई। मक्का ने अपनी जोरू को उनके घर मे आने-जाने को मना कर दिया।

इस अमना मे मुहर्रम करीव आ गया था। मुहर्रम से पहले मिर्ज़ा फिदाहुसैन ने एवजी दे के एक महीने की रुख्सत ली। वीवी वच्चो को घर पहुँचाया। आप जहाँ पढ़वाई पर जाते थे वहाँ गए और वहाँ से पलट करके फिर अपनी नौकरी पर वापिस आए। इसके वाद मिर्जा फिदाहुसैन एक अर्से तक मुलाजिम रहे मगर वीवी को वुलाने का नाम न लिया। अगर्चे तरह-तरह की तकलीफे थी। मगर यह सव उन्होने गवारा की। सख्ती झेल गये। आदमी कारगर सावित हुए। इसलिए ववतन फवक्तन[3] तरक्की होती रही। आखिर पचास रुपये के सव ओवरसियर हो गये।

ज़ाकिर को होनहार देखकर मिर्जा साहव ने रख लिया था। लडका तवियत-पज़ीर[4] था। चन्द रोज के वाद कुछ थोडा पढ-लिख के ठेकेदारी का काम करने लगा। जवान होते-होते वहुत सा रुपया कमाया। मिर्जा साहव की सुहवत की वरकत से अगर्चे यह खानदान वहुत ही तवाह था मगर वालाखर कुछ न कुछ दुरुस्ती हाल हो ही गई।

जिस जमाने मे मिर्ज़ा साहव पर मुकद्दमा काइम हुआ था, मिर्जा फिदाहुसैन ने हक कराबत[5] खूब अदा किया। वेचारे जमीन के गज वन गए थे। उस खुश-सलीकगी[6] मे पैरवी की कि आखिर मिर्जा साहब फतहयाव हुए और मुफ्सिदो[7] को जेलखाना हो गया।

---

१ घटित होगा २ बर्खास्त ३ समय-समय पर ४ सुधार अंगीकार करने वाला ५ सम्बन्धी का कर्त्तव्य ६ अच्छे ढंग से ७ उपद्रवियों।

मिर्ज़ा आविदहुसैन साहब जव अवध के एक जिले मे पहले-पहले मुलाज़िम होके गए, सराँ में उतरे, साहब से मुलाकात की। कार-सरकारी सिपुर्द हुआ। इस अर्से मे उस बस्ती के बहुत से लोग उनको पहचानने लगे। वजह इसकी यह थी कि छोटी बस्तियो में वनिस्वत बडे शहरो के बहुत जल्द शुहरत हो जाती है। दो एक साहब शरोफ-सूरत उस बस्ती के रहने वाले, जो अपने जाती मुनाफे के बाब में बड़े खुश-फिक्र[१] और दूरन्देश होते है, इनसे सराँ मे आके मिले। ऐसे लोगो को ख्वाहमख्वाह फिक्रे रहती है कि फलाँ उहदे पर कौन शख्स मुकर्रर हुआ। किसकी तब्दीली हुई, किसकी तरक्की हुई। किसका तनज़्ज़ुल हुआ। गरज़ कि यह लोग जिन्द· गजट होते हैं और लुत्फ यह कि न कही नौकर न चाकर। न कोई जाती मुआमिला-मुकद्दमा। मगर इन बातों से बडे-बडे मतलब निकाल लेते हैं। हुक्कामरसी[२] अहल-अमले से हस्व हैसियत रस्मोराह। यह खालिस औसाफ[३] हैं जो मिन्जुमला फजाइल[४] समझे जाते हैं।

मिर्जा साहब से जो लोग आके मिले उनमे से एक साहब फिदवी मियाँ खान्दानी रईस उस बस्ती के थे, मगर यह शरफ[५] इन्कलाबे रोज़गार[६] या मौरूसी गफलत[७] और इस्राफ[८] या खुद उनकी उलुल-अज़्मी[९] या शुरकाए तनाज़ो क़ानूनी[१०] या कारिन्दो की चालाकी की वजह से अब सिर्फ इजाफी[११] रह गया था। अगर्चे जमाने मासबक[१२] मे एक बुजुर्ग जमीदार थे, मगर अब सिर्फ बराए नाम एक मौजे का नम्बर आप के नाम से रह गया था। अगर्चे इस पर भी तसर्रुफ मालिकाना उनके एक कारिन्दे मुसम्मी शिवरतन का था जो कि दर हकीकत उसी घर का साख्त परदाख्त[१३] था मगर अब खुद उनसे बदर्जहा मुतमव्वल[१४] और उनकी कुल मौरूसी जायदाद का असली मालिक था। मगर बलिहाज इखलाक जाहिरी जो कि अक्सर किसी मसलहत पर होता है, वह भी अभी तक इनसे ब-मुरआत[१५] पेश आता था। असल वजह यह थी कि मौज़ा सहजनपूर जहाँ का वह असली बाशिन्द. था उसी के यह बरायनाम नम्बरदार थे, तहसील वसूल शिवरतन के पास थी। मगर रिआया अभी तक उन्ही का रोब-दाब मानती थी। और असामियो से दबा के कभी-कभी कुछ उन्हे भी वसूल हो जाया करता था। एक और वजह शिवरतन की उनसे दबने की यह थी कि शिवरतन एक छोटे दर्जे का आदमी था और बस्ती के लोग बसबब

---

१ काम बना लेने वाले २ हाकिमों में पैठ ३ सिफतें, गुण ४ खूबियाँ ५ भद्र पुरुष ६ रोजगारी उलट-पलट ७ पैतृक शिथिलता ८ फ़िज़ूलख़र्ची ९ ठाट-बाट १० साझेदारों-पट्टीदारों की मुकद्दमेबाजी ११ बराए नाम १२ बीते जमाने में १३ बनाया हुआ १४ सम्पन्न १५ लिहाज़ से।

उनकी कदीमी रियासत के इनको मानते थे और उसी खुसूसियत के लिहाज से हुक्काम और अहल-अमल तक उनकी रसाई व सहूलत[1] हो सकती थी। शिवरतन को उनसे वहुत मदद मिलती थी। इसलिए अक्सर मुकद्दमात मे सओी-सिफारिश, कहना, सुनना जो कुछ होता था वह उन्ही के जरिये से होता था। यह दवादविश[2], तमल्लुक[3] व चापलूसी जो अक्सर मौक़ो पर करना पडती थी, उसका तमाम फायदा शिवरतन को हासिल होता था। आपका मशा सिर्फ इस कद्र था कि लोग यह समझे कि फिदवी इलाक दार हैं, और फिदवी के कब्जे मे अभी कुल मौजे है और शिवरतन सिर्फ एक कारिन्द है। सिर्फ इस कद्र तफाखुर के तहफ्फुज के[4] वास्ते आप हर तरह की मशक्कते और सऊवते[5] गवारा करते थे। वस्ती मे जिस कद्र मकानात आपके वुजुर्गो के थे, वह अव शिवरतन के कब्जे मे थे और उनमे अक्सर अहलअम्ल रहा करते थे। उसका किराया शिवरतन माह व माह वसूल कर लेता था। अज वसके किराया लेना आप अपनी शान के खिलाफ समझते थे। लिहाज़ अगर कभी उमका जिक्र किसी मौके पर आया तो आप उससे तहाशी[6] फर्माते थे और शिवरतन को गाइवाना कलिमात ना-मुलायम[7] से याद फर्माते थे।

इस्म मुवारक आपका फिदाअली था। मगर इस नाम से वहुत कम लोग वाकिफ थे। लोग आपको अक्सर फिदवी मियाँ के नाम से जानते थे। आपका खुद यह वयान था कि फिदवी तखल्लुस है। मगर असल वजह यह थी कि इब्तिदाए साल मे आप इस लफ्ज को अपनी निस्वत वहुत इस्तेमाल फर्माते थे—मसलन "फिदवी हाजिर हुआ था" और "फिदवी गाएव हुआ" और "अर्ज फिदवी की यह है" "फिदवी आपका कदीमी नियाजमन्द है"। इस लफ्ज के कसरत-इस्तेमाल की वजह से लोगो ने आपका नाम फिदवी मियाँ रख लिया। पहले गाइवाना[8] और फिर विलमुशाफा[9] इसी इस्म से मौसूम[10] हो गये। आपने मसलहतन यही तखल्लुस अपना करार दे लिया। क्योकि आपके तखल्लुस की (जो अव किसी को याद भी न था) शुहरत न होने पाई कि यह लकव मशहूर हो गया। ऐसी हालत मे उस तखल्लुस को वट्टा खाते मे डालकर दम-नकद यह तखल्लुस इख्तियार कर लेना अैन मसलहत थी।

मिर्जा आविदहुसैन के तकरीर की खवर जिले मे उनके आने से पहले आपको मिल गई थी। जिस दिन आप तशरीफ लाए, उसके दूसरे ही दिन आप सरा मे पहुँच गये। फिर मुलाकात कर लेना कितनी वडी वात थी।

---

१ सरलता से पैठ   २ दौड़धूप   ३ लल्लोचप्पो   ४ गौरव को काइम रखने के लिए   ५ मिहनत व कठिनाइयाँ   ६ विमुखता   ७ अनुचित सम्बोधनों से   ८ परोक्ष   ९ प्रत्यक्ष   १० नामवर।

मिर्ज़ा साहब चार बजे के बाद सरां में आके अभी बैठे ही थे कि आप नाज़िल हुए और भटियारी से दरयाफ्त करके बेतकल्लुफ़ मिर्ज़ा साहब के पास चले आये।

फिदवी—फिदवी आदाब अर्ज़ करता है।

मिर्ज़ा साहब—तस्लीम।

मिर्ज़ा साहब बहुत देराश्ना[1] थे। मगर इसका यह मतलब नहीं है कि वज़ा तहज़ीब के पाबन्द न हो। जब एक शरीफ सूरत इस तरह तअर्रुफ़[2] करे तो उससे बेरुखी क्यों करें।

"आइये तशरीफ लाइए।"

उस वक्त इत्तफ़ाक से भटियारा उस तरफ किसी ज़रूरत से आ निकला। उसने कहा—"फिदवी मियाँ सलाम।" इसी तरह कई शख्सो ने आप को सलाम किया, चलिए नाम बताने की भी ज़रूरत न हुई। मिर्ज़ा साहब को मालूम हो गया कि आप इस लकब[3] से मुलक्कब[4] हैं। इस पर भी मिर्ज़ा साहब ने अज़राह इहतियात[5] इस्म मुबारक दरयाफ्त किया।

फिदवी मियाँ—बस यही "फिदवी"।

मिर्ज़ा साहब—(किसी क़द्र तअज्जुब से) दुरुस्त।

फिदवी मियाँ—जी हाँ। वह असल हकीकत यह है कि नाम तो मेरा फिदा-अली है। मगर फिदवी तखल्लुस है। यही ज़बाँज़द हर कस व नाकस हो गया[6]।

मिर्ज़ा साहब—बहुत मुबारक।

फिदवी मियाँ—आपकी तशरीफ-आवरी[7] की खबर सुनके मैं बहुत मुश्ताक[8] था कि आप से मिलूं। इसलिए कि यहाँ हुक्काम और अह्ले अमलः मे कोई साहब ऐसे नही है जो फिदवी को न जानते हों।

मिर्ज़ा साहब—मैं जानता हूँ कि अक्सर साहबों को इस किस्म का शौक होता है।

फिदवी मियाँ—जी हाँ। शौक क्या, एक लत सी हो गई है। आप जानिए यारबाशी मे तो वह मज़ा है कि जहाँ इसका चस्का पड़ा, फिर नही छोड़ता।

मिर्ज़ा साहब—सही है, जिसको जिस बात का शौक हो जाय। अगर इसमें तज़ीअ औकात[9] भी हो मगर इन्सान से बमुश्किल तर्क हो सकता है।

मिर्ज़ा साहब के इन बलीग फिक्रों[10] का मतलब या तो फिदवी मियाँ समझे नही या समझ-बूझ के तजाहुल आरिफाना[11] फ़र्माया। इसलिए कि मिर्ज़ा साहब तो कुछ ऐसे खुर्रे थे भी नही। आप तो ऐसे-ऐसे हुक्काम और अहलकारो से मिल चुके थे जो

---

१ देर में पहचानने वाले २ परिचय ३ उपाधि, उपनाम ४ उपाधि से विभूषित ५ सावधानी के लिए ६ छोटे-बड़े सबकी ज़बान पर चढ़ गया ७ शुभागमन ८ उत्कण्ठित ९ समय नष्ट होना १० अलंकारिक वाक्यों ११ जान बूझकर अनजान बनना।

रुखाई में शहरें आफाक[1] थे और फिदवी को इस बात का फ़ख्र था कि मिर्जा साहब क्या चीज थे, जेम्स साहब जो बेहूदा मुलाकातों से इस कद्र नाफिर[2] और हारिब[3] थे कि जो कोई बिला वजह उनकी मुलाक़ात को जाता था, डंडा लेके पीछे दौडते थे; उनसे भी फिदवी मियाँ मिल चुके थे। और जब तक वह जिले में रहे बरावर हर दोशम्बे को सलाम के लिए जाया किये। अला हाजलूकियास[4] डिप्टी तहव्वरहुसैन खाँ साहब जिन्होने अपने बंगले पर तख्ती लिखके लगा दी थी कि कोई मेरी मुलाकात को न आये, वहाँ भी फिदवी पहुँच गये। और आख़िर इस कद्र रस्म वहम पहुँचाया कि उनका पेचवान पिया। उनके ख़ासदान से पान खाया।

फिदवी मियाँ—(मिर्जा आबिदहुसैन से) यहाँ सरा में तो आपको तकलीफ होगी ?

मिर्जा साहब—जी हाँ। अभी कल तो आया हूँ। मकान तलाश करके उठ जाऊँगा।

फिदवी मियाँ—फिदवी के मकानात ला-तादाद ला-तुहसा[5] है। खाली पड़े हैं, जो पसन्द आए उसमें उठ चलिए।

मिर्जा साहब—(किसी कद्र तअम्मुल[6] के बाद) किस किराये के मकानात होगे ?

फ़िदवी मियाँ—(मुस्करा के) आपको मालूम नही। देहात में इस बात का ऐब है।

मिर्जा साहब—मगर मैं इसको मायूब[7] समझता हूँ कि बिला किराया किसी के मकान पर रहूँ।

फिदवी मियाँ—मगर जब किसी गैर का मकान हो ना। मिर्जा साहब इसका जवाब देने ही को थे कि मेरी आपकी कब की शनासाई[8] है, मगर इसी असना मे उनसे एक और साहब मिलने को आ गए।

पंडित जानकीप्रसाद साहब उनके हम-मक्तब[9] दोस्त जो इस ज़िले मे थानेदार थे, मिर्जा साहब उनसे मुख़ातिब हो गए। फिदवी मियाँ से उनसे हस्ब मामूल बे-तकल्लुफी[10] की मुलाकात थी, बल्कि कुछ मज़ाक़ भी फीमाबैन[11] होता था। मकान का तज्किर: पडित साहब के सामने भी हुआ। पडित साहब ने भी यही कहा कि फ़िदवी मियाँ के कई मकान ख़ाली हैं, कोई उनमे से पसन्द करके उठ जाइए। एक ओहदेदार पुलीस के कहने से मिर्जा आबिदहुसैन को यह तो इत्मीनान हुआ कि फ़िदवी मियाँ काबिल एतमाद शख्स हैं।

मिर्जा साहब—मगर आप फर्माते हैं कि मैं किराया न लूंगा।

---

१ लोकप्रसिद्ध　२ घृणा करनेवाले　३ दूर भागनेवाले　४ इसी तरह　५ असंख्य-असीम　६ सोच-विचार　७ अशोभन, बुरा　८ जान-पहिचान　९ सहपाठी　१० निस्संकोच　११ आपस में।

पंडित साहब—अच्छा उठ जाइए। हिसाबे दोस्ताँ दर-दिल[1] का मुआमिला हो जायगा।

मिर्ज़ा साहब इस मुअम्मः[2] को न समझे, मगर चुप हो रहे। इस असना में फिदवी मियाँ किसी जरूरत से उठ गए।

पंडित साहब ने असल हकीकत मिर्ज़ा साहब के जेहन-नशीन कर दी। मालूम हुआ कि मकान का असल मालिक शिवरतन है। वह आपके घर का कारिन्दः था। इसलिए आप उसको माले-ममलूक[3] समझ के अपना माल समझते हैं।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन—मगर यह तो कहिए कि यह हज़्रत मेरे औकात मे तो हारिज[4] न होगे। क्योकि आप जानते है, इस किस्म की मुलाकातों से घबराता हूँ।

पडित साहब—कुछ ऐसे हारिज न होगे। मकान मेरे देखे हुए है। उनमे से वड़ा मकान जो आजकल खाली है, उसमे पहले तहसीलदार साहव रहते थे। आपकी किस्मत से उनकी तब्दीली हो गई। फौरन ले लीजिए, नही तो कोई न कोई ले लेगा और आपको अफसोस होगा। इनके हारिज होने की यह सूरत है कि इस क़िस्म के लोग जो बहुत लोगों से मिलते रहते हैं, वह किसी क़द्र मिजाज-शुनास[5] हो जाते है। वह आयेंगे जरूर। ख्वाह उनके मकान मे रहिए, ख्वाह न रहिए। मगर जव आप मुह न लगायेंगे, दो चार मिनट ठहर के चले जाया करेगे। आपका हरज ही क्या होगा। दूसरे एक फायदा भी होता है। वह यह कि जिस चीज की ज़रूरत हो (मुस्करा के) ख्वाह कैसी ही ज़रूरत क्यों न हो, यह मोहय्या कर देते है। और लुत्फ यह कि वकिफ़ायत। मिर्जा साहब पडित जी के इस मौके पर मुस्कराने से किसी कद्र वदजन हो गए थे मगर पडित जी ने अपनी तकरीर को इस तरह जारी रखा।

पडित जी—मसलन अब हाल फिलहाल तो आपको घोड़े की ज़रूरत होगी, वह आपकी मारफत बहुत जल्द और किफा़यत से मिल सकेगा। माहवारी गल्ला, गुड़, घी, राव जिस शै की जरूरत होगी इनकी मारफत मिल जाया करेगी। असवाव ज़रूरी मिस्ल पलंग, मेज, कुर्सियाँ, दरियाँ, बर्तन, वासन, यह सब इन ही से मगवाइयेगा।

मिर्जा साहव—मगर इन सबका मुआविजा क्या देना होगा ?

पडित साहव—कोई मुआविजा नही। सिर्फ वही चन्द मिनट हर्ज औकात जो उनके आने से होगा। या अगर कुछ कमीशन वगैरह लेते हो तो उसका इल्म नही।

मिर्जा साहव—अच्छा। अगर कमीशन ले के उम्दः शै वहम पहुँचा देते हैं तो यह कुछ ऐसा मायूब नही।

पडित जी—हाँ बस यही समझ लीजिए। मेरा जहाँ तक खयाल है आपको उनकी ज़ात से कोई ज़रर नही पहुँच सकता। मुमकिन है कुछ फ़ायदा हो जाय।

---

१ दोस्तों का हिसाब दिल ही दिल में २ पहेली ३ सेवक की सम्पत्ति ४ समय तो बरबाद न करेंगे ५ स्वभाव के पारखी।

मिर्जा साहव—वाहमी फायदा-रसाई[1] तमद्दुन[2] का असली उसूल है। इसका मैं मुन्किर नही हूँ। मगर वह मुआमलात जिनमें तरफैन से गैर काफी मुआवज़ः[3] पर कोई शै एक दूसरे की तरफ मुन्तकिल की जाय या कोई काम किया जाय, उसको मैं नाजाइज़ समझता हूँ।

पंडित जी—यह दकीक मन्तिक[4] तो मेरी फ़हम[5] से बाहर है। मेरे कहने का खुलासा यह है कि मकान ले लीजिए। फिर जिस तरह चाहे उनसे मुआमिलत रखिएगा।

मिर्जा आविदहुसैन—पंडित साहव असल अम्र तो यह है कि ऐसे शख्स की मार्फत मकान लेना भी किसी कद्र मस्लक-एहतियात[6] से दूर हैं। मगर आप फ़र्माते है कि और कोई मकान नही मिल सकता और असल मुआमिलः एक शख्स सालस[7] से है कि जिसका नाम आपने लिया था ?

पंडित जी—शिवरतन !

मिर्जा साहव—शिवरतन से लिहाजा मकान लिये लेता हूँ, लेकिन इनके इस अजीव इखलाक की वजह से मुझे ख्वामख्वाह तअल्लुक खातिर हो गया, लखनऊ जो कि मेरा वतन असली है वहाँ के आमियानः अतवार व औजार[8] से मुझे नफ़रत है। मैं समझता था कि वाहर जाके ऐसे लोगो से दूर रहूँगा, मगर यहाँ भी वही सामना हुआ।

पंडित जी—जी हाँ। क्या किया जाय। वाहमी मर्दमाँ वेवायद साख्त[9]।

उसके वाद पंडित जी रुखसत होने को थे कि फ़िदवी मियाँ फिर नाजिल हो गये और आते ही कहा—पडित जी ! फिर, मकान देख लीजिए।

मिर्ज़ा साहव ने फिर जरा तअम्मुल किया। लेकिन पंडित जी भी फ़िदवी के हमजवान[10] हो गए। गरज़ कि मिर्ज़ा साहव भी उठ खड़े हुए।

पडित जी की टमटम सरा में मौजूद थी। मिर्जा साहव और पंडित जी दाहिने-वाएँ और अक़व मे फिदवी मियाँ और एक हवलदार जो पडित जी के साथ था वैठ गये। गाड़ी रवाना हुई। रास्ते मे फिदवी मियाँ और हवलदार मे वड़े तपाक से वातें होती जाती थी। जिस कद्र हवलदार पडित जी की हमराही की वजह से लिहाज करता था उसी कद्र फिदवी मियाँ वेवाक[11] थे।

असनाए राह मे विला मुवालिगः सौ दो सौ आदमियों ने फिदवी मियाँ को सलाम किया होगा।

फिदवी मियाँ सलाम ! फिदवी मियाँ सलाम। यह सदाएँ दस-दस वारह-वारह कदम के फासले से सुनायी देती थी।

---

१ पारस्परिक लाभ की युक्ति २ नागरिकता ३ वदले में ४ सूक्ष्म तर्क ५ समझ ६ सावधानी की राह ७ तीसरे व्यक्ति ८ सामान्य कोटि के लोगो के ढंग-तरीको ९ ऐसे ही लोगों में मजवूरन गुजर करनी है १० स्वर में स्वर मिलाया ११ निःसंकोच।

सलामो की तरतीव यह थी कि जो मिला पहले उसने थानेदार साहव को सलाम किया। माथे पर हाथ रखके और वहुत मुअद्दवाना[1] झुक के। यह अव्वल दर्जे का सलाम था। दूसरे दर्जे का सलाम मिर्ज़ा साहव को किया। मगर वह भी विला सौत व सदा[2]। तीसरा सलाम इन लफ्जो के साथ हवलदार साहब सलाम। माथे पर अभी तक हाथ रहता था। चौथा सलाम आवाज़ बुलद के साथ फिदवी मियाँ सलाम !

फिदवी मियाँ का जवाव भी खुसूसियात के साथ होता था—भइया सलाम, महतो सलाम।

इस दर्मियान में कई देहाती रंडियो ने भी सलाम किया फिदवी मियाँ हर एक का नाम ले ले के सलाम का जवाव देते थे—वैवाजान सलाम, रसूलन सलाम।

हर सलाम के वाद फिदवी मियाँ मिज़ाज-पुर्सी को भी वाजिब समझते थे। और हर शख्स के साथ तर्जपुर्सिश[3] मे जिद्दत[4] होती थी।

गाडी उस मकान तक पहुँची जिसे देखना मजूर था। वाक़ई मकान काविल रहने के था। ज़नाना मकान पुख्ता, दो मज़िले। वाहर वैठने का मकान जिसे कसवाती ज़वान मे वैठक कहते है, निहायत ही माकूल और उसके सामने बड़ा सा अहाता था। उसमे एक तरफ कच्ची खपरैलें थी, गाड़ी, घोड़े और साईस, ख़िदमतगार वगैर. के रहने के लिए। जावजा कुछ दरख्त मुख्तलिफ किस्म के लगे हुए थे, मगर वहुत ही वेतुकेपन से। कुछ बेला-चवेली के झुण्ड, कुछ मेहदी की रविशे[5]। बाँस का फाटक लगा था। गरज़ कि मकान मिर्ज़ा साहव को पसन्द आया। शिवरतन भी उस मौके पर पहुँच गया था। एक स्याहफाम[6] सा आदमी, धोती वँधी हुई। ऊदी छीट की मिरज़ई पहने। उसी छीट की दोहरी टोपी। पावों मे चमडौदा जूता। गले मे एक वटुवा पड़ा हुआ। यह आपका दरवारी लिवास था। क्योकि उस वक्त आप वराहे रास्त कचेहरी से तश्रीफ लाये थे। थानेदार साहब और मिर्जा साहव के आने की खवर सुनके दौड़े चले आये। शिवरतन से किराये के वारे मे गुफ्तगू हुई। उस मौके पर फिदवी मियाँ ज़रा टल गए। सात रुपया माहवार पर वह मकान ले लिया गया। और उसी शव को मिर्ज़ा साहव का असबाव-सफर वहाँ आ गया।

दो पलंग, तीन कुर्सियाँ, फिदवी मियाँ की सरकार से विला तलव भेज दी गई और तौअ़नोकर्हन[7] मिर्ज़ा साहव को रखना पडी।

दरियाँ और क़ालीन मिर्जा साहब के हमराह थे। खाना पकाने के बर्तन भी काफी मौजूद थे। मकान की सफाई और मुख्तसर सामान की आरास्तगी मे फिदवी मियाँ की दख्लदर मा'कलात[8] होती रही। ऐसे लोग जो हर किसी काम में ख्वामख्वाह

---

१ अदव के साथ २ बिना बोले-पुकारे ३ पूछने के ढंग में ४ नयापन ५ पंक्तियाँ, क्यारियाँ ६ काले रंग का ७ विवश होकर ८ अनधिकार दखल देना।

दख़ील हो जाते हैं, उनमे एक ख़ास वस्फ होता है जिसे कस्रे नफ्सी[1] के सिवा और क्या कहा जाय। यानी इस किस्म के लोगों को दूसरो की इख़्तिलाफ से चन्दाँ मलाल भी नही; अगर्चे वह इख़्तिलाफ बुरे तेवरो से किया जाय। मसलन अगर उनकी राय हुई कि दरी इस तरह बिछाना चाहिए और पलंग यूँ लगाना चाहिए, और मेज का रुख यूँ रहे और दीवारगीरियो का वह मौका है, और दूसरे शख़्स की आसाइश का यह एहतमाम कर रहे हैं। इनमे से हर तजवीज को बिला दलील या यह अल्फाज कहके "साहब आप नही जानते" मुस्तरद[2] कर दिया, हर एक मे तरमीम[3] करदी, तो उनको न कुछ खिफ्फत[4] होगी न मलाल[5]। ऐसे ही हमारे साद दिल रईस, मौजा सहजनपूर, फिदवी मियाँ थे।

जब घर की सफाई और आरास्तगी से फरागत हुई और हर चीज अपने-अपने मौके से लगा दी गई, फिदवी मियाँ ने यह फर्माया—

लीजिए ओवरसियर साहब आपका मकान सज-सजा गया और अब जिस चीज की जरूरत हो वह हाजिर कर दी जाय। क्योंकि ख़ुदा के फ़ज्ल से सब कुछ मुमकिन है। फकत आपके इशारे की देर है।

मिर्जा साहब—आपकी इनायत काफी है। यह सामान भी मेरी जरूरतो से जियाद. है और जो कुछ ज़रूरत होगी अर्ज कर दिया जायगा। यह आख़िरी जुमला मिर्जा साहब ने इस ख़याल से कहा था कि, थानेदार साहब ने पहले ही कहा था कि घोडा फिदवी मियाँ की कोशिश से बहुत जल्द और किफायत से मिल जायगा, मगर फ़िदवी मियाँ को सिलसिला-कलाम के तूल देने का शौक था।

फिदवी मियाँ—ऐ तो फर्मा दीजिए ना। ताकि उसकी अभी से फिक्र की जाय। मिर्जा साहब के पास इत्तफाक से रुपया न था। उनको यह ख़याल हुआ कि अभी कहना क्या जरूर है। पहले रुपये की फिक्र हो जाय तो देखा जायगा।

मिर्जा साहब—अर्ज कर दूंगा।

फिदवी मियाँ—तो आप फर्माते क्यो नहीं? और चारपाइयो की जरूरत हो तो भिजवा दी जायँ। चीनी के बर्तन, पतीलियाँ, लोटे, घडे, मटके गरज कि जिस तरह लडके पहेली बुझवाते हैं, यह एक-एक चीज का नाम लिये जाते थे और मिर्जा नही-नही कहे जाते थे। उनकी सख़ावत[6] और सफाहत[7] पर अगर कोई और होता तो खिल-खिलाके हँस देता। मगर मिर्जा बहुत ही मुहज्जब[8] और मतीन[9] आदमी थे। उस पर भी मुतबस्सिम[10] हो गए। मिर्जा के तबस्सुम[11] से फिदवी मियाँ 'फिक्रे हर कस बकद्रे हिम्मतें ऊस्त'[12] कुछ और ही समझते थे। मिजाज के सादे, बेतकल्लुफ फर्माने लगे।

---

१ अतिशय विनयशीलता २ रद्द कर दिया ३ परिवर्तन ४ लज्जा ५ दुःख ६ दानशीलता, उदारता ७ तुच्छता (अति विनम्रता) ८ सभ्य-शिष्ट ९ गंभीर १० मुस्करा दिये ११ मुस्कान १२ हर आदमी का सोचने का तरीक़ा क़ाबिलियत के मुताबिक़ होता है।

फ़िदवी मियाँ—अच्छा तो इसमे तकल्लुफ क्या है, कोई पतुरिया बुलादी जाय। क्योकि उसमे हर्ज क्या है। आप नौजवान आदमी हैं। और फिर लखनऊ के रहने वाले। मिर्जा के कान इस किस्म की गुफ्तगू से आश्ना[1] न थे। यह एक खुश्क आदमी थे।

मिर्ज़ा साहव—जनाव आपने मेरे इख्लाक का गलत अन्दाज: किया। मै इस किस्म के मज़ाक का आदी नही। आपकी ख्वामख्वाह इनायतो का मैं मजवूरन ममनून[2] हूँ, आइन्द. मुझको ऐसे मज़ाक से मुआफ़ रखियेगा।

फिदवी मियाँ—(वज़ाहिर झेपके और खजलतज़द[3] सूरत वनाके दो तीन तमाँचे ज़ोर-ज़ोर से अपने गालो पर लगाके और दोनो कान मोड़के) तौव: ! तौव. ! खता हुई। मुआफ कीजिएगा। मैं नही जानता था कि आप मौलवी आदमी है।

मिर्ज़ा साहव—नही आपका क़ुसूर नही। यह इस ज़माने की तहजीव का क़ुसूर है। शायद आपको इसी तरह के लोगों से ज़ियाद. मिलने का इत्तफाक हुआ होगा, जो वेहूद: दिल्लगी, मज़ाक, या चौसर, गंजीफा वगैर: मे अपने औकात को ज़ाया किया करते हैं। अगर मैं मौलवी नही मगर तालिव-इल्म ज़रूर हूँ।

मिर्ज़ा अपनी नेक-नफ्सी[4] से फिदवी मियाँ की इस वात को दिल्लगी समझे थे हालाँकि फिदवी मियाँ का माफिज़्ज़मीर, हकीकत का मुशअ़र था, न मिजाज का[5] क्योकि आपकी ज़ात-वाला सिफात से यह फैज अक्सर मुलाज़िम पेशा लोगो को पहुँचता रहता था। इतना हम अपनी नेकनियती से कह सकते हैं कि इसमे कोई मुनाफअ़त[6] ज़ाती अज़ किस्म ज़र[7] फिदवी मियाँ को न थी। वल्कि उनका मजाक तवीअत इसी किस्म का वाकै हुआ था। जिले की कौन सी पतुरिया ऐसा थी जो आपकी ममनूनें-मिन्नत[8] और मुतीअफर्मा[9] न हो। एक तो इसलिए कि ज़मानें सर्वत[10] मे आपने विल्तखसीस[11] इस फिर्क: के साथ वहुत सलूक किया था। अक्सर वागात और आराजी आपकी अतीय. रंडियों के क़व्ज़े मे मौजूद थी। चार ही दिन का ज़िक्र है, छोटे साहव-ज़ादे छुट्टन मियाँ की तकरीव-ख़तन. मे दस वीघा जमीन वी वफातन को, वीस दरख्त आम के मय आराज़ी वी रसूलन को दिये थे। उसी तकरीव मे मौजा सहजनपूर रेहन हुआ था। यह सव औसाफ फिदवी मियाँ के मिर्जा साहव को मालूम होते रहे और उसी कद्र तनफ्फुर[12] उनके इख्लाक से वढता गया।

अगर्चे घोड़े की खरीद मे फिदवी मियाँ की राय शरीक रही और उसी तरह और मुआमिलात मे ख्वाही न ख्वाही इनका दखल रहा। लेकिन मिर्जा हर अम्र मे हत्तल-इमकान[13] उनसे दूर भागते थे। लेकिन फिदवी मियाँ की वज़ादारी से बईद था कि

---

१ परिचित २ कृतज्ञ ३ लज्जित ४ नेकदिली ५ मन की बात सचमुच यही थी, कोई बनावटी नहीं ६ लाभ ७ धन का ८ इहसानमन्द ९ हुक्म माननेवाली १० सम्पन्नता के समय, ख़ुशहाली में ११ ख़ास तौर पर १२ घृणा १३ यथाशक्ति।

मिर्जा साहब के पास जाना तर्क करते। बल्कि उनको एक तरह की मुहब्बत मिर्जा से हो गई थी। और कुछ ऐसा इख्लाकी दबाव पड़ गया था कि उनसे किसी कद्र डरते थे।

फिदवी मियाँ को कई मर्तबा मिर्जा के सामने अपने मुह पर तमाचे मारने और कान मोडने का इत्तफाक हुआ; इसलिए कि यह मौके पर बोल उठते थे। और जो अम्र मिर्जा की शान के खिलाफ़ होता था उस पर उनको डाँटते रहते थे। मसलन—

फिदवी मियाँ को यह मसल· मिर्जा की जात से तहकीक हुआ कि वह चीज जो अमूमन बालाई आमदनी कहलाती है, उसका लेना बिल्कुल हराम है।

फिदवी मियाँ सौम व सलात[१] की पाबन्दी और नाजाइज खाने-पीने की चीजो से इज्तनाब[२] करने को मौलवीयत[३] और जुह्दोवरअ्[४] खयाल करते थे। नाजाइज तरीको के इक्तिसाब मुन्फअ्त[५] करने को यह गुनाह ही न जानते थे बल्कि हराम समझते थे।

मिर्जा आबिदहुसैन से इनको यह भी मालूम हुआ कि शादी व्याह मे नाच-रंग या ईद-बकरीद मुजरा देखना, या वगैर मुजरा देखे पतुरियो को इनाम देना गुनाह है। फिदवी मियाँ को मिर्जा आबिदहुसैन की सुहबत से अक्सर ऐसे अमूर मालूम हुए जिनको यह नेकी समझते थे मगर दर हकीकत वह बदी थे। रफ्त. रफ्त· फिदवी मियाँ को मिर्जा साहब से वह एतकाद हो गया जो मुकल्लिद[६] को अपने मुज्तहिद[७] से या मुरीद[८] को अपने पीर[९] से होना चाहिए। मगर फिदवी मियाँ की आदतें इस हद तक खराब हो चुकी थी कि उनकी इस्लाह मुहाल थी। अह्ले अमल की खुशामद बेजा, सई व सिफारिश, झूठ बोलना, झूठी कसमे खाना, फह्श और बेतुके मज़ाक़, रातों को रडियो का दरबार, झूठे मुकद्दमो की इताअत, बद्माशो की हिमायत और इसी किस्म के लाखो मआइब[१०] उनमे मौजूद थे मगर इन सब मआइब के साथ एक वस्फ[११] भी था। वह यह कि खान्दानी शराफत नफ्स की वजह से तमा[१२] उनमे न थी। अगर्चे उस वस्फ के साथ एक ऐब भी था यानी असराफ[१३] जिसको लोग जिहालत से उलुल्-अज्मी[१४] कहते हैं। मिर्जा साहब उनके इस वस्फ़ को पहचान गये थे। मिर्ज़ा का यह खयाल था कि उनकी यह आदते किसी हद तक तर्क हो सकती है। बशर्ते कि किसी खास इख्लाकी क़ूवत से उनके नफ्स पर असर डाला जाय। मिर्जा ने तजवीज किया कि मजहबी जोश अगर आप की तबियत मे पैदा कर दिया जाय तो मुमकिन है कि उनकी उलुल्-अज्मी उनको इस तरफ मुतवज्ज[१५] कर दे।

फिदवी मियाँ के दो लडके थे एक निसारअली जिसका सिन चौदह बरस का, दूसरा अहमदहसन जिसका सिन सात-आठ बरस का था।

---

१ रोजः व नमाज २ परहेज ३ मौलवीयत, पण्डिताई ४ पाकीजगी ५ नफा कमाना ६ अनुयायी ७ सन्मार्ग-प्रदर्शक ८ शिष्य ९ धर्मगुरु १० अनेक दोष ११ गुण १२ लोभ-लालसा १३ फिज़ूलखर्ची १४ मरदानगी, दिल होना १५ अनुरक्त।

निसारअली आवारगी की हद तक पहुँच गया, मगर एक खास सिफ्त जो कसबात और देहात के लडको मे पाई जाती है यानी शर्म—अगर्चे वह हद् एतिदाल[1] से किसी क़द्र जियादः होती है—लेकिन वही उनकी दुरुस्ती का वाइस हो गई।

फिदवी मियाँ अपने लड़को की तालीम से गाफिल न थे। एक मौलवी साहब वर्सो से दरवाज़े पर नौकर थे। मगर लड़का गुलिस्ताँ का बाब औवल पढता था। कई साल हो चुके थे मगर उसके खत्म होने की नौवत न आती थी, और छोटा बगदादी कायदा सामने लिए बैठा रहता था। मिर्ज़ा साहब ने रफ्त. रफ्त. फिदवी मियाँ के मुआमिलात मे खानगी दखल देना शुरू किया और जिस कद्र मिर्ज़ा साहब उनके मुआमिलात मे दखील होते जाते थे, फिदवी मियाँ अपनी जिम्मेदारियाँ मिर्जा के सिपुर्द करते जाते थे। नौवत व ईं जा रसीद[2] कि फ़िदवी मियाँ का हर काम मिर्ज़ा ने अपने ज़िम्मे ले लिया। फिदवी मियाँ की वह इस तरह मुहाफिजत और निगरानी करते थे जो नाबालिग या मजनुओं के वली[3] को करना चाहिए; और फिदवी मियाँ रोज-अव्वल से कुछ ऐसा दवाव मिर्ज़ा साहब का मान गये थे कि बगैर इनके सवाबदीद[4] के कोई काम न होता था। जिस कद्र मिर्जा साहब फिदवी मियाँ पर तवज्जुः करते जाते थे, शिवरतन को मिर्जा साहब से खौफ पैदा होता जाता था। मिर्जा साहब को फिदवी मियाँ और शिवरतन के मुआमिलत मे भी कुछ गुंजलक[5] और गब्न मालूम हुआ औद दर हकीकत ऐसा ही था। मिर्ज़ा साहब खुद फर्माते हैं कि यह राज मुझ पर शिवरतन की चश्मअवरू[6] से जाहिर हो गया। मिर्ज़ा साहब फ़र्माते है कि मुझे शिवरतन की निगाहे फिदवी मियाँ के सामने झेंपती सी मालूम होती थी। इससे मुझे मालूम हो गया कि उसने किसी किस्म की चालाकी इनके मुआमिलात मे जरूर की है, और वह फिदवी मियाँ से किसी कद्र दबता भी था इससे और भी यकीन हो गया था कि अभी तक उसकी चालाकी का तदारुक[7] फ़िदवी मियाँ के इख्तियार मे है।

फिदवी मियाँ का अहलॅ अम्ल: के पास दौड-दौड़ के जाना। इससे भी मुझे एक किस्म का शुवहा सा पैदा होता था कि शायद फिदवी मियाँ इन मुआमिलात के तदारुक की फिक्र मे है, मगर उनकी वेपरवाई ने इस शुबहा को दफा कर दिया था।

मिर्ज़ा साहब फिदवी मियाँ को खफीफुल-अक्ल[8] समझते थे, इसलिए अपने खयालात को उनसे जाहिर करने में तअम्मुल था। इसलिए कि वह शायद इस राज़ को जाहिर कर दें कि मिर्ज़ा को उनके मुआमिलात की दुरुस्ती की गैर-मामूली फिक्र है। इन उमूर पर नजर करके मिर्ज़ा ने खुफिया तहकीकात करना शुरू की। शिवरतन एक बुड्ढा आदमी था। वह फिदवी मियाँ के वालिद के ज़माने मे उनके किसी मौजे का ज़िलेदार था। जिस ज़माने में फिदवी मियाँ के वालिद शेख कुर्वान मुहम्मद

१ उचित सीमा से अधिक २ यहाँ तक नौवत पहुँची ३ संरक्षक ४ नेक सलाह ५ गोलमाल ६ आँख-भौं ७ छुटकारा का उपाय ८ कमसमझ।

साहव ने इन्तकाल किया, फिदवी मियाँ, जिनका असली नाम शेख़ फ़िदा अली था, वहुत ही कमसिन थे। तौलियत[1] जायदाद की उनके मामूँ शेख अहमद के सिपुर्द हुई थी। शेख़ अहमद एक मशहूर जालिया था। शेख अहमद की तौलियत के जमाने मे भी शिवरतन कारकुन था। वाद तहकीक़ात के मालूम हुआ कि शेख अहमद और शिवरतन की साजिश से इस मुआमिले में कोई जाल हुआ है। मिर्ज़ा का खुद वयान है कि इस मुकद्दमः की तहकीकात का मुझे ऐसा शौक हो गया था कि रातों को नीद न आती थी। जरा-जरा सी वातों को अमली मुशाहदात[2] के तौर जाँचता और परतालता था। शिवरतन के तमाम हरकात व सकनात[3] पर शव व रोज़ मेरी नजर रहती थी। अगरचे इससे महीने मे शायद ही दो एक मर्तवा मेरी उसकी मुलाकात होती थी; वह भी चन्द मिनट के लिए। मगर मेरा ख़याल हर वक्त उसके साथ रहता था। फिदवी मियाँ अगर्चे वहुत ही सफीह[4] और ख़फीफुल-हरकात[5] आदमी थे मगर अपनी आवाई जायदाद[6] को अपने वालिद के एक अदना मुलाजिम के क़ब्जे में देखकर एक किस्म की हस्रत जो उनके वुश्रः पर[7] ज़ाहिर होती थी, उस पर मुझे कमाल तअस्सुफ[8] होता था और जब से मैं यह समझ गया था कि इस मुकद्दमे में शिवरतन ने यकीनन जाल किया है, उस वक्त से मेरा वस यही खयाल था कि उसे इलाके से वेदखल करके फिदवी मियाँ को उसकी जगह काविज करा दूँ, मगर मेरा कोई इख्तियार न था। ज़ाहिरा यह अम्र मुहाल मालूम होता था और सवसे जियाद. अहम उन ख़यालात की राजदारी[9] थी इसलिए कि इफ्शाए राज़[10] मे नाकामयावी का अन्देशा एक तरफ, तो शमातत[11] का खयाल दूसरी तरफ दामनगीर था। आख़िर वड़ी मुश्किल से वाज वाक़िआत का पता लगा। फिर तो पेच दर पेच मुश्किलें आसान होने लगी और वरसो की उलझी हुई गुत्थियाँ सुलझ गईं।

मालूम हुआ कि शेख़ कुर्वानअली—फिदवी मियाँ के वालिद ने लखनऊ मे वफात पाई थी। सवव वफात मर्ज-वाई मशहूर था। शेख़ फिदाअली की वाल्दा अपने शौहर के सामने मर चुकी थी। शेख़ अहमद उनका सौतेला भाई था।

शेख़ कुर्वानअली के लखनऊ जाने का सवव एक मुकद्दमा-अपील था। मुकद्दमे की रुदाद यह थी कि किसी राजपूत मुसम्मी मान्धाता[12] ने वन्दोवस्त के जमाने मे शेख़ कुर्वानअली के इलाके पर दावा किया था। सरसरी मुकद्दमा हाकिम वन्दोवस्त ने ख़ारिज कर दिया। उसने नम्वरी नालिश की। वह भी खारिज हुई। फिर उसने अपील की। अपील भी खारिज हुई। फिर उसने अपील सानी की। यहाँ वह तमाम लोगो के खिलाफ-उम्मीद जीत गया। जिस दिन अदालतुल्-आलिया से

१ प्रवन्धक, ट्रस्टी २ व्यवहारिक अनुभवों ३ गतिविधि ४ नादान ५ टुच्चेपन की हरकतों वाले ६ पैतृक जायदाद ७ चेहरे पर ८ अफ़सोस ९ गोपनीयता १० भेद के खुल जाने से ११ उपहास १२ मान्धाता नामक।

मुकद्दमा उसके हक में फैसल हुआ वही दिन शेख कुर्वानअली की वफात का था, वल्कि अक्सर लोगो को यह गुमान हुआ कि शेख़ खुदकुशी करके मर गए। अपील से जीतने के वाद चाहिए था कि काविज-जायदाद मान्धाता या उसके वारिस होते मगर वखिलाफ़ इसके क़ाबिज-जायदाद शेख़ अहमद और शिवरतन हुए। शेख़ अहमद लावारिस मर गए। उसके वाद शिवरतन विला मुजाहयत[1] ओहदे और वेमुशारकत गैर[2] तमाम इलाके पर काविज़ और मुतसर्रिफ[3] रहा। फिदवी मियाँ के साथ उसका सुलूक इस तरह का है जैसे किसी नमकहलाल कदीम नौकर को, जो किसी वक्त मे मुलाजिम था, अपने आकाज़ाद.[4] के साथ होना चाहिए जो अव मुफ्लिस हो। मगर इस सुलूक मे ज़ाहिरदारी किसी न किसी तरह खुल जाती थी। जायदाद पिदरी से एक विसवा ज़मीन शेख़ फिदाअली को नही मिली। मौजा सहजनपूर जिसका नम्बर अव तक उनके पास है और जो शिवरतन के पास कई साल पेश्तर रेहन हो चुका था, वह मौज़ा इनकी वाल्दा का था। कुल जायदाद का मालिक बिल्फेल[5] शिवरतन था जैसा कि हम पहले लिख चुके है, हत्ता कि मकानात भी उसी के नाम रेहन है। मगर वह वतौर माहताज[6] शेख़ फिदाअली को गुजारा देता है और मौज़ा सहजनपूर के असामियों से जो कुछ छीन-झपट के वसूल हो जाता था वह गोया वालाई आमदनी हमारे इनायत-फर्मा शेख़ फिदाअली साहव की है। मिर्जा को यह वाकिआत जो ऊपर बयान किये कई वरस की तहकीक के वाद मालूम हुए। यह तो उन पर जाहिर हो गया था कि उस मुआमिले मे किसी किस्म की चालाकी हुई है। रहा यह अम्र कि वह काबिल तदारुक[7] है या नही, इसका फैसला तफसीली हालात के मालूम होने के वाद हो सकता है। मुँह से कोई वात निकालना तो इस मुकद्दमे के लिए मुजिर था जिसका सबव ऊपर वयान हो चुका है। और मिर्जा का इस्तिक्लाल[8] भी इसका मुक्तजी[9] था कि जव तक कोई सूरत यकीनी कामयावी की न पैदा हो, ऐसी बातों का मुँह से निकालना सफाहत पर महमूल[10] किया जायगा। इनका यह मन्सूब. था कि क्या खूब हुआ अगर मैं इस मुआमिले का पूरा पता लगाके और तदारुक की काफ़ी तदवीर करके उसको जवान से निकालूं। पाँच वरस तक इस मुआमिले से मिर्जा को तअल्लुक खातिर रहा। फिदवी मियाँ तो रोज़ ही मिर्जा के पास मौजूद रहते थे और शिवरतन भी कभी-कभी आ निकलता था, मगर दोनो को उनके किसी इशारे-किनारे से यह न सावित हुआ कि वह उनके हक मे क्या करनेवाले हैं। इस अस्ना मे कई बार इनको लखनऊ आने का इत्तफाक हुआ। जुडीशल के मुहाफिजखाने में दिन-दिन भर गुज़र गया। कुल मुकद्दमे की रूदाद से उन्होने वाकिफीयत हासिल कर ली।

---

१ बे रोक टोक २ टाइटिल व बिना साझेदार ३ अधिकार कर लेने वाला ४ मालिक की सन्तान ५ फिलहाल ६ गुजारे के लिए ७ उपाय, निवारण ८ धैर्य ९ इच्छुक १० हलकेपन की निशानी थी।

जब तहकीकात कमा हक्कोहू[1] कर चुके तो उस राज को एक खास मतलब के लिए राकिमुल हुरूफ[2] (मिर्जा रुसवा) पर जाहिर किया, और बाज़ उमूर[3] मुझको तालीम किये जिसका हाल नाजरीन को आइन्दः बयान से मालूम हो जायगा। इस मतलब के लिए मुझको मिर्जा के पास जिला..........जाना पड़ा। इतवार का दिन था। मिर्ज़ा दीवानखाने (बैठके) में तशरीफ रखते है। फिदवी मियाँ और मुझसे मजाक की बाते हो रही हैं। मिर्जा ने अपने अर्दली के चपरासी को बुलाके कहा, शिवरतन को बुला लाओ। शायद इससे पहले मिर्जा ने किसी मौके पर शिवरतन को याद न किया होगा। मैं इस मुआमिले से वाकिफ था। मगर फिदवी मियाँ को अलबत्ता तअज्जुब हुआ होगा कि आज शितरतन खिलाफ-मामूल क्यो बुलाया जाता है।

शिवरतन हस्बुल्तलब सामने आ खड़ा हुआ। मिर्ज़ा ने बैठने का इशारा किया, वह बैठ गया। मिर्ज़ा ने उससे चन्द मामूली गैर जरूरी बाते करके मुझसे मुख़ातिब होके पूछा।

मिर्ज़ा—हाँ तो विलायत अली खाँ मर गया ?

मैं नही बयान कर सकता कि उसका नाम सुनने के बाद शिवरतन के दिल पर क्या गुजरी और उसके चश्मं अबरू[4] से किस किस्म के आसार पाये गये।

मैं—जी हाँ मर गया। उसको मरे हुए दो महीने हुए होगे।

मिर्ज़ा—आप जानते हैं यह कौन शख्स था ?

रुसवा—मैं खूब जानता हूँ कि कटारी टोले के मुत्तसिल वह गली जो कालिको[5] की तरफ जाती है, नीम के दरख्त के सामने।

मिर्ज़ा—आप खूब जानते होगे, मगर आपने सुना होगा कि किस बुरी गत से मरा है।

रुसवा—जी हाँ बंदगाने खुदा की हक-तलफी[6] का यही अजाम होता है।

मिर्जा—सुनते है लावारिस था। मरने के बाद कुल असबाब पुलिस मे उठ गया होगा, और यकीन है कि पुलिस ही ने उसे दफन किया हो।

रुसवा—जी हाँ, यही हुआ और होना ही क्या था।

मिर्जा—और जो तकिया उसके सिरहाने रहता था ?

रुसवा—उसका हाल फिर अर्ज करूँगा।

इस गुफ्तगू के बाद हम और मिर्ज़ा इधर-उधर का जिक्र करने लगे। शिवरतन के चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई थी। वह अभी उठने भी न पाया था कि मिर्जा ने गाड़ी कसवाने का हुक्म दिया। मिर्ज़ा साहब और मैं दोनो उठ खडे हुए। मिर्जा साहब ने फिदवी मियाँ का हाथ पकड़ लिया। गाडी पर सवार हुए। रास्ते में सिवा इस जुमले के जो मुझसे मुख़ातिब होके कहा था—'क्यो देखा आपने, हम न कहते थे",

---

१ मुनासिब　२ इन पक्तियों के लेखक　३ मसले　४ आँख-भौं　५ कालीजी के मन्दिर की गली　६ हक मारना।

जिसका जवाब मैंने अर्ज किया "जी हाँ, आपका खयाल बहुत सही था" ।—और कोई गुफ्तगू उस मुकद्दमे की नही हुई । दूसरे दिन मालूम हुआ कि शिवरतन रात ही को लखनऊ गया ।

इस वाकिए से हमारे खयालात और पुख्तः हो गये, कई दिन के बाद लखनऊ से वापस आया ।

मिर्जा का मुवक्किल शिकरम[1] में शिवरतन के साथ-साथ था । शिकरम लखनऊ पहुँचा । मुवक्किल साथ था । शिवरतन अमीनाबाद की सरा मे उतरा । वहाँ थोड़ी देर ठहर के चौक की तरफ रवाना हुआ । गोल दरवाजे के करीव बानवाली गली की तरफ से विलायत अली खाँ के मकान पर पहुँचा । (जिस दूकान मे विलायत अली खाँ रहता था वहाँ अब शिवाला बन गया है) शिवरतन वहाँ के दूकानदारो से कुछ पता दरयाफ्त करके उसके छत्ते की तरफ चला । जहाँ तीर. व तारीक[2] गलियाँ वहुत दूर तक चली गई है । उसके बाद एक नाला मिलता है, फिर एक टीकरा सा मिला उस पर गया । वहाँ एक शख्स को आवाज़ दी, वह घर से निकला । दोनो मे कुछ बातें हुई । विलायत अली खाँ को मरे हुए दूसरा महीना था । यह ठीक पुलीस की मार्फत दफ़न हुआ था । मगर तकिए का पता न मिला । उसके वाद मुवक्किल और शिवरतन दोनों अमीनाबाद की सरा में आए । उसने हलवाई की दूकान से पूरियाँ लेके खाई । मुवक्किल ने भी उसी हलवाई से पूरियाँ ली । इसके बाद शिवरतन नज़ीराबाद की तरफ चला । इसके बाद उसने दो दिन तक कचेहरियो की खाक छानी । आखिर मायूस होकर............जिला को वापस चला । मुवक्किल उससे एक दिन पहले हमारे पास पहुँच गया था ।

वह तकिआ, जिसमें शिवरतन की जान थी, हमारे कब्जे मे कई महीने पेश्तर आ चुका था । उसमे चन्द कागजात थे और वह कागजात सब फ़िदवी मियाँ के इलाके के मुतअल्लिक थे ।

अब हम इस जालसाजी को खोले देते है । असल वाकिआ यह हुआ कि मान्धाता अदालतुल्आलिया से मुकद्दमा हार गया था जैसी कि तवक्को थी, मगर उसी के दूसरे या तीसरे दिन शेख कुर्बानअली ने वआरज फसली बुखार इतकाल किया जैसा कि ज़ाहिरन सावित होता है । यह भी मुमकिन है कि शिवरतन और शेख अहमद मरहूम के हमराह थे । इन दोनो ने साजिश करके शेख को कुछ खिला पिला दिया हो । मगर इस कद्र अर्से की बात थी कि उसका सबूत दुश्वार बल्कि मुहाल है । इलाके के बाब मे यह चालाकी की गई कि असल मसला मुहाफिज़खाने से उड़ाके और वजाय उसके एक फैसला बहक मान्धाता विलायत अली खाँ की मार्फत बनवा लिया गया । फिर मान्धाता और शेख अहमद और शिवरतन मे कुछ ऐसा मर्न समझौता हो गया कि

१ एक किस्म की घोड़ागाड़ी २ अंधकारमय ।

मान्धाता कुछ रकम मुअ्तद्‌विह[1] ले के अलाहिद. हो गया और उससे एक रेहननामा वनाम शिवरतन हो गया। शेख़ अहमद के नाम रेहननामा होता मगर उसकी हैसियत इस लायक न थी। और शिवरतन शेख़ कुर्वान अहमद के जमाने ही मे लेन-देन करता था और बडा रुपिया वाला मशहूर था। असल फैसला-अदालत जो विलायत अली ख़ाँ को वतौर नमूने के दिया गया था वह उसने दवा रखा और उसके जरिये से वह शिवरतन को वक्तन फवक्तन दबाकर कुछ ले लिया करता था।

आख़िर मे विलायत अली ख़ाँ नावीना[2] हो गया था। जब वह ख़र्च से तग होता तो एक ख़त दवाव डालने के लिए शिवरतन को लिख भेजता। वह कुछ न कुछ भेज दिया करता था, मगर कलील मिकदार। इसलिए कि शिवरतन ख़ूव जानता था कि विलायत अली वह कागजात पुलीस या अदालत मे दाखिल नही कर सकता, इसलिए कि वह ख़ुद भी मुजरिम है। मगर फिर भी एहतियातन कुछ दे निकलता था। जव मिर्जा उस मुकद्दमे की तहकीकात मे मसरूफ़ हुए, एक दिन शिवरतन के नाम एक पोस्टकार्ड मिर्जा की डाक के साथ चला आया। उस पोस्टकार्ड मे अगर्चे कोई अम्र तपसीली तौर से न लिखा था मगर विलायत अली ख़ाँ को मिर्जा अच्छी तरह जानते थे। विलायत अली ख़ाँ का नाम पोस्टकार्ड पर देखते ही गोया तमाम मुकद्दमे का पता चल गया।

पोस्टकार्ड का मज़मून यह था। शिवरतन को मालूम हो कि हमारा आख़िरी वक्त है। कुछ हमारी मदद करना चाहिए। कागज़ात हमसे ले लो और जो कुछ तुमसे हो सकें हमको दे देना। वर्ना मरता क्या न करता।

उस पोस्टकार्ड को मिर्जा ने दवा रखा और एक मुवक्किल शिवरतन की तरफ से विलायत अली ख़ाँ के पास गया और पचास रुपया दे के वह कागजात उससे हासिल कर लिये। उसके चन्द रोज़ वाद ही विलायत अली वासिल जहन्नम हुआ। वाकई वहुत बुरी तरह से मरा। जालिये वेईमानो का यही अजाम होना चाहिए।

इन वाकिआत के मुफस्सिल जिक्र[3] के वाद अब इसके कहने की ज़रूरत नही है कि शिवरतन किस कद्र सुहूलत के साथ तमाम जायदाद से दस्तवर्दार[4] होने पर राज़ी हो गया होगा। वाहमी फैसला कर लेना मुनासिव वक्त था। इसलिए कि अगर्चे जाल का सुबूत कतई हाथ आ गया था और शिवरतन वाकई मुजरिम था, इसलिए वह वहुत खाइफ[5] था। मगर वहुत अर्से की वात थी। इसलिए मिर्जा की एहतियात इसी की मुक्तज़ी[6] हुई कि यह मुकदमा अदालत तक न जाय और शिवरतन भी यही चाहता था। लिहाजा शिवरतन ने कुल जायदाद का वैनामा फिदवी मियाँ के नाम करके सिर्फ एक मौजा अपने नाम छुडवा लिया, और इस फैसले के चन्द ही रोज के वाद तीरथ को चला गया, जहाँ से इस वक्त तक वापिस नही आया।

---

१ अच्छी ख़ासी　२ अन्धा　३ विस्तृत चरचा　४ अलग　५ भयभीत
६ इच्छुक।

अब फिदवी मियाँ का हाल न पूछिए। पूरे रईस बन गए। मगर मिर्जा को अभी तक उसी तरह माने जाते है और कोई काम बगैर उनकी सलाह व मशविरे के नही करते।

मिर्जा आबिदहुसैन का तरीक: जिन्दगी बिल्कुल अनोखा है। हमने किसी शख्स को जो औसत दर्जे का तमव्वुल[1] रखता हो, इतनी मिहनत करते नही देखा। मिहनत करने पर इस कद्र हरीस[2] कोई हिन्दुस्तानी हमारी नजर से नही गुज़रा। मिर्जा साहब रोज़ सुबह को चार बजे गर्मी-बरसात उठ खडे होते हैं। उस वक्त से बाग मे निकल जाते हैं। वही नमाज पढते है। तुलूएँ आफताब[3] के साथ ही पौदो की देखभाल शुरू हो जाती है। कब्ल इसके कि मुलाजमीन और मजदूर आएँ, हर एक का काम तजवीज हो जाता है। यह लोग आते के साथ काम शुरू कर देते है। अक्सर कामो मे खुद मिर्ज़ा साहब मदद देते जाते हैं। खुर्पी या फावड़े को खुद उठाकर काम मे मसरूफ हो ज़ाना और इस बेतकल्लुफी के साथ कि गोया उस काम के लिए फित्रत[4] ने उनको खल्क किया[5] था। कोई छोटे से छोटा काम भी नही जिससे मिर्जा बेपरवाई करते हो या महज़ नौकरो पर छोड़ देते हों या नौकरो को हिदायत करते हो। मिर्ज़ा के नौकर उनके एहकाम की तामील मे ऐसी मुस्तअदी और तवज्जु: जाहिर करते हैं कि उसका नज़ीर हम किसी हिन्दोस्तानी मुलाजिमो मे नही पाते। जब सब लोग अपने-अपने कामो मे मसरूफ हो जाते हैं तो मिर्जा लेबोरेटरी (तज्रगाह)[6] मे तशरीफ ले जाते हैं। यहाँ इल्म तबिआत[7] और टुकड़ी के तजुर्बात होते है और मामूलन दो घण्टा यहाँ रहते है। यहाँ सिर्फ एक आदमी इनका मददगार है। दस बजे खाना खाते है। खाना खाने के बाद अख्बार देखते है। गोया यह घण्टा उनकी इस्तराहत[8] का है। मगर इस वक्त भी उनको किसी ने पलग पर लेटे हुए न देखा होगा। बहुत बडी इस्तराहत का ज़माना सिर्फ आध घण्टा है। ग्यारह बजे फिर खेतो पर जाते हैं। बारह बजे तक वही रहते है। बारह बजे मुलाजिम और मजदूरो को दो घण्टे की फ़ुर्सत दे के खुद हद्दादखाना[9] या नज्जारखाना[10] चले जाते है। यहाँ दो घण्टे तक सख्त मिहनत होती है। उस दो घण्टे मे मिर्ज़ा का हाथ कभी हथौडे या बसूले या किसी और आला हद्दादी[11] या नज्जारी[12] से खाली न देखा होगा। आधा घण्टा बाग की ज़रूरियात के मुतअल्लिक सर्फ होता है। मसलन अगर कोई चीज टूट-फूट गई हो तो उसकी मरम्मत की जाती है, या कोई नया आला सिर्फ ज़राअत या बाग की तरक्की की गरज़ से बनाया जाता है। डेढ घण्टे तक इल्म जर्रे सकील[13] और मुख्तलिफ किस्म की कलो के नमूने तैयार करने मे सर्फ होते है। दो बजे फिर

---

१ हैसियत २ लोलुप ३ सूर्योदय ४ प्रकृति ५ सिरजा ६ प्रयोगशाला ७ शरीर-विज्ञान ८ आराम ९ लुहारखाना १० बढ़ईखाना ११ लुहारी १२ बढ़ईगीरी १३ मैकेनिक्स, भारी चीज़ों का उठाना।

काम पर जाते है। इस वक्त जियाद देर तक नही ठहरते। सिर्फ घण्टा आधा घण्टा मे कुल काम का मुआइना करके चले आते है। तीन वजे से चार वजे तक एक घण्टा इल्म नवातात[1] के मुतअल्लिक सर्फ होता है। चार वजे घर मे तशरीफ ले जाते है। यह वक्त औलाद की तालीम की तरफ तवज्जु करने का है। अगर्चे हर बच्चे की तालीम का जुदागान: एहतिमाम[2] है। लडकियों पर आतू[3] नौकर है। लडके जो मदरसे जाने के काविल नही वह घर पर मौलवी साहव से पढते है। मगर मिर्जा हर रोज विला नागा हर एक लडकी या लड़के का सवक सुनके खुद छुट्टी देते है। पाँच वजे से छै वजे तक का वक्त तफ्रीह[4] के लिए मुअय्यन[5] है। इन औकात मे मिर्जा अक्सर सवार भी होते है। कभी घोड़े पर, कभी वाइसिकिल पर और अगर कोई दोस्त हस्व दिलख्वाह आ गया तो उसके साथ वाग की ओर जराअत की सैर कराने मे मसरूफ़ रहते है।

इस वक्त एक दिन राकिमुल्हुरूफ[6] इनकी जियारत से मुशर्रफ[7] हुआ था। वाकई जहाँ मिर्जा रहते है वह अजीव दिलकश मुकाम है।

पुख्त सडक से एक कच्चा रास्ता उस फारम को जाता है। कुल रकव और वाग मिला के कोई पचास वीघा जरीवी[8] है। इस किता जमीन के चारो तरफ एक वुलन्द जमीन छोटी सी पहाड़ी के सिलसिले के मिस्ल हर तरफ से घेरे हुए हैं; गोया रकव उस पहाड़ी की घाटी है। इस वुलद जमीन के उस तरफ एक वहुत वडी झील है जिसका एक हिस्सा पहाड़ी को काट के इस तरफ निकल आया है। वाग उस झील के पानी की सतह से कुछ ऊँचा है। फारम और वाग के चारों तरफ वुलंद खाई और खन्दक है। उस खाई पर एक कितार घीकुवार की है और दूसरी तरफ कितार ववूल के पौदो की है। उसी के शुमाली रुख[9] पर एक तूलानी[10] तख्त वाग का है। उसके एक किते मे तुख्मी और दूसरे मे कलमी आमो के दरख्त हैं। फिर तुरशाव:[11] का मुख्तसिर सा तख्त है। उससे मिला हुआ फूलों का वसीअ[12] चमन है। उसकी सजावट से विलकुल फित्री तौर पर मिर्जा की तवीयत की सादगी और फ़ित्रत-पसन्दी का मजाक[13] उससे जाहिर हो सकता है। अगर कोई इस चमन को देखे तो यह हरगिज नही कह सकता कि यह दरख्त यहाँ लाकर लगाये गये है। वल्कि यह मालूम होता है कि आप से आप उगे हुए हैं। इसी चमन मे एक कच्ची नाली पानी की झील से काटकर लाई गई है। उस नाली मे ककर कुटे हुए हैं जिससे साफ पानी वहता है।

---

१ वनस्पति शास्त्र २ अलग-अलग प्रबन्ध ३ उस्तानी ४ सैर ५ नियत, निर्धारित ६ लेखक ७ दर्शनों से धन्य ८ जरीब—खेत नापने की एक नाप (जंजीर) होती है ९ उत्तरी ओर १० बड़ा ११ खट्टे फलो का १२ विस्तृत १३ रुचि, झुकाव।

नाली के किनारे-किनारे दूब इस खूबसूरती से जमाई गई है कि उसकी शाखो ने अक्सर पानी की सतह पर साया कर लिया है। चमन-बन्दी हमवार तख्ते पर नही है। ज़मीन पहले हमवार थी, मगर उससे असली बीहड जमीन का नमूना बनाया है। उसमे जावजा ककरो की पहाडियाँ बनाई गई हैं। वह बिलकुल असली मालूम होती हैं। बाज मशहूर पहाड़ी मुकाम की नकल मिर्जा ने बिलकुल पैमाने से नाप कर बनाई है। जमीनें मजरुअ[1] का किता बहुत बड़ा और बिलकुल हमवार है। यह किता ज़मीन का बारह महीने सरसब्ज़ रहता है। पानी के बरहो[2] के किनारे तक बेकार नही छोड़े। कोई न कोई शै हर फस्ल के मुवाफिक हर जगह बोई जाती है। मिर्जा आबिदहुसैन की सवाने.उम्री[3] तमाम नही हो सकती, जब तक इनके बाज खुतूत ज़ो हमनें बड़ी मुश्किल से फराहम किये है, मय उन खतो के जिनके जवाब मे वह लिखे गए है, उसके साथ शामिल न कर दें। हम इस किताब के साथ उनका फोटो भी ज़रूर शाया करते मगर उसकी हमे इजाजत नही है। लेकिन हम इस मौके पर उनके शमाइलें जाहरी[4] का एक नक्श. बजरिये अल्फाज खीचे देते है। इस मौके पर हम मिर्जा साहब को गोया अपने नाजरीन से बिल्मुशाहद. तआरुफ[5] कराये देते है।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन का सिनें शरीफ अब तकरीबन पचास साल का है। मगर वज़्ए एहतियात और जफाकशी का यह नतीजा है कि वह बिल्कुल नौजवान मालूम होते हैं। गन्दुमी[6] रग है। मियान:[7] कद, चौड़ी हड्डी, जबरदस्त कलाइयाँ, मज़बूत हाथ। उनको एक नजर देखने से ऐसा मालूम होगा कि उनके हर अजो मे कूवत भरी हुई है। जब वह किसी जिस्मानी मिहनत का इरादा करते है, उनके शौक और तर्ज़े-आमादगी[8] से ऐसा जाहिर होता है, जैसे कोई बच्चा खेल की तरफ मुतवज्जे. होता है। रफ्तार उनकी किसी कदर सरीअ[9] है। उनकी हैअतें कज़ाई[10] से ऐसा मालूम होता है जैसे उनको बहुत कुछ काम करना है। हम दावे के साथ कह सकते है कि उनको किसी ने किसी हालत मे और किसी वक्त मे बेकार न देखा होगा।

## बेटे का खत बाप के नाम—इंट्रेंस पास करने के मौक़े पर

किब्लए मन्, मद्दजिल्लुहू। आदाब व तस्लीमात के बाद गुजारिश यह है कि खुदा के फ़ज्ल और आपकी दुआ से मैं इंट्रेस के इम्तहान मे कामयाब हो गया। एफ. ए. के लिए मैंने यह मजामीन पसन्द किये है। अगर आप इजाजत दे तो इन्हे इख्तियार करूँ।

अंग्रेजी, साइस, मन्तिक, पोलिटिकल इकानमी, रियाज़ी (इल्म-हिसाब, अलजबरा,

---

१ जोती-बोयी २ बहावो ३ जीवनी ४ रूपरेखा ५ प्रत्यक्ष परिचय ६ गेहुँआ ७ मध्यम श्रेणी का ८ तत्परता, मुस्तैदी ९ तेज़ १० ढंग-तरीक़े।

इल्म-हिन्दसः मकालः[1] शशुम[2] व याजदहुम,[3] इल्म मुसल्लस,[4] कानसेक्शन), साइंस (इल्म तबीआत व कमेस्ट्री)।

एफ-ए की रियाजी वहुत मुश्किल है। अक्सर तालिव-इल्मो ने यह जरूरी कोर्स नही लिया। मुसलमानो मे से सिर्फ मैंने यह कोर्स लिया है।

वाज दोस्तो ने वलिहाजें सुहूलत यह राय दी थी कि फारसी ले लूँ। मगर मैंने इसलिए पसन्द न किया कि कोर्स की कितावो मे से अक्सर मेरी देखी हुई हैं। साल भर तक उन्ही को उलट-फेर कर पढ़ने से दिल उकता जायगा। दूसरे उन कितावो मे कोई ऐसी वात नही मालूम होती जो सीखने के लायक हो। अगर मैं साइस न लेता तो अरवी लेता। मगर जानता था कि साइंस के लिए अक्सर आप ताकीद फर्माते रहे हैं। इसलिए मैंने उसी को तर्जीह दी। और वाकई मुझको साइंस के पढने का जाती शौक है। अक्सर तालिवइल्मों का इराद. ला क्लास में नाम लिखवाने का है। मैं आजकल मन्तिक की किताव को वजाए खुद पढ़ रहा हूँ। जो रिसाले मन्तिक के आपने घर पर पढा दिये थे उनसे वहुत मदद मिली। पोलीटिकल इकानमी एक नया मजमून है, मगर दिलचस्पी से खाली नही।

जनाव वालिदः साहिवा को तस्लीम और सव को दर्जः व दर्जः सलामों-दुआ। अर्ज दीगर यह है कि माली से ताकीद कर दीजिएगा कि मेरे फूलो के नाँदो की अच्छी तरह खवरगीरी करे। मुझे खौफ है कि वह वाज औकात लापरवाई कर जाता है।

अरीजए फिदवी[5] वाकर

## खत आविदहुसैन का अपने बड़े बेटे के नाम

वाकरहुसैन जाद कद्रहू[6]। वाद दुआ के मालूम हो कि मुझे तुम्हारे इंट्रेस पास करने का हाल गजट-सरकारी से मालूम हो गया था और मैं तुम्हे इस मौके पर मुवारकवाद का खत लिखने वाला था कि तुम्हारा खत आया। मुझे इस वात के मालूम होने से वडी खुशी हुई कि तुमने अभी से एफ० ए० के इम्तहान की तैयारी शुरू कर दी। इतखावें-मजामीन[7] के वारे मे अच्छा किया तुमने मुझसे राय तलव करली।

अग्रेजी और रियाजी मजमून वहुत जरूरी है। इनके वारे में तो कुछ कहना ही नही है। शायद एफ० ए० की रियाजी में यह मजामीन हैं। इल्म-हिसाव कामिल मय इल्में-हिसावें-नजरी, जव्रो मुकावल, हिन्दसः छठा मकाल. मय ग्यारहवें मक़ाले के और अव्वल के चार मकालो पर नजरेंसानी, किताअ मखरूतात वहसें मुतनाकिस

१ अध्याय २ छठा ३ ग्यारहवाँ ४ टेग्नामेट्री ५ विनीत प्रार्थी ६ उन्नति करो ७ विषय-चयन।

जिसे वैंजवी कहते है और मुतकाफी यानी पैरावोल., शायद मुतज़ाएद की वहस एफ० ए० मे छुड़ा दी गई है। मै वहुत खुश होता अगर वह भी शामिल होती। मगर मैं तुमसे फर्माइश करता हूँ कि मुतजाइद (यानी हाईपरावोल.) की वहस वजाय खुद देख जाना। इल्म मुसल्लस सतही और उसके साथ लोगारिस्म का इस्तेमाल वहुत ही कारआमद है। एक किताव उम्द. चैम्वर्स मैथमेटिकल टेविल्स की मै वतौर इनाम तुमको रवाना करता हूँ। इस किताव से तुमको रियाजीयात के अमल मे वहुत मदद मिलेगी। इस्टाटिक्स पर खास तवज्जु करना। इस इल्म की मुल्क को और कौम को सख्त जरूरत हैं। गर्मियो की तातील मे घर आओगे तो कलो के नमूने मेरे हाथ के वनाये हुये देखना। उनके फायदे और इस्तेमाल के तरीके मै तुम्हे अमली तौर से वताऊँगा।

एक गलत मकूल. आज कल वहुत मशहूर हो गया है। क्या अजव है कि तुमने भी सुना हो कि मुसलमानों का दिमाग रियाजी की तहसील[१] के नाकाविल है। मैं तुमको यकीन दिलाता हूँ कि इस वात की कोई अस्ल[२] नही है। जव तुम मन्तिक पढ़ोगे तो तुमको मालूम होगा कि यह मकूल[३] मिन्जुम्लए[४] इस्तिक्राय्यातें-नाकिस[५] है। और इस्तिक्राए-नाकिस इल्म और यकीन के लिए मुफीद नही। अगले मुसलमानों ने खास इसी इल्म रियाजी मे वहुत कुछ कर दिखाया है। तुमको मालूम हो कि अगले निजामें तालीमी मे पन्द्रह मकाले उक्लैदिस के इब्तिदाई दर्स[६] मे और वत्तीस मकाले मुतवस्सितात[७] के दर्स औसत मे दाखिल थे और उसके वाद मजस्ती पढ़ाई जाती थी। यह कितावें निजामें वत्लीमूस इल्म हैअत[८] के वयान मे है। अगर्चे निज़ामें वतलीमूस अव गलत सावित हुआ लेकिन यही किताव एक जमाने मे तमाम उलमाए हैअत की मुसनद अिलै[९] थी और मजस्ती पहले पहल अरवी से लातीनी जवान मे तर्जुम. हुई जिससे तमाम योरुप ने इल्म हैअत सीखा और मजस्ती के मिस्ल और कितावे भी अरवी से योरुपी जवानो मे तर्जुम. हुई है। इससे साफ जाहिर है कि मुसलमान इल्में हैअत मे भी अह्ले योरुप के उस्ताद हैं और इससे उलमाए योरप को इन्कार नही हो सकता। यह कितावे जिनका जिक्र किया गया है खुद मेरे कुतुवखाने मे मौजूद है और एम० ए० कोर्स से किसी तरह कमपाय:[१०] नही हैं। फारसी एफ. ए. मे न लेना तुम्हारे लिए वहुत मुनासिब वल्कि जरूरी था। यह जो तुमने लिखा है कि. अगर मैं साइस न लेता तो अरवी जरूर लेता। जव तुमने खुद ही साइंस को तर्जीह देकर इख्तियार किया तो अव मुझे कुछ कहना नही है। मै हमेशा तुमको समझाया किया हूँ कि

**१ गणित विद्या का उपार्जन २ जड़ ३ कथन ४ सव में से ५ कुछ बातें देख कर व्यर्थ धारणा बना लेना ६ प्रारम्भिक कोर्स ७ माध्यमिक ८ खगोल शास्त्र ९ अत्यंत प्रामाणिक १० निम्न स्तर।**

मदरसों की पढ़ाई और इम्तहानो की कामयावी तहसीलें इल्म[1] का मक्सूद[2] नही है वल्कि उससे एक हैसियत इजहारें लियाकत[3] की और एक मलक. तहसील[4] इल्म का हासिल हो जाता है। अगर तुमको अरवी पढ़ने का शौक है तो वी० ए० पास करने के वाद वजाए खुद पढ लेना। यह आम मकूल मशहूरात[5] से है कि अरवी, फारसी, अग्रेजी स्कूल मे नही आती। क्योंकि मक्तवो और मदरसों मे मक्सूद विज्जात[6] अग्रेजी है न कि अरवी। फारसी तो कोई ऐसी चीज़ नही। लेकिन अरवी का इल्में अदव और फिर माकूलात[7] व मन्कूलात[8] वगैर: मिला के वहुत ही वसीअ[9] लिटरेचर हो जाता है, जिसके लिए एक उम्र मुतालअ:[10] और ख्वादगी[11] की जरूरत है। मैं हरगिज किसी हिन्दू या मुसलमान नौजवान तालिवइल्म को यह राय न दूंगा कि वह मदरसे की तालीम का वक्त जो निहायत ही महदूद[12] और वेशकीमत है, फारसी या अरवी-सस्कृत के पढ़ने मे जाया करे। उसके चन्द वुजूह हैं।

१. इन जवानो के पढने या उलूम हासिल करने से क़ौमी हैसियत और मजहव का हिफ्ज[13] और वका[14] अगर मंजूर है तो वह इस किस्म की पढ़ाई से जो मदरसो मे होती है हासिल नही हो सकता।

२. तक्मील[15] का दर्जा हासिल 'नही हो सकता। कितावो का इन्तखाव इस किस्म का होता है कि उनको अंग्रेजी कितावों के साथ ही साथ पढ़ने से एक किस्म का तनफ्फुर[16] अपने उलूम[17] से पैदा हो और कोई नफा नही हो सकता। मसलन जो तलव. ऐसी उम्द: कितावे जैसे व्लेकी की किताव सेल्फ कल्चर, हक्सिले की किताव के सरमन्स या हेल्प की किताव एसेज वगैर पढता हो ‚उसके सामने वह कितावें जो लगो मुवालगात[18] और झूठी खुशामदो से भरी हुई हैं, उनकी क्या वक़्त हो सकती है। मुझे तअज्जुव है कि निसावें तालीम के इन्तखाव के वक्त मेम्वरानें कमेटी फ़ारसी और अरवी की उम्द कितावो के नाम क्यो भूल जाते हैं। क्या फ़ारसी और अरवी मे सिर्फ इतनी ही कितावें हैं जिनका इन्तखाव अक्सर निसावहाए तालीम[19] में देखा गया है।

मेरा इराद. है कि एफ० ए० के पास करने के वाद तुमसे वजाए वी० ए० के वी० एस० सी० का इम्तहान दिलवाऊँगा और इन्शाअल्लाह उसकी कामयावी के वाद तुम्हारी तालीम घर पर होगी। कही और तालिवइल्मो की देखा-देखी तुम ला-क्लास में नाम न लिखवा लेना। और अगर ऐसा करना भी तो सिर्फ इल्म हासिल करने के लिए; न इस ग़रज से कि वकालत का इम्तहान देकर उसको एक ज़रीअ.

---

१ विद्योपार्जन २ अभीष्ट ३ योग्यता-प्रकाशन ४ रुचि, अभ्यास ५ प्रसिद्ध कहावतों ६ लक्ष्य ७ शास्त्र ८ दर्शन ९ विस्तृत १० अध्ययन ११ पढ़ाई १२ सीमित १३ रक्षा १४ स्थायित्व १५ पूर्णता १६ अरुचि १७ विद्याओं ,से शास्त्रों से १८ व्यर्थ अत्योक्तियों १९ शिक्षा के कोर्सों में।

अखर्जे माश[1] का करार दो। मेरा यह मक्सद नही है कि वकालत का पेशः बुरा है, या इस पेशे के लोग दियानतदार[2] नही होते जैसा कि मशहूर है; मगर इसमे भी शक नही कि वकालत के पेशे मे इफ़रात[3] व तफ़्रीत[4] की तरग़ीब[5] वेशुमार हैं और एहतियात[6] दुश्वार। गरज कि खतरनाक होने मे कोई शुबहा नही। बहरसूरत अस्लम[7] यही है कि इस अंदेशानाक[8] रास्ते से दरगुजरो[9]।

अलावा इसके मुल्क को उसकी जरूरत बहुत कम है। हजारहा वकील और बैरिस्टर ऐट ला खुदा के फज्ल से मौजूद है। इन उलूम का हासिल करना वाजिबें कफ़ाई§ बल्कि बाज सूरतो मे वाजिबें ऐनी§ है जिसके जानने वाले कौम मे कम है और जिसकी कौम और मुल्क को अजहद[10] जरूरत है।

मैंने सुना है कि तुम्हारे मदरसे मे इल्म हैअत[11] का कोई इम्तहान मुकर्रर हुआ है। मैं उसको सुनके बहुत ही खुश हुआ। इस इल्म मे हमारे बुजुर्गो ने बहुत मिहनत की थी जिसका सुबूत इल्में हैअत की मब्सूत तारीखो[12] से मिल सकता है। इस वक्त मेरी मेज पर एक किताब इल्में हैअत की मय एक मुख्तसर फरहंग अग्रेजी जबान मे मौजूद है। रदीफें अलिफ मे अलिफ लाम (अरबी हर्फे तारीफ़) से जो लफ्जें शुरू होती हैं, उनका शुमार पचास के करीब है और अ्रबीयुल् अस्ल अल्फाज का जिक्र नही। अगर तुम्हारे दर्जे के तालिबइल्म हैअत के क्लास मे दाखिल होने के मजाज़ हों तो तुम भी जरूर नाम लिखवा लो। और उसके कोर्स की किताबो के नाम मुझको लिख कर भेज दो। जो किताबें मेरे कुतुबखाने मे मौजूद है मैं भेज दूँगा, बाकी कलकत्ते से मगवा लेना। गर्मियो की तातील मे हम तुम्हे वह आलात इल्म हैअत के दिखायेंगे जो हमने अपने हाथ से बनाए है और वक्तन फ़वक्तन उन मुशाहदात[13] का भी तज्किर. करेंगे जो उनसे हो सकते है।

रकीमए दुआ[14] आविद अज देहली २१ जून, १८८९ ई०

## एक और ख़त

मख्दूमें-बन्दः (आदणीय पूज्य) जनाब मिर्जा साहब तस्लीम। मैंने ख़ारिजन[15] सुना है कि आपने इस जमाने मे कोई किताब जर्रे सकील[16] मे अ्रबी जबान से उर्दू मे तर्जुम.

---

१ जीविकार्जन का साधन २ ईमानदार, विश्वसनीय ३ बहुतायत ४ दुरुपयोग ५ प्रलोभन, प्रेरणा ६ सावधानी, संयम ७ भला ८ खतरनाक ९ बचे रहो १० अत्यंत ११ खगोल शास्त्र १२ प्रामाणिक इतिहासों १३ प्रयोगो १४ दुआ लिखने वाला १५ उड़ते-उड़ते १६ भारी बोझ खींचने-उठाने की विद्या।

§ 'वाजिबें ऐनी' वह कर्त्तव्य हैं जो किसी भी सूरत में छोड़े नहीं जा सकते, जैसे नमाज; 'वाजिबें क़फाई' वह कर्त्तव्य हैं जो किसी एक व्यक्ति के कर देने पर दूसरो पर वह जरूरी नहीं, जैसे आग लगने पर बुझाना सब का फ़र्ज है लेकिन किसी के बुझा देने पर दूसरो पर वह फ़र्ज नहीं रहता।

की है। अगर वह किताव छप गई हो तो उसका एक नुस्खा मुझको भेज दीजिए और अगर न छपी हो तो किसी औसत दर्जे के कातिव से लिखवाकर रवाना फर्माइए। मैं वहुत ही मम्नून[1] हूँगा। इतना अदव के साथ और अर्ज करना चाहता हूँ कि फी जमाना इस इल्म मे वहुत तरक्की हुई है। आपको मालूम है कि आपकी हर तस्नीफ[2] को निहायत कद्र की निगाह से देखता हूँ। अगर आप किसी अंग्रेजी किताव का तर्जुम॰ फर्माते तो शायद कौम और मुल्क के लिए जियाद मुफीद होता।

आपका नियाजमन्दे कदीम जुहूरुद्दीन एम. ए.

कद्रदानँ वन्द॰ मौलवी जुहूरुद्दीन साहव एम. ए., देहलवी। तस्लीम।

वजवाव आपके इनायतनाम मोअर्रिखे २१ जून माह व सने हाल आरिजे-मुद्दआ[3] हूँ। मैंने वाकई एक रिसाल॰ जर्रे सकीलें अमली का जिसके दीवाचे मे मुसन्निफ ने अपना नाम अवू अली लिखा है, फारसी से उर्दू मे तर्जुमा किया है। इस रिसाले की तस्नीफ से कौम को जर्रे सकीलें अमली का सिखाना मजूर नही है। इस मतलव के लिए वकौल आपके कोई किताव अंग्रेज़ी की तर्जुम. करना जरूरी है। वल्कि इस तर्जुमे से दो मक्सद है। एक तो यह कि होनहार नौजवान तालिवइल्मो की निगाह मे कौमी वकत का काइम रखना मजूर है जिसकी मेरे नज़दीक इस ज़माने मे अशद जरूरत है। दूसरे एक अम्र और इस किताव के तर्जुमे का मुक्तजी[4] हुआ, वह यह कि मीकानात वसीत जिनका जिक्र इस मुख्तसर रिसाले मे है विऐने[5] वही है जो इस जमाने की कितावो मे पाए जाते हैं। मसलन मह्रो, वेरहम, दोलाब, लोलब, अल्फीन वगैर। इस अमली रिसाले से इस वात का पता चलता है कि वुरहानी तौर से[6] यह इल्म उसी जमाने मे एक हद तक तरक्की कर चुका था। अफसोस कोई किताव वुरहानी दस्तयाव नही हुई। हस्वुलहुक्म आपके एक नकल रिसालए मतलूब. की रवाना करता हूँ। अगर देहली मे कोई कारखाना इस किताव के छापने का जिम्मः ले तो वेतकल्लुफ विला तअय्युन हक्के तालीफ[7] दे दीजिएगा।

एक खुशखवरी आपको और सुनाता हूँ कि एक नुस्खा मोहक्किक्के तूसी[8] की उक्लैदिस का जिसमें पूरे पन्द्रह मकाले[9] मय हवाशी, और तालीकात[10] वगैरः के है, मुझको दस्तयाव हो गया है। मेरा मुसम्मम[11] इराद॰ है कि उसको विजिसही[12] छपवा दूँ। क्या अच्छा होता अगर यह किताव उर्दू, अंग्रेज़ी दोनो जवानो मे तर्जुम. होकर शाया की जाती। मगर अफ़सोस कि मुझको जमाना मुहलत नही देता, और कोई

---

१ अनुगृहीत २ रचना ३ निवेदन करने जा रहा हूँ ४ इच्छुक ५ विलकुल अनुरूप ६ प्रामाणिक रूप मे ७ विला पारिश्रमिक-ठहराव प्रकाशन का स्वत्व ८ तूस देश का दार्शनिक ९ ज्यामिति के साध्य १० टिप्पणी-प्रमाण-संदर्भ सहित ११ दृढ़ १२ जैसे का तैसा।

साहव इस वार को अपने ज़िम्मे नही लेते। वाकर ने वी० एस-सी० का इम्तहान माशाअल्लाह पास कर लिया। मगर वह अभी अ़रवी जवान के इस्तलाहातें इल्मी[1] से नावलद[2] है, वर्ना उसको इस काम मे अपना शरीक कर लेता। वाकर ने मेरे कहने से वकालत के इम्तहान की कोशिश नही की और न उसे मिस्ल और हौसल:मन्द नौजवानो के नौकरी की फ़िक्र है। उम्मीद है कि इल्मी मकासिद[3] मे वह मेरा मुअ़ीन[4] होगा। विलफेल इसी गरज से मैंने उसको अ़रवी माकूलात[5] पढाना शुरू किया है। अस्सऽ्यु मिन्नी वल् इत्मामु मिनल्लाह[6]।

देहली में एक साहव मीर इहसानअली नामे कश्मीरी दरवाज़े के करीव तशरीफ़ रखते है। उनके आवा व अज्दाद[7] उलूमॅ रियाजिय.[8] मे अपने अहद के[9] कामिलीन[10] से शुमार किये जाते थे। जव मैं देहली गया तो वित्तख्सीस[11] उनसे मिला था। वेचारे वहुन परेशान-हाल थे। उनके पास एक उस्तुर्लाव[12] जिसका कुत्र[13] दस इच था, लाहौर की वनी हुई निहायत ही उम्द: थी, और वह वेचते थे। पाँच सौ रुपिय' कीमत कहते थे। अफ्सोस उस वक्त मेरे पास रुपिय. न था। आप वराहे इनायत उनसे दर्याफ़्त कीजिए। अगर वह अव तक न विकी हो तो मेरे वास्ते ख़रीद लीजिए।

आपके चचा मौलवी रियाजुद्दीन साहव उनसे अच्छी तरह वाकिफ है। इसलिए आपको उनकी तलाश करने मे दिक्कत न होगी।

नियाजकेश आविद

मिर्जा साहव मुअज्जमॅ[14] वन्द, तस्लीम। रिसालए मुर्सल·[15] पहुँचा। यह भी मालूम हुआ कि यह रिसला आपके हाथ का लिखा हुआ है। मुझे इसका फख़् हासिल हुआ कि एक किताव आपके दस्तख़त ख़ास से मेरे कुतुबख़ाने मे शामिल हुई। मगर आपने क्यो तकलीफ़ की। किसी से लिखवा दिया होता। वाकई क्या उम्द: रिसाला है। और तर्जुमे का हक आपने ख़ूव अदा किया है। और कुछ लिखते हुए डरता हूँ, इसलिए कि आप जियाद तारीफ को पसन्द नही फ़र्माते, अगर्चे वह अम्रे हक ही क्यो न हो।

चचाजान से दर्याफ्त करके मैं ख़ुद मीर इहसानअली के मकान पर गया थां। विल्फेल वह पटियाले मे है। मगर उनके साहवजादे की जवानी मालूम हुआ कि वह उस्तुर्लाव, एक साहव जर्मनी से आये थे, वह सात सौ रुपये को ख़रीद ले गये।

इस वात के दर्याफ्त होने से मुझको कुछ जियाद' अफसोस नही हुआ। इस

---

१ पारिभाषिक और व्यञ्जनात्मक ज्ञान   २ अनजान   ३ उद्देश्यों   ४ सहायक   ५ दर्शन विज्ञान   ६ मनुष्य यत्न करता है, परमात्मा उसकी पूर्ति करता है   ७ पूर्वज   ८ गणितशास्त्र   ९ समय के   १० पूर्ण दक्ष   ११ ख़ास तौर पर   १२ ग्रहों के नापने का यंत्र   १३ व्यास   १४ परमश्रेष्ठ   १५ भेजा हुआ।

लिए कि मैं खूब जानता हूँ कि आप उसूलें-उलूम से बाख़बर है और मैं जब लखनऊ गया था तो आपके हाथ का बना हुआ उस्तुर्लाब ख़ुद देखा था। मेरा एतिक़ाद मुझे यकीन दिलाता है कि मीर इहसानअली वाला उस्तुर्लाब उससे किसी तरह बेहतर न होगा। बिल्फेल आपके पाँच सौ रुपये की बचत हो गई। वर्ना मुझको तामीलें इर्शाद जरूर ही करना होती और पाँच सौ रुपए आपके बिला ज़रूरत सर्फ हो जाते। मुहक्ककें तूसी की उक्लैदस महश्शा[1] के देखने का मै भी मुश्ताक़[2] हूँ। मुमकिन हो तो उसे छपवा दीजिए। भाई बाकरहुसैन सल्लमहू के इम्तहान मे पास होने की खबर मुझे उनके ख़त से मालूम हो चुकी थी, और उनको मैं मुबारकबाद[3] भी दे चुका हूँ। आपकी तहरीर से मालूम हुआ कि आप अपने मिस्ल उनको भी तारिकुद्दुन्या[4] बनाना चाहते है, मगर यह नही मालूम हुआ कि उनका जाती मन्शा क्या है। क्या वह अपनी आइन्द. जिन्दगी को मुल्क और कौम पर निसार करने के लिए आमाद हो गए ! अगर ऐसा किया तो बहुत बुरा किया। चचाजान की तरफ से आपको सलामें शौक लिखकर इस अरीजे[5] को ख़त्म करता हूँ।

फकत

अकीदत आईन

जुहूरुद्दीन

इनायतफर्माए-बेकराँ[6] जनाब मिर्ज़ा साहब दाम मज्दुहू,[7] तस्लीम।

यहाँ बहम वुजूह[8] ख़ैरियत है और आपकी ख़ैरोआफियत काजियुल्हाजात[9] से शब व रोज नेक मुस्तद्‌ई[10] रहता हूँ। दरी बिला बाअसें तहरीरें नियाजनामए हाज़. यह है कि नूरचश्मी[11]...की तकरीबें कतखुदाई[12] होने वाली है। उसके वास्ते कुछ अस्बाब[13] तो पहले से मौजूद है और कुछ अस्बाब ख़रीदना है। हुसैनुद्दीन की वालिद ने कल शब को यह सलाह दी कि मिर्ज़ा साहब बिल्फेल लखनऊ मे तश्रीफ रखते हैं। जो कुछ अस्बाब ख़रीदना है उनको लिख भेजो, वह ख़रीद कराके भेज दें। अगर्चे मुझे मालूम था कि आप लखनऊ मे हैं मगर यह ख़याल कभी नही आया था कि आपको इस बारए-ख़ास[14] मे तकलीफ दूँ। बहरसूरत एक फिहरिस्तें अस्बाबें ख़रीदनी मलफ़ूफ़ें ख़तें हाज़ा[15] है। इसके मुआफिक किसी आदमें-मोतबर की मार्फ़त ख़रीद करके बजरिये रेलवे बहुत जल्द रवाना फर्माइए कि अैन इहसान होगा। ख़ुदा करे आप शादी के वक्त तक यहाँ आजायँ तो इस कारें ख़ैर में मुझको आपसे बहुत मदद मिलेगी।

१ ज्यामिति सटिप्पण २ उत्सुक ३ ख़ुदा उसको सलामत रखे ४ विरक्त ५ निवेदन-पत्र ६ असीम अनुग्रहकर्ता ७ हमेशा आपकी बुज़ुर्गी रहे ८ पूरे तौर पर ९ ख़ुदा से १० प्रार्थी ११ सुपुत्री १२ विवाह १३ जहेज़ १४ कष्ट विशेष १५ इस लिफ़ाफे के साथ।

यह भी इत्तलाअन गुजारिश किया जाता है कि नूरचश्मी की शादी का जहाँ से पहले पयाम हुआ था और फिर बादहू कुछ झगड़े निकल आए थे, वही तकर्रुर[1] हो गया। हुसैनुद्दीन की वालिद: कुछ जियाद: खुश नही है मगर कौमिय्यत के लिहाज से मैं राजी हो गया।

हुसैनुद्दीन की वालिद: का यह भी खयाल था कि अस्बाबँ जहेज वगैर: के खरीदने की क्या जरूरत है, और लड़के के वालिदैन भी इसी बात पर जोर देते है कि नक़्द दे दिया जाय। मगर मेरी राय है कि जब देना ही है तो नाम करके क्यो न दिया जाय। चार अपने परायो को भी मालूम हो जाय कि क्या-क्या दिया गया और रुपयो की थैलियाँ या नोट अगर चुपके से दिये गये तो उसे कौन जानेगा।

रजबँ आइन्द की अवाएल[2] तारीखों मे शादी से फ़रागत हो जायगी। खैर मिर्जा साहब, खुदा ने इस फ़र्ज से भी अदा किया। सब छोटे-बड़ो की तरफ़ से दुआ-बन्दगी-सलाम कुबूल हो।

मुकर्रर अर्ज यह है कि अगर किसी वजह से आपका आना न हो सके तो अजीजी बाकरहुसैन और बशर्तें इमकान[3] उनकी वालिद. को जरूर रवान कर दीजिएगा। वर्न. शिकायत होगी; बल्कि मैं तो कहता हूँ कि अगर आप इस मौके पर तशरीफ रखते होते तो बेहतर था। फकत्।

राकिम हिदायतहुसैन पेशकार

सैयद साहबँ मन, तस्लीम, मुबारकबाद। इनायतनाम: आपका आया। अगरचें शादी ब्याह के मौके पर कोई अम्र हौसलामंद माँ-बाप के खिलाफँ तबीयत लिखना अक्सर नागवार होता है, लेकिन मै खयाल करता हूँ कि हर शख्स अपनी आजाद राय के जाहिर करने पर किसी तरह मना नही किया जा सकता। आपके खत से मालूम हुआ कि दो अम्रो[4] मे मावैन[5] आपकी राय और हुसैनुद्दीन सल्लमहू की वालिद. यानी आपके अह्लखानं.[6] की राय के इख्तलाफ है। और दोनो अम्रो मे हक आपकी बीवी की तरफ है। मगर कुछ लिखते नही बन पडता। अगर शादी का तकर्रुर हो गया और मुहाइदे तर्फ़ैन से तै पा गए, तो अब यह लिखना फुजूल है कि आपने अच्छा न किया। माशाअल्लाह साहबजादी आपकी ख्वान्द.[7] और निहायत ही सलीमुत्तब्अ[8] है। और वह नौजवान जो आपका दामाद होने वाला है, मैंने सुना है (खुदा करे झूठ हो) अलिफ के नाम बे भी नही जानता। कौमिय्यत के बाब मे 'हर कि शक आरद काफिर गर्दद[9]'। मगर जनाब अगर लडकी की आफियत[10] मजूर थी तो इस जाहिलाना कौमिय्यत के खयाल को चूल्हे मे डाला होता। अब मजबूरन यह मुझे

---

१ निश्चय २ आरंभिक ३ यथासंभव ४ बातों में ५ बीच में ६ गृहस्वामिनी ७ शिक्षित ८ सौम्य ९ क़ौमिय्यत में शक करना तो मानो कुफ़्र है १० सुख।

और मेरे मिस्ल आपके और दिलसोज (दिलजले) दोस्तों को यह कहना ही पड़ेगा कि अल्ख़ैर फी मा वका[1]। यह जो आपने एक मर्तबा फ़र्माया था कि अगर्चे लड़का जाहिल है लेकिन निहायत ही गरीब और कमसुखन है, इसका मैं कायल नही। इसलिए कि आपको इसका तजुर्बः किस तरह हुआ और अगर हुआ भी तो वह गलत उसूल पर मब्नी[2] है। सोना जाने कसे और आदमी जाने वसे। जनाव वह लड़का जव आपके मकान पर बतौर बरदिखौवे के आया होगा तो क्या आपसे उसी वक़्त गाली गलौज करता या हुश्त-मुश्त करता, तो आपको उसकी जाहिलीयत का यकीन होता। जाहिल से सिवाए जाहिलीयत के और किस वात की तववक़ो[3] हो सकती है। वहर-सूरत जो कुछ आपने किया मैं तो उसे कभी अच्छा न कहूँगा। मगर हर कसे मसलहतें ख़ेश निक़ो मीदानद[4]। दूसरा अम्र यह है कि भाभी साहिबा की राय बहुत ठीक है कि नक्द रुपया दे दिया जाय। अफसोस है कि आप ऐसे लायक ख्वान्दः शख्स के ऐसे पस्त ख़यालात हो। अव्वल तो नाम का ख़याल ही लगो है और अगर विलफ़र्ज़ हो भी तो अपने जिले के किसी लोकल अखवार मे छपवा दीजिए या मुझको इजाजत दीजिए मैं छपवा दूँगा कि मीर हिदायतहुसैन साहव पेशकार ने अपनी बेटी के जहेज मे पाँच हजार रुपये दिये। नक्द रुपया देने मे एक कितना वड़ा यह नफा है कि अगर दामाद आपका बख़याल आपके सलीमुत्तब्अ और नेक-नफ्स[5] है तो एक सरमाय.[6] उसके पास मुहैया हो जायगा, जिससे वह किसी किस्म की तिजारत कर लेगा। जेवर वगैर. के देने को मैं चन्दाँ बुरा नही ख़याल करता, इस लिए कि उसमे नुकसान कम है। मगर यह लचका फट्टे के कपड़े, ताम्बे के बर्तन, पलँग, पीढ़ी और तमाम अस्वाब जिसकी विलफेल कोई जरूरत नही है, सिवाए दामो पर ख़रीद करके लडकी के साथ कर देने मे क्या ऐसी रुसूखियत[7] है। अगर ख़ुदा न ख्वास्तः लडके वाले इस कदर मुहताज है कि उनके चूल्हे पर तवा तक नही है, उस सूरत मे अलवत्ता थोड़ा सा अस्वाब हस्वें जरूरत दे दीजिए ताकि आपकी ख़ुशी हो जाय। वर्ना मैं तो इसकी भी राय न दूंगा। लड़का या उसके वालिदैन हस्व जरूरत ख़रीद कर लेंगे। कता नजर फर्ज़े इन्सानी और उख़ूवतें-इस्लामी[8] के, मुझको आपसे मुहब्बत है, इसलिए यह चन्द कलमे वतौर नसीहत अपना फ़र्ज समझ के लिख दिये हैं। अभी रजव के वहुत दिन वाकी है। उम्मीद कि आप इन उमूर पर कामिल गौर करके जवाव तहरीर फर्मायेंगे। अगर मेरी राय मक्वूल न हो तो फिहरिस्त आपकी मैंने इहतियात से सदूकचे मे रख छोडी है। उसी फिहरिस्त के मुताविक या अगर कुछ तरमीम कीजिए तो फिहरिस्त तरमीमशुदः के बमूजिब कुल अस्वाब मैं अपने

---

१ ख़ैर, जो हुआ वह ठीक हुआ २ निर्धारित ३ आशा ४ हर आदमी अपनी मसलहत को अच्छा ही समझता है ५ सौम्य और चरित्रवान ६ पूंजी ७ विशेषता ८ इस्लामी भाईचारा।

हाथों हत्तल-इमकान[1] निहायत किफायत से खरीद करके रवाना कर दूँगा। और हाँ, खूब याद आया। मैं अफसोस के साथ लिखता हूँ कि मेरी और वालिदए बाकर-हुसैन की शिरकत इस तक्रीब मे नही हो सकती। और न मैं उसकी ज़ियादा ज़रूरत समझता हूँ। अज़ीजी बाकरहुसैन को आपकी खुशी के लिए जरूर भेज देता। मगर वह आजकल मेरे साथ इल्मुल् एहजाज़ की एक मोतवर अ़रबी किताब के तर्जुम: करने में मसरूफ है। मीर साहब मेरी साफगोई[2] से खफा न हो जाइएगा। मेरे खत के हर फिक्रे को कम अज् कम दो बार पढ़िए और उसके नताएज[3] पर गौर कीजिए। वावजूद इल्मों फज्ल के भी इन्सान अगर अपने और अपने मुतअ़ल्लिकीन[4] और अपने अहबाब[5] की बुराई-भलाई पर नज़र न रखे तो हैफ[6] है।

भाभी साहबा को सलाम और बच्चों को दुआ।

रकीम: खाकसार-आबिद

जनाब मिर्जा साहब मुअज्जमें बन्द: दाम मज्दकुम, तस्लीम। आपके खत का एक-एक फिक्र: मोतियो में तौलने के काविल है। और जो कुछ आपने लिखा है उसकी हकीकत को मैं खूब समझे हुए हूँ, मगर बाज वजूह से मै मजबूर हूँ। और मैं उसके हर लफ्ज़ पर अमल करता मगर हमचश्मो[7] खुसूसन अजीजो की तानाजनी का खयाल मुझे मजबूर किये देता है। बहर-सूरत मैंने फिहरिस्तें अस्वाब मे बहुत तरमीम कर दी है।

लडके के माँ-बाप बहुत मुतमव्विल[8] है। शायद इसकी नौबत न आये कि किसी दुकान या कारखान: करने की बिलफेल ज़रूरत हो, और उन लोगो की बजाहिर यही खुशी मालूम होती है कि हसबें मामूल[9] जहेज दिया जाय, क्योकि उधर बरात वगैर: की तैयारियाँ बहुत धूमधाम से होगी। वह लोग चाहते हैं कि उसी तैयारी की हैसियत के मुआफिक इधर भी सामान किया जाय।

इस शादी मे आपके शरीक न होने का मुझे मलाल हुआ। अस्वाव बहुत जल्द फर्माइए।

नियाजमन्द हिदायतहुसैन

मीर साहबें मन, तस्लीम। आपका खत आया। फिहरिस्तें तरमीमशुद:[10] और पहली फिहरिस्त को मैंने मिला कर देखा। सिर्फ सौ-सवा सौ रुपये का फर्क है। आप लिखते है कि मेरे खत का हर लफ्ज़ मोतियो मे तौलने के लायक है।

---

१ यथाशक्ति  २ स्पष्टवादिता  ३ परिणामो  ४ सम्बन्धियों  ५ सगों  ६ खेद  ७ दोस्तों  ८ सम्पन्न  ९ चलन के अनुसार  १० परिवर्तित।

अगर मैं भी आपकी तरह इवारत-आराई[१] जानता होता तो इस कद्रदानी की मोतियों से जियाद किसी कीमती चीज से मिसाल देके शुक्रिया अदा करता। आप कहते है कि लफ्ज-लफ़्ज मोतियो मे तौलने के लायक है। मगर अफ़सोस कि आपने उसे ठिकरियो मे भी न तौला। इस लिए कि इल्म की कद्र अमल यानी नसीहत की कद्र उस पर कारवन्द[२] होना है। मीर साहव आखिर आपने अपनी ज़िद की। कुछ आप पर मौकूफ नही। तमाम कौम तक्लीद के दाम मे फँसी हुई है[३]। अम्रे गैरमाकूल पर किसी तानाजनी का खयाल यानी चे॰? इसी मौके के लिए किसी उस्तादें कामिल ने यह भद्दी सी मसल कही है, 'जिसने की शरम उसके फूटे करम'। मीर साहव मैं सच कहता हूँ कि इस गलती मे अगर सिर्फ आपकी जात खास का जरर[४] होता तो मुझे चन्दाँ अफसोस न होता। हैफ आप अपनी ज़ोफें तवीअत[५]-की वजह से एक नाकर्द.गुनाह[६] मासूम वच्ची को मारिज़ें खतर[७] में डालते हैं। आपके खत की इवारत पढके अरव की जाहिलीयत का जमाना और वॅअय्यि ज़म्बिन् कुतिलत[८] वाला मजमून मेरी आँखो मे फिर गया। लड़की को वेसमझे वूझे कही झोंक देना ज़िन्द: दफ्न कर देने से वदतर है। मगर अव यह अफसोस विलकुल वेमौक: है। अस्वाव इसी हफ्त: खरीद करके रवाना करता हूँ, खातिर जमा रखिए।

नियाजमन्द आविद

मख्दूमी व मुकर्रमी जनाव मिर्जा साहव दाम वरकातकुम, तस्लीम। आपके एक दोस्त की जवानी मालूम हुआ कि आपने कोई किताव "रोजानः जिंदगी" के नाम से तस्नीफ फर्माई है[९]। अगर वह छप गई हो तो एक जिल्द उसकी मर्हमत फर्माइए[१०]। मम्नून हूँगा।

खादिम महादेवपरशाद

जनाव मन, अभी उस किताव के छपने की नौवत नही आई। और शायद वह किताव कभी न छप सके।

रकीमएनियाज-आविद

मुअज्जमी जनाव मिर्जा साहव, तस्लीम। मैं एक मुद्दत से आपकी तारीफें सुना करता हूँ और आपके खयालात मालूम करने का मुझे कमाल शौक है। आपके मुख्तसर जवाव ने मुझे विल्कुल मायूस कर दिया। एक तो इसका सवव-तहरीर फर्माइए कि वह किताव क्यो न छपेगी। दूसरे अगर कोई किताव आपकी तस्नीफात[११] से छपकर तैयार हो तो मुझको ज़रूर इनायत कीजिए।

अरीज. खादिम—महादेव परशाद

---

१ शब्दों का आडम्बर २ अमल करना ३ लकीर की फ़कीर बनी है। ४ क्षति ५ मन की दुर्वलता ६ निरपराध ७ खतरे में ८ जाहिलीयत के जमाने में अरव में लड़कियाँ क़त्ल कर दी जाती थीं, उनकी वेकसी की चर्चा है ९ रचना की है १० देने की कृपा कीजिए ११ रचनाओं में से।

जनाब मेरी तस्नीफ से जो किताबें छपी है वह सब इल्मी है। फिहरिस्त कुतुबँ मतबूअ.[1] की रवाना करता हूँ। जो किताव मतलूव[2] हो पब्लिशर को खत लिखकर मँगवा लीजिए।

"रोजान. जिंदगी" के न छापने की वजह यह है कि यह मुख्तसर किताब मैंने मिर्ज़ा रुसवा साहव की फ़र्माइश से लिखी थी। वह उनके हवाले कर दी। मिर्जा साहव ने जो मेरी लाइफ तहरीर फर्माई है, उसमे अक्सर मजामीन इस रिसाले के मौजूद है। क्योकि किताव "रोजान: जिदगी" का तअल्लुक वित्तख्सीस मेरी ज़ातियात से था[3], जिसको मैंने सीधे-सादे लफ्जो मे लिख दिया था। मिर्जा साहव ने उसको शायराना सिताइश[4] और दोस्ताना नवाजिश[5] के साथ खल्तँ मव्हस करके[6] एक अजीव चीज वना दिया जिसको या वह खुद समझ सकते है या ऐसे असहाव जिनको नाविल देखने का शौक है। खुलासा यह कि मेरे वाकिआत को एक दिलचस्प फसाना वना दिया। मेरी पूरी लाइफ का खुलासा यह है कि "मैं एक चलती हुई कल हूँ। जिसकी कमानी ज़रूरत और जिसकी कूवत मजबूरी है" मैं ऐसा ख़याल क़रता हूँ कि हर इंसान की लाइफ का यही खुलासा है। मेरी लाइफ मे मेरे वाज़ निज के हालात ऐसे लिख दिये हैं जिनका मुश्तहर कहना शायद और कोई शख्स गवारा न करता। मगर मिर्जा साहव का खयाल है कि इससे खल्कुल्लाह[7] को फायदा पहुंचेगा। अगर ऐसा है और मेरी आरजू है कि ऐसा हो, तो इससे विहतर क्या वात है। ज़ियाद: नियाज।

आपका खादिम आविद

वी० एस-सी० का इम्तहान बाकर ने मद्रसतुल्उलूम अलीगढ़ में पास किया था। जव वालिद को अपनी कामयावी का हाल लिखा, उसके जवाब मे जो खत मिर्जा साहव ने अपने लायक फर्जन्द[8] को लिखा था उसको विऐनिही नकल किये देते है।

अजीज अज् जानमन मिर्जा बाक़रहुसैन सल्लमहू। वाद दुआ के मालूम हो कि तुम्हारे वी० एस-सी० डिग्री का इम्तहान पास करने का हाल मालूम हुआ। इस मौके पर अगर मै खुशी न जाहिर करूँ तो तुम नाखुश होगे। इसलिए तुम्हारी खुशी के लिए मैंने तुम्हारे नाम के साथ, कब्ल इसके कि यूनीवर्सिटी के हाल से तुम गाउन पहने हुये डिप्लोमा हाथ मे ले के निकलो, लफ्ज वी० एस-सी० भी तुम्हारे अल्काव मे वढा दिया। और खिलाफँ मामूल आज तुम्हारे नाम के पहले लफ्ज़ मिर्जा भी लिखा है। वाकई अव तुम इस कौमी और खान्दानी खिताव के शायानँशान[9] हो।

---

१ प्रकाशित पुस्तकों २ अभीष्ट ३ खास करके निजी जीवन से सम्बन्धित था ४ प्रशंसागान ५ मित्र की कृपा ६ कुछ का कुछ करके ७ ईश्वर की सृष्टि (मानव) ८ सुपुत्र ९ उपयुक्त।

मेरे नजदीक आला दर्जे की तालीम शराफत का तमगा है, जिससे मैं ज़िन्दगी मे नामुसाअदतें ज़माने[१] की वजह से महरूम[२] रहा। मगर यह अच्छी तरह याद रखना कि खाली शराफत का तमगा भूक-प्यास की तस्कीन के लिए काफी नहीं है। हरएक तब्ई हाजत[३] के लिए तब्ई मशक्क़त[४] ज़रूरी है। अगर तुम्हारे लिए कोई पानी न भरे तो जब प्यास लगेगी तुम ही को डोल ले के खुद ही कुवें पर जाना पड़ेगा। अगर कोई तुम्हारे लिए रोटी न पकाये तो तुम्हे खुद ही पकाना पड़ेगी। तुम माशा-अल्लाह खुद साहवें इल्म हो, मुझसे जियादः इस वात को समझ सकते हो कि जो तह्रीक[५] जितनी कूवत से एक मर्तवा हुई वैसी ही तह्रीक के लिए उतनी ही क़ूवत हमेशा लाजिमी है। अगर यह न होता तो फिर इल्म मीकानात[६] में कोई मिकयास[७] न मुकर्रर हो सकता। और न इस इल्म का इन्जिवात[८] हो सकता। निजामें शम्सी[९] और सैयारात[१०] से लेकर एक कतरए आव वल्कि हर जर्रह इस मीकानी कानून के तावे है। व ज़ालिक तक्दीरुल्-अजीजुल्-हकीमु[११]।

रोटी वगैर मेहनत के नही मिल सकती। मेरी मुराद जिस्मानी और तब्ई मेहनत से है। वह शुगल वेकारी, जिसे लोग दिमागी मेहनत कहते है, मेरे नज़दीक इस मकसद के लिए मुफीद नही। हाँ कलों की ईजाद से इसान को यह फायदा हुआ कि मशक्कतें वदनी में किफायत और वचत हो गई। मगर तहरीक[१२] और मुहर्रिक[१३] की कूवतों मे जो मसावात[१४] थी वह विऐनिही वाकी है। जो काम जिस कूवत से होता था वह अव भी उतनी ही कूवत से होता है। कलो की ईजाद ने काम की मिकदार को वढ़ा दिया। मगर इस सवव से काम की ज़रूरत दुनियाँ में ज़ियादः हो गई। और यही वजह है कि इन्सान को फिर भी फुरसत न मिली। जितने काम की जरूरत वढी कलो ने उतनी ही मेहनत का वचाव कर दिया। अगर मुआदिलत[१५] के दोनों तरफ से यह दोनो वरावर चीजें निकाल ली जायँ तो फिर भी इन्सान की जाती हाजत एक तरफ और उसकी जाती मशक्कत दूसरी तरफ वाकी रह जायगी। यह एक ऐसी जरूरी मुआदिलत है जो ता-कयामें-कियामत (वल्कि उसके वाद भी) वाकी रहेगी। अगर ऐसा न होता तो कलो की ईजाद के वाद कारखानों मे कारीगर नज़र आते न खेतो मे किश्तकार[१६]।

मसलन रोटी की जरूरत जो सब जरूरतो से जियाद. है, उसी का हाल देखो। तमाम आलम की जमीनें मजरूअ, एक रक्वए आराज़ीए महदूद है। इसानो की तादाद वढती जाती है। कलों की ईजाद ने जितना मेहनत का वचाव करके पैदावार को

---

१ समय की प्रतिकूलता २ वञ्चित ३ स्वाभाविक आवश्यकता ४ स्वाभाविक श्रम ५ गति, हरकत ६ प्रकृति-ज्ञान ७ मापदण्ड, पैमाना ८ नियमित ढाँचा वन सकता ९ सौर (सूर्य से सम्वन्धित) १० नक्षत्रों ११ यह खुदा की वनाई क़ुदरत है १२ गति, हरकत १३ गति देने वाला १४ संतुलन १५ तराज़ू १६ किसान।

बढ़ाया उतने ही खाने वाले बढ़ गये। खाने वालों के बढने से मांग जियाद: हो गई, क़ीमत वढ़ गई। कीमत का बढ़ जाना विऐनिही मेहनत का बढ़ जाना है। यह ज़रूर है कि मांग के बढने से देसावर बढ जाता है और उससे कीमत घट जाती है। यह निस्बत हमेशा दो खास ज़िदो के मावैन घटती-बढ़ती रहती है।

एक लतीफा तुम्हे सुनाते है। हमारे एक दोस्त थे, पादरी साहव ताज़: विलायत। एक दिन मैं उनकी मुलाकात को गया। गर्मियों के दिन थे। खस की टट्टियाँ लगी थी, पंखा-कुली पखा खीच रहा था। इत्तफाकन पंखा-कुली किसी ज़रूरत से पंखा छोड़ के चला गया। सख्त गर्मी हो गई। उस पर कुछ जिक्र चला। पादरी साहव ने फर्माया, वाकई वड़ा सख्त काम है। दिन भर हाथ नही रुकता। अगर अवकी मैं विलायत गया, इस मक्सद के लिए एक कल वनवा लाऊँगा। साहव ने ऐसा ही किया। पखा खींचने की कल ईजाद की। विलायत से बनवा के लाए मगर उससे क्या हुआ। मेहनत का खर्च तकरीबन वही रहा। इस लिए कई सौ रुपया सर्फ करके कल तैयार हुई। फिर हिन्दोस्तान मे आने-जाने का खर्च:। इस हिसाव से अगर देखा जाय तो वही माहवारी पड़ जायगा। पखा-कुली भी बेकार न रहा होगा। हाजतो ने उसको और काम मे लगा दिया होगा। खुलासए तकरीर यह है कि कलो के ईजाद होने ने आदमी को वेकार नही कर दिया। मेरी राय मे बदनी मेहनत करना हर शख्स पर वाजिव है। और वाजिव भी कैसा, ऐनी या किफाई। इसलिए एक मिसाल लिखता हूँ। जिससे मैं ख़याल करता हूँ कि मेरा मतलव तुम बखूबी समझ जाओगे। थोड़ी देर के लिए फर्ज कर लो कि तुम अपने फारम पर हो और बरसात का ज़माना करीव है। मक्का चमार ने अपना छप्पर बाँधा है। अब वह उठा के कच्ची दीवारो पर रखना चाहता है। लोग छप्पर उठाने के लिए जमा हुये है। सिर्फ एक आदमी की कमी है। तुम मौजूद हो। क्या ऐसी हालत में तुम अपनी बी० एस-सी० की डिग्री का तफाखुर[1] अपने दिमाग़ में लिये हुये स्टडी रूम (किताव देखने का कमरा) मे बैठे रहोगे। और उस गरीव के छप्पर उठाने की तकलीफ अपने शान के खिलाफ समझो गे? मुझे तुम्हारे इख्लाक से कभी उम्मीद नहीं हो सकती। इसी मिसाल से समझ लो नव्ई[2] जरूरतों का वार उठाने के लिए कूवतें इज्तमाई[3] की जरूरत है और मैं कहता हूँ कि इसके लिए हर शख्स को हिस्सए-रसदी तबई मशक्कत करना फर्ज़ है। हर शख्स को कम अज कम इतना जरूर करना चाहिए जो उसकी ज़ाती हाजतों के मसावात[4] को पूरा कर दे। और अपनी जाते खास के लिए उसको दूसरो का बार न उठाना पडे।

हमारे मुल्क के देहात का दस्तूर है कि फ़स्ल की तैयारी के वक्त लोगों के हुकूक फी बीघा या फ़ी खेत दिये जाते हैं। उनमे से एक हिस्सा फकीर का भी होता

१ शान, घमण्ड २ इंसानी ३ सामूहिक ४ बदले में कर्तव्य।

है। जो लोग बिला मेहनत दुनिया की खेती से फायदा उठाते है उनका हाल मिस्ल उन देहाती फक़ीरो के है।

मैं इस हक को कोई हक नही समझता। वल्कि यह एक किस्म का सद्क़ः है जो और लोग अपने पास से वेकारो को दे देते है। हमारे गावों के करीव किफायत-अली शाह ऐसे ही फ़कीरो में से है जिसको हर फ़स्ल पर अनाज दिया जाता है। उसका देना हमेशा खलता है। मगर एक दिन मैं ख़ुद उसके तकिय. की तरफ निकल गया। उस दिन से मेरा वह खयाल वदल गया। मैंने देखा कि उसकी जात से आइन्दो रवन्द[1] को वडा फ़ायदा पहुँचता है, ख़ुसूसन वोझीलों को। गवाँर भारी-भारी वोझ उठाये हुये पसीना टपकते हुये धूप मे जलते वहाँ आकर छायादार दरख्तो के नीचे दम लेकर ठण्डी हवा खाते हैं, उस कुवें से जो उसका ज़ाती वनवाया हुआ है, पानी पीते है। मुसलमान उसी के घड़ों से और हिन्दू ख़ुद भर लिया करते है। ठीकरे मे आग तैयार रहती है। लोग चिलमे भर-भर कर पीते है। गरज़ कि उसूलें किफायतें आम्मः[2] ने क़िफायत अली शाह को भी वेकार नही छोडा।

शहरों मे वहुत से निकम्मे आलिम फाजिल, मौलवी, पादरी, पण्डित इतना फायदः भी खल्कल्लाह को नही पहुँचाते, निजामें मुआशिरत से[3] अगर उनको कुछ वसूल होता है तो वह हरगिज़ उनका हक नही है। तुम कहोगे कि इख़्लाकी फायदः उनसे पहुँचता है।

हाँ यह सच है। मगर इतना ही इख़्लाकी नुकसान पहुँचता है। इसलिए कि लोग उनकी इज्जत और शान व शौकत देख कर धोका खा जाते है और उसी किस्म के तरीकए जिन्दगी को पसन्द करके इसी मक्सद से तहसीलें-इल्म करते हैं। और वैसे ही इख़्लाक अख्ज करके[4] उनके खलीफा और सज्जाद.नशी वन जाते हैं। उनकी औलाद अक्सर हालतों मे अपने आवाई इल्म व.फज्ल में जिसकी मिकदार वहुत ही कम है, हद से जियाद· फख़्र करते हैं। और लोग इस खयाल से कि उनको तहसीलें इल्म व फज्ल का मौरूसी मलकः[5] हासिल था और उसके इक्तिसाव[6] का ज़रीअः भी उनके पास मौजूद था, जरूर है कि यह लोग वनिस्वत और लोगो के जियाद:तर आलिम व फ़ाजिल हो, उनकी कद्र करते है और उनको विला मेहनत जो यह इज्जत हासिल हो जाती है उसी वजा को उनकी औलाद इख्तियार कर लेती है। रफ्तः रफ्त इल्मों फ़ज़्ल खान्दान से मफ्कूद[7] हो जाता है और सिर्फ़ तफ़ाखुर[8] वाकी रह जाता है।

नई रोशनी वालो मे यही हाल उन लोगो का है जो रिफार्मर वन वैठे है, ख़ुदरा फ़ज़ीहत व दीगराँ रा नसीहत। और अक्सर हालतो मे उसी को जरीय.माश क़रार दे लेते हैं।

---

१ आने जाने वालो को २ सर्वसाधारण की जरूरत की पूर्ति ३ सामाजिक व्यवस्था ४ ग्रहण करके ५ उत्तराधिकार ६ प्राप्ति ७ खत्म ८ शान।

मैंने सुना है कि तुम ला क्लास अटेण्ड करते हो (पढते हो)। मै किसी किस्म के तहसील इल्म को मना नही करता। वल्कि इल्मे कानून का हासिल करना वहुत जरूरी है। जिस सल्तनत के हम तावे है उसके कानून का जानना हम पर फर्ज है। मगर इतनी नसीहत अगर वूढे वाप की मानोगे तो तुम्हारे लिए वहुत मुफीद होगा।

मेरी राय मे इन पेश.वरों को रूहानी मसरंत कभी नही हासिल होती। इस लिए दुनिया के झगडो से एक दम फुर्सत नही मिलती। अगरचें अस्ल पेशए वकालत वुरा नही। मगर वडी एहतियात[1] का काम है। हमारे शहर में चन्द वकीलों ने जो एहतियात इस वाव में की है वह उनका हिस्सा हो गया। शायद तुमसे न निभ सकेगी। गासिव[2] व जालिम की हिमायत करना हर मजहव मे ना-जाएज है और मुझे खौफ है कि इस पेशे मे इसका खयाल कमतर रहता है। इंजीनियरी और इससे वेहतर डाक्टरी है। अगर यह तुमसे हो सके तो करो, वर्ना मेरे पास चले आओ और मेरे साथ हल जोतो। यह वहुत ही उम्द: काम है। वडे लुत्फ से जिन्दगी कटती है। इत्मीनान, फरागत, सेहत सव कुछ इसी काम मे हैं। (कण्ट्री-लाइफ) देहात की जिन्दगी वसर करने का मजा अहलॅशहर क्या जाने। मैं खुदा का शुक्र करता हूँ कि मुझे इमी दुनिया मे खुदा ने वहिश्त अता फर्माई है। अगर तुम्हे खुदा तौफीक दे तो तुम भी यही लाइफ इख्तियार करो। नौकरी के खयाल मे न पडो। वडी-वडी जिम्मेदारियाँ अपने सर पर ले लेना आसान है, मगर उनका निवाह मुश्किल हो जाता है। मेरे जीतेजी तुम इन झगडो मे न पडो, आओ चन्द रोज की जिन्दगी किसी नेक काम मे सर्फ करें। याद रखो कि एक न एक दिन ऐसा आने वाला है जव उलूम मुल्की जवान मे सिखाये जायँगे। अगर फी जमाना वाज उकला[3] ने इस अम्र से इख्तिलाफ किया था कि हमारी जवान यानी उर्दू इल्मी नही हो सकती। लिहाज तालीम उलूम अग्रेजी जवान मे होना चाहिए। यह इख्तिलाफ महज मौजूद जरूरतो के एतवार से था या उस मायूसी की वजह से जो उर्दू की कम-मायगी[4] पर नजर करके पैदा हो सकती है। मेरे खयाल मे यह कोशिश किये वगैर मायूस हो जाना ठीक नही। "ईं फतवए हिम्मत वुवद् अरवावें हुममरा"[5]।

मैंने तुम्हारी वे-इजाजत तुम्हारी वेब्सटर डिक्शनरी को जिल्द से निकाल कर, उसके अज्ज: अलाहिद कर दिये और इण्टरलीव करके दो दो सौ सफहो का एक जुज जुदा कर लिया है। जिस कदर अल्फाज और इस्तिलाहातें इल्मी अल्फाज अग्रेजी के मुकाविले मे मुझ को याद है, उनको लिखता जाता हूँ।

---

१ सावधानी २ लुटेरा ३ वकीलो ४ कमजोरी ५ यह पैगाम दोस्तो के लिए हिम्मत का हौसला वढ़ाता है।

वेब्सटर डिक्शनरी के सफहात का शुमार १६८१ है। अगर ब हिसाबँ औसत एक सफा रोज लिखा जाय (जो कम अज कम है) और एक घंटा इस काम मे सर्फ हो (जो जियाद से जियाद है) तो चार बरस सात महीने ग्यारह दिन मे कुल डिक्शनरी हँसते-खेलते खत्म हो जायगी। एक घंटे रोजान. इस कारॅ-अहम के लिए सर्फ करना कुछ ऐसा बार नही है और अगर इसका शौक तुमको भी वैसा ही हो जैसा कि मुझे है और पाँच घटा रोज हम तुम मिलके मेहनत कर सके तो कुल काम ३३६ रोज मे यानी ग्यारह महीने मे तमाम हो सकता है।

इसमे शक नही कि बाज अल्फाजॅ-अग्रेजी के मुकाबिल मुश्किल से लफ्ज मिलेंगे, मगर यह तुम जानते हो कि मुझे लफ्जों के गढने मे एक खास मलक. है। जब तुम मेरे साथ काम करोगे तो अजब नही कि चन्द रोज मे यह सिफ्त तुम मे भी पैदा हो जाय। शायद तुम कहो कि यह क्योकर हो सकता है। उसकी दलील मुझसे सुनो। अगर. तुम गौर करोगे तो तुम पर वाजेह हो जायगा। दुनिया मे जिस तरह हद से जियाद हसीन आदमी कम होते है, उसी तरह हद से जियाद बदसूरत भी कम होते है। यह जो एक मशहूर मसल औरतो की ज़बान-जद है जो वह औरतो के हुस्नॅ जाहिरी की निस्बत कहा करती है। "मसलन फलाँ लडकी आदमी का बच्चा है।" यानी न गैर मामूली हैसियत से हसीन है न बदसूरत। जेहून और माद्द की मुआविनत[1] का मसल बिलकुल मुन्क्के हो चुका है। शायद इल्मॅ नफ्स के पढने के बाद तुमको इस मसल. मे कोई शक न रहा होगा। तो इसी कुल्लिए को तुम जेहनियात मे भी मुन्तविक[2] कर सकते हो। हासिल कलाम का यह है कि जिस तरह वह लोग कमयाब है जो हद से जियाद अकील है उसी तरह वह लोग भी शाजो-नादर है जो हद से जियाद. बेवकूफ हो। ईडियट के दिमाग की बनावट ही से उसका ईडियट होना जाहिर हो जाता है। इससे चन्द और कजाया को वास्ता[3] गर्दान कर यह अम्र बखूबी साबित हो सकता है कि फित्रत ने हर औसत दर्जे के इसान को औसत दर्जे की काबिलीयतें अता की हैं। मसलन लोग कहते-है कि मौजूँ तब्ई[4] खुदादाद है। इसमे कोई शक नही लेकिन मैं कहता हूँ कि इस खुदादाद काबिलीयत मे कुल इसान शरीक हैं। किसी मे कम और किसी मे जियादः। इसके इमकान से मुझे इन्कार नही कि एक बहुत ही कलील तादाद अजरूए खिलकत गैर-मौजूँ-तबा हो। यकीन है कि तुम मेरी तकरीर का मशा समझ गए होगे। यह मसल बहुत अहम और कबिलॅ गौर है। इसलिए मैं इस पर जियाद· तर तवज्जु चाहता हूँ और यह भी बताए देता हूँ कि इस मसले को मैं क्यो अहम कहता हूँ।

---

१ परस्पर सहयोग　२ धारण (चस्पा) कर सकते हो　३ इनसे व दूसरी बातों से ४ स्वाभाविक रुचि।

इस मसले मे बहुत बड़ी गलत-फहमी वाकै हुई है। न सिर्फ अवाम बल्कि ख़वास मे भी आम ख़याल यह है कि अदमें काबिलीयत की तरफ तादाद जियाद: है, और वजूदें काबिलीयत की तरफ कम। मगर इस्तिदलाल[१] से इसके बर-अक्स[२] साबित होता है। वजूद काबिलीयत की तरफ शुमार बहुत जियाद: है बनिस्बत अदमें-क़ाबिलीयत के।

अजबतर यह है कि जुजई मिसाल यह है कि मेरे नजदीक तकरीबन तमाम इसान मौजूंतबा है और बहुत ही कम गैरमौजूंतबा। और ख़ल्कें-इलाही से यह अम्र मुस्तब्अद[३] मालूम होता है कि उसकी इनायत ख़ास हो, आम न हो।

अजबतर यह है कि न सिर्फ अफराद इन्सान को बल्कि ख़ास मुकामात को भी अक्सर लोग एक ख़ास सिफत के साथ मख्सूस कर देते है। मसलन इस किस्म के जुमले तुमने अक्सर सुने—फलाँ मकाम के लोग कुदरती मौजूं-तबा है। फलाँ खित्त. मरदुमखेज है, वगैर, वगैर। इस अम्र के असली सबब पर जब तुम गौर करोगे तो उसको मेरी राय के मुवय्यिद[४] पाओगे।

मसलन कहा जाता है कि लखनऊ के रहने वाले मौजूंतबा होते है। मै पूछता हूँ कि सिर्फ मुसलमान या हिन्दू-मुसलमानो मे से सिर्फ आला तब्के के लोग या अदना के भी। और फिर यह पूँछना है कि मजाफातें लखनऊ मे जो देहात है वहाँ के लोग भी या सिर्फ हदूदें म्यूनिसिपल्टी के अन्दर जो लोग रहते है। तफ्सीलात मज्कूर. पर नजर करने से तुम्हे मालूम हो जायगा कि असली सबब सोसाइटी है न तबीअत। लखनऊ की सी सोसाइटी मे इस काबिलीयत को जाहिर करने के अस्बाब पैदा हो गए। इसलिए वहाँ हजारहा मौजूं-तबा निकल आए। जिस जगह इस क़िस्म के अस्बाब फराहम हो जायँगे, वहाँ हजारो मौजूं-तबा[५] निकल आयेगे।

जिन लोगो ने सिर्फ मन्तिकें कयासी पढी है, वह इस इस्तिदलाल[६] को शायद इक्नाई कहे। लेकिन तुम माशा अल्लाह मन्तिकें इस्तिकराई के दर्स मे शरीक हो चुके हो और उलूमें तजरबी के पढने से तुमको मवादें इस्तिदलाल के फराहम करने और तर्वियत देने का सलीका हासिल हो गया है। लिहाजा तुम्हारे लिए यह इस्तिदलाल कतई है। अब इस मसले की अहम्मीयत का बाएस सुनो। अक्सर होनहार तालिबें इल्म इस गलतफहमी मे पडकर इक्तिसाब[७] और तक्मील[८] से बाज रहते है। यह कायद. है कि हर इल्म व फन की इब्तिदाई तहसील मे अक्सर दिक्कते वाक़ै हुआ करती हैं। इसका सबब नुक्सें तरीकए तालीम है। इसलिए अक्सर तालीम बसाएत और मुफर्रदात से शुरू होती है और तुमको कैमिस्ट्री के पढने

---

१ तर्क, प्रमाण २ विपरीत ३ दूर ४ अनुसार, पुष्टि में ५ स्वाभाविक अभिरुचि, प्रतिभा। ६ प्रमाण, तर्क ७ (विद्या) प्राप्ति ८ पूर्ति।

से मालूम हो गया होगा कि वसाएत वाद तहरीर और तहलील के हासिल होते हैं। चाहिए था कि तालीम में तहरीर और तहलील के अमल से इब्तिदा करते तो कोई मुश्किल न पडती। इब्तिदा की गई है बिसात से और उनमे तरकीब देकर मुरक्कॅबात पैदा किये जाते हैं। वसाएत की अजनवीयत ऊपर के बयान से वाजेः है। इनके अफ़हाम व तफहीम मे दिक्कत का वाकिआ होना कोई तअज्जुब की बात नही है। मुझे यह मुश्किल तुम्हारे छोटे भाई सादिक को ज्योमेट्रियः पढाने से मालूम हुई। नुकतएख़त सतह जिस्म के हुदूद एक हफ्ते तक समझाया गया। मगर उसकी समझ मे न आए। आखिर मैंने तरीकए तालीम को बदल कर जिस्में तबूअी से इब्तिदा की। फौरन समझ गया और बहुत ही कम मुद्दत मे अश्कालें हिन्दमः समझने लगा। इस किस्म की दिक्कतो के वाकै होने से अक्सर तुलबा वेदिल होकर यह समझ लिया करते है, और आम ख़याल इसी ख़याल को पुख्त. कर देता है कि मुझमे इसको समझने की खुदादाद काबिलीयत नही। कोशिश वेसूद है। यह मुश्किले मेरे लिए सेल्फ स्टडी की वरकतों ने हल कर दी। अव मुश्किल से मुश्किल मसाएल को मैं आसान समझने लगा हूँ। यह ख़त बहुत तूलानी हो गया। एक मजे की बात लिखना अभी बाकी है। वह यह कि मेरे दोस्त और तुम्हारे बुजुर्ग मिर्जा रुसवा साहव ने मेरी सवानॅउम्री लिखकर तमाम कर ली। अव उनका ख़याल है कि उसके साथ ही मेरे खुतूत जो तुम्हारे नाम और दोस्तो को वक्तन फवक्तन लिखे गए हैं जमा किये जायँ। लिहाजा बादें मुलाहिज़ हाजा के जिस कद्र तुम्हारे पास पडे-पड़ाए हो भेज दो और यह ख़त भी वापस कर देना ताकि सवानें उम्री के साथ शाया कर दिया जाय। मिर्जा रुसवा के तर्जें तह्रीर से तुम वाकिफ हो। उन्होने मेरी जिन्दगी के आम वाकिआत को जो हर शख़्स पर हस्वें इक्तिजाएँ[1] वक्त और जुरूरियात के वाकै हुआ करते है, एक नावेल बना दिया है। मगर इतनी इनायत की है कि अशआर नही ठूँसे जिसका मैं ममनून हूँ। वऽद्दुआ।

राकिम-आविद

मिर्जा साहव, अस्सलामु अला मनित्तवअल् हुदा। एक अम्र दीनी ने मुझको इस ख़त के लिखने पर मजबूर किया। वह यह है कि मैंने सुना है कि आप मुफलिसी को गुनाह समझते है। हैफ की बात है कि इसान तकदीर से मुफलिस हो जाय तो उसमे उसका क्या कुसूर है। मगर हाँ सच है आप तकदीर के कायल न होगे क्योकि नेचरियो का मस्लक यही है। तक्सीर माफ हो। एक जमाने मे आप खुद नादार थे। बल्देव मिस्तरी के लडके के पढाने पर नौकरी करने का जमाना शायद इस जाहों सरवत के अहद मे आप भूल गये। जनाव हर हालत मे खुदा से डरना बहुत जरूरी अम्र है। तअय्युशॅ[2] चन्द रोजः मे पडकर खुदा को भूल जाना कुफरानें निअमत[3]

---

१ समयानुसार २ ऐशइशरत ३ ईश्वर की देन से कृतघ्न।

कहलाता है और उस शख्स को जो कुफरानें निअमत करे काफिर कहते है। आप अगरेजी सरकार से तो तवस्सुल (सम्पर्क) रखते है, इसलिए मैं आप से डरता हूँ। फलिहाजा[1] मैंने अपना नाम खत मे नही लिखा। इब्तिदाई जमाने मे आपके अकाएद वहुत दुरुस्त थे और आप रोज. व नमाज के पावन्द थे। अब सुना गया है कि आप बिल्कुल नेचरी हो गए और रोज व नमाज सबको आपने सलाम कहा। एक और अम्र सुनके मुझे सख्त अफसोस हुआ। वह यह कि आप फ़ुकरा[2] व मसाकीन[3] की इआनत[4] को वुरा समझते हैं। यहाँ तक कि फुकरा को पैसा या चुटकी आटा देना आपके नजदीक गुनाहें अजीम है। और जो लोग मस्जिद बनाने या हज्जें बैतुल्लाह या जियारत के नाम से कुछ माँगने आते हैं, उन पर आप दरवाजा सखावत का बन्द कर देते है और कुफ़ और बे-दीनी के कामो मे आपने हजारहा रुपया बतौर चन्दे के दिया। चुनाचे एक नेचरी को आपने विलायत के सफर के लिए पाँच सौ रुपिया बतौर तोशे के दिये। जो किताबे कुफ्रॉ-जलालत की आप लिख रहे है उनके छापने और शायः करने में हज़ारो रुपये के सर्फ का बार अपने ज़िम्मे ले लिया। आपको मालूम है कि कारून पर एक ज़कात के न देने से क्या अज़ाब नाजिल हुआ कि वह जमीन मे धँस गया और ता कयामें कियामत धँसता चला जायगा और यह खजान उसके सर पर वार है।

जुज़ी नेस्त कि दौलत की ज़ियादती से आप मे गुरूर समा गया। गुरूर की बुराइयाँ मिन जमीअुल वजूह[5] सावित हैं। क्या आपको शैख़ अलैरहमः का यह शेर याद नही रहा—

तकब्बुर अजाजील रा ख्वार कर्द,
बजिन्दानें लानत गिरफ्तार कर्द[6]

अर्राकिम अब्दुल्लाह

मिर्जा आविदहुसैन के, इस गुमनाम खत का जवाब जो मय उस खत के अख्बार मे छपवा दिया था, जवाब की नकल यह है.—

जनाव अब्दुल्लाह साहब का खत मैंने पढा। उनकी हमीयतें दीनी[7] से मेरा दिल वहुत खुश होता अगर वह खुलूस[8] के साथ होती और जो कलिमात गैजों गजब[9] उनके कलम से मेरी शान मे निकले उसको मैं मुक्तजाए जोशें दीनी समझता, मगर ऐसा नही है। कब्ल इसके कि उन इल्ज़ामात का जवाब दूँ जो कातिब ने मेरी निस्वत आइद किये हैं, मैं उसे नेक नसीहत करता हूँ, जिस पर मुझे उम्मीद है कि वह आइन्द जरूर अमल करेगा। वन्दए खुदा के नाम से खुतूत लिखना खुसूसन उस हालत मे जव कि इवारत खत की मुतजम्मिन हो[10] किसी जुर्म कानूनी पर, एक अम्रें

---

१ बस इस कारण २ फक़ीरों ३ गरीबों ४ मदद ५ इन सब कारणों से ६ शैतान के घमण्ड करने पर उसको हमेशा के लिए जलील कर दिया। ७ धर्म पर स्वाभिमान ८ सच्चाई ९ कोप-प्रकोप १० संबन्धित हो।

खतरनाक है। क्योंकि खुफिय: पुलिस को जो तनख्वाह सरकार से मिलती है वह फुजूल नही होती। अगर्चे मैंने खुफिय. पुलीस से इआनत[१] नही ली, लेकिन कातिव को माखूज करके[२] सजा दिला सकता हूँ। कातिव को इस अम्र के यकीन दिलाने के लिए कि मैं अपने इस दावे मे सादिक हूँ उसको ऐसा पता वता देता हूँ जिससे वह समझ जायगा कि मैं उसको खूब जानता हूँ। हुसैन आवाद, मशकगंज फैज आवाद। मैं उसको जानता हूँ या नही? अब रहा यह अम्र कि वह मुजरिम है या नही। इस पर उसका गुनहगार दिल खुद शहादत देगा। लेकिन वफ वाऐं अिन्नमा यन्तकमुज्-जओफ (कमजोर से वदला लेना शहजोर के खिलाफ़ शान है) उससे इन्तकाम[३] लेना कसरँ शान समझता हूँ।

उसकी वे-तहजीवी पर मुझे अफसोस हुआ और इसकी वजह वही मुफलिसी है जिसे मैं गुनाह समझता हूँ। अव इल्जामात का जवाव देता हूँ। मै मुफलिसी को गुनाह नही कहता। मगर खुद इख्तियारी मुफलिसी[४] को गुनाह समझता हूँ। खुद इख्तियारी मुफ्लिसी का सवव अस्राफ[५] है और इसी लफ्ज के मफ्हूम[६] को वुसअत[७] देने से और अस्वाव[८] मिल जाते हैं, जिनके जुदा-जुदा नाम है, मसलन दूसरे लफ्जो मे इस अस्राफ को हम खर्च की जियादती और वुख्ल[९] की कमी भी कह सकते है। और उसके अस्वाव काहिली और तनआसानी[१०] है। अल् आकिलॉ तक्फीहुल् इशार[११]।

अकाएद के वाव मे उसको कुछ लिखना मै फर्ज नही समझता। इकरारॅ शहादतैन के वाद किसी को यह हक नही हासिल हो सकता कि शख्स मुकिर[१२] के इस्लाम से इन्कार करे और जो इस पर भी मुन्किर हो तो उस मुन्किर पर किसी अम्र के सुवूत के लिए मोजिज[१३] भी काफी नही है। विहम्दिल्लाह कि मेरे औजाअ् व इख्लाक ने मुझ को सिकात की[१४] नजरो मे वह इज्जत दे रखी है जिसे किसी शख्स मुन्किर का झूठी क़स्म खाना भी मश्कूक नही कर सकता।

वेशक मैंने एक मुतकल्लिम, फकीर, सक्क', नौजवान फाजिल को, जिसने अगरेजी और फ्रेंच इस गरज से हासिल की थी कि मगरवी मुल्को मे जाकर इस्लामी और ईमानी वाज कहे और वहाँ के लोगो को दावतें इस्लाम दे या कम अज् कम उन लोगो के दिलो मे इस्लाम और अहले इस्लाम की मुहव्वत पैदा करने की कोशिश करे, वतौर हदिया मुतहक्किर पाँच सौ रुपिया अपना मजहवी फर्ज समझकर नजर किये थे। ऐसे शख्स को जिसने अपनी तमाम उम्मीदो को खाक मे मिलाकर तमाम जिन्दगी कारॅखैर के लिए वक्फ कर दी, कातिव नेचरी और वदमजहव कहता है। और जो किताबें मैं लिखकर शाया करता हूँ, हाशा[१५] कि उनमे कुफ्रो-जिलालात हो, वल्कि वह मगरवी उलूम की

---

१ मदद २ पकड़वाकर ३ बदला ४ अपने कर्मों कंगाली ५ जरूरत से जियादः खर्च ६ आशय ७ विस्तार ८ कारण ९ कंजूसी १० आरामतलवी का निकम्मापन ११ बुद्धिमान के लिए इशारा काफी है १२ इकरार करने वाले १३ चमत्कार १४ जिम्मेदार लोगो की १५ शायद ही।

किताबें जिनकी इस वक्त निहायत जरूरत है और हजारों बल्कि लाखों बन्दगानें खुदा की भलाई उसमे मुतसव्वुर है, कौम और मुल्क की मुफ्लिसी उसके अदमें इल्म पर मुनहसिर है, मैं खुदा का शुक्र करता हूँ कि मुझे खुदा ने उसके तर्जुम. करने और शाया करने की तौफीक मरहमत की। मस्जिद बनवाने या हज्जो-जियारत के नाम से भीक माँगने वालो को मैं अच्छी तरह पहचान लेता हूँ और अला हाजल्कयास उन लोगो को भी जो मुल्क में तअस्सुब फैलाने या सिर्फ अपना शिकमपुर करने[1] के लिए लोगो को फरेब देकर चन्दे जमा किया करते है।

बल्देव के लडके को पढाने का तान[2] कातिब की सखाफतें अक्ल[3] पर दलील है। किसी किस्म की नौकरी और मजदूरी ऐब नही। बाज उलमाए मिल्लत ने जगलो से लकडियाँ काटकर बाजार मे फरोख्त करने को हकीर न समझा। खुद बाबें मदीनतुल्इल्म[4] हजरत अली मुर्तजा यहूदियो के खेतो मे पानी देने को जलील न तसव्वुर फ़र्माते थे। अफसोस कातिब पेशवायानें दीन के इख्लाक और अक्वाल[5] से बिल्कुल चश्मपोशी करता है।

मैं फख्र के साथ कहता हूँ कि माधो (पिसर बल्देव) के पढाने पर पाँच रुपये का नौकर था और मैंने हुलास लोहार से लोहारी का काम सीखा और उन कामो से बरसो अपने और अपने अहलो अयाल के लिए माय ताज[6] मोहय्या किया। मगर कभी मैंने अपने कारें मन्मबी के करने मे सुस्ती और काहिली नही की। माधो ने मेरी तालीम से बहुत फायदा उठाया। वह इस वक्त आला दर्जे का मेकानिक है और उसको रेलवें मे पाँच सौ रुपया माहवार की नौकरी मिलती थी मगर उसने न की। मेरे कारखाने हद्दादी मे, जिसको मैंने सिर्फ कलो के नमूने बनाकर मुल्क मे शाया करने के लिए कायम किया है, खुशी से मुहतमिम[7] है और इस कारें खैर मे मेरा शरीक है। मैं उसे मिस्ल अपने फरजन्द के समझता हूँ और वह मुझको उसी तरह अपना बुजुर्ग और मुरब्बी खयाल करता है। मुझे फख्र है कि खुदा के फज्ल से मेरी तालीम बेकार नही हुई।

अर्राकिम—आबिद लोहार

गरीबपरवर सलामत

हकीर अर्ज़.

फिदवी क़ौमें शरीफ से है। फिदवी के वालिद सरकार अंगरेजी मे डिप्टी कलेक्टर थे और फिदवी के नाना अहदें शाही मे रिसालेदार थे और फिदवी की नानी नवाब सरवतमहल की मुँहबोली बहन थी। मगर बिल्फेल ब सबब गर्दिश फ़लकें कज रफ्तार के नानेंशबीन. को मुहताज[8] है। आपकी दरियादिली और सखावत का

---

१ पेट भरने २ कटाक्ष ३ ओछी बुद्धि ४ विद्या के नगर के प्रमुख द्वार ५ शिष्टाचार और कथनो ६ जरूरतों ७ मैनेजर ८ सुबह शाम रोटी को मुहताज है।

शुहरा दूर से सुन के आया है। उम्मीद है कि एक लुक्म: नान को पहुँचकर ता उम्र दुआएँ दौलत मे मसरूफ रहे। 'शाहाँ चँ अजवगर वँ नवाजन्द गदारा।'

इलाही आफतावें दौलतें इकवाल ता अवदुल् आवाद तावाँ व दुरख्शाँ वाद।

अर्जी
फिदवी सर्फराजहुसैन
वकलम खुद

इवारत जहरी अर्जी हाजा

जलीलुशान रफ़ीउलमकान मिर्जा आविदहुसैन साहव दाम इक्बालकुम्। वाद एहदाए हृदियए सलाम कि वेहतरीन तोहफए इस्लाम अस्त व इस्तिख्यारें मिजाजें व हाज रियासतें इस्राज वाएसें तहरीरें हाजा यह है कि जनाव मीर सर्फराजहुसैन साहव की शराफतें खान्दानी व नीज लियाकतें जाती से कमा हक्कहू वाकिफ हूँ। अगर आँ जनाव की मसाइए जमील से कोई ओहदाए माकूल उनको सरकारें अंगरेजी मे मिल जायेगा तो यह मुखलिसें कदीम निहायत ही ममनून होगा। अद्दाइए इलल् खैर अवुल् खैर, अवुल् खैरात।

सैयद मुकम्मिलुद्दीनु अल्मुलकव
व तकमीलतुल् उलमा

जनाव मौलाना साहव, तस्लीम। अफसोस है कि सरकार अगरेजी से कोई मद्दें खैरात मेरे हवाले नही है, अगर होती भी तो उसमे से मैं साएल को एक हब्बा न देता। इसलिए कि ऐसा शख्स जो मेहनत करने की क़ूवत रखता हो और शराफतें खान्दानी जताकर भीक माँगे उसकी इआनत करना कौम को भिखमगा वनाना है। साएल शायद कुछ ख्वान्द: है, अगर वह मेहनत करने पर आमाद: हो जाए तो मैं उसको दस मजदूरो की जमाअतदारी पाँच आना रोजान: दे सकता हूँ। इससे जियाद: मैं और कुछ नही कर सकता। मुआफ फरमाइए। साएल ने अपनी अर्ज मे कलिमात गुस्ताखी मेरी निस्वत मे लिखे हैं। मसलन शाहाँ चँ अजव गर...अलख इसको मैं उसकी कम इल्मी पर महमूल करता हूँ मगर हैरान हूँ कि जनाव के मुवालिगातें सरीह और मकाबिरातें वय्यन को किस हद तक मैं शुमार करूँ। खादिमुल् उलमा—आविद

आली जनाव मुअल्लल् अल्काव कद्रदान हर इल्मो-हुनर फैज गुस्तर मिर्जा आविदहुसैन साहव दामल्ताफहू, वाद तस्लीम वसद तकरीम मारूज आँ कि मुद्दतें महीद व असंए वईद मुन्कजी हुआ कि आपकी खैरोआफियत से इस मुख्लिस कदीम को इत्तला नही हुई। वाकई आप अपने दोस्तानें कदीम को विलकुल ही भूल गए।

'तुम हमे भूल गए हो साहव, हम तुम्हे याद किया करते है।'

मुद्दत हुई कि एक पर्चए किर्तास से याद शाद न फर्माया। दरी दिला वुलवुले वोस्तानें फसाहत व कुमरिए सरोसितानें वलागत सादी दौरान व खाकानी आवान नवाव अहमदहुसैन खाँ सल्लमहू अल्-मुतखल्लिस व साहिर ने एक कसीदए वहारिय जू मतलअईन आपकी मद्ह् मे तहरीर किया है। अगर्चे आपके फजाएलों मनाकिव और मनासिवो-मरातिव वेरून अजदायरए नज्मो-वयाँ है मगर जो उमूर अयाँ हैं, उनमे से वाज के ज़िक्र

पर वमिस्दाकें ला यद्रिकाँ कुल्लहू ला यतरिक्कुल्लहू जो कुछ कहा है, खूब कहा है। उम्मीद कवी है कि आप इस शायर नौखेज नाजुक खयाल (जो कि अभी से जौदत और जकावत उसकी शुहरए शुअराए माजी को शरमा देती है) की मेहनत की दाद और लियाकत का सिला देंगे। अगरचें इब्तिदाएँ उम्र मे आप को इस फनें शरीफ़ यानी शायरी की तरफ चन्दाँ तवज्जुः न थी मगर अब मैंने सुना है कि आपने हर इल्म व फन मे महारतें ताम और इस्तेंदादें माला कलाम हासिल की है। पस इल्में शेर मे भी अलाहाजा। लिहाजा आप इस कसीदः से वहुत खुश होंगे। यह वाजह राए आली हो कि तश्वीव इस कसीदः की बिलकुल हस्वें मुहावर' हाल नेचुरल मजाक की है और मजाकें नेचरी आपको वित्तवा वल्कि विल्फितरन पसन्द है। यूँ तो कसीदः अज़ सरतापा मुरस्सः है, खुसूसन वाग का सीन बहुत ही उम्द खिंच गया है, गोया पूरा फोटो है। घोडे की तारीफ मे भी एक शेर कियामत का कहा है। अफसोस है कि इस कसीद' गरा की पूरी नकल हमको दस्तयाब न हुई वर्ना ज़रूर ही शाया करते।

जवाब

मीर साहव ! दोस्तों को भूल जाना एक खुल्कें मजमूम है। मैं अपने दोस्तों को, अगर वह फिलवाकै मेरे दोस्त हों, विहम्दिल्लाह कभी नही भूलता। अपने शागिर्द की मद्ह-सराई मे जिस कद्र शेरी मुवालगो को आपने दखल दिया है उसकी दाद मैं उस हालत मे दे सकता था कि मैं भी मिस्ल आपके शायर होता। और उससे जियादः आपके शागिर्दें रशीद के कसीदः की कद्रशिनासी से महरूम हूँ। 'वल् हम्दु-लिल्लाह अला ज़ालिक।' आपको खुद याद होगा कि अवाएलें उम्र मे आपको शेरगोई पर मलामत किया करता था। मेरा खयाल अब तक वही है। मुझको हर ऐसे काम से जिसमे कोई दीनी व दुनयवी मुन्फअत न हो, नफरतें कुल्ली है और ऐसे फनें रज़ील से जिसमें कोई मज़र्रत हो, खुसूसन खुल्की मज़र्रत, बदर्जए औला नफरत होना चाहिए। अगर आपको कुछ भी अगले दोस्तो का खयाल है तो सिर्फ़ उतनी फिक्र इस मुकद्दमे के समझने के लिए काफी है जितनी एक मिसरा लगाने के लिए करना पड़ती है, या उससे भी कम कि मेरी मद्ह् मे कसीद कहने से ज़ियाद. कोई अम्र लगो व फिजूल दुनिया मे हो सकता है।

मेरे आपके वीच मिजाह न बचपन मे होती थी और न अब। मैं उसको जाएज़ रखता हूँ। आपने अपने रुक. में मुझको खुल्लम खुल्ला नेचरी बताया है और नेचरी भी मुनासिब तवा और फितरत के साथ। ऐ सुब्हान अल्लाह और क्या कहूँ। मैंने आपकी खातिर से कसीद की तशबीब इस नजर से देखी कि वह बाग का फोटू है। मगर आप यकीन ही कीजिए कि इसमे एक बरगें खिजानी का भी फोटू नही है। घोडे की तारीफ मे जिस शेर की आपने बहुत तारीफ की है वह सुरअतें रफ्तार के बाब मे उससे जियादः मुवालिगः मैं (कि शायर नही हूँ) कर सकता हूँ। मर्दे खुदा इस झूठ के तूमार से क्या हासिल। सुरअतें खयाल कहाँ घोड़े की चाल की यह भी कोई

वात है। अगर मेरा घोड़ा पाँच मील वाइसिकिल के साथ दौड़ सके और मैं दौड़ा सकूँ तो विलायत की किसी नुमायश से अव्वल दर्जे का इनाम और तमगा हासिल करने के लायक हो जाऊँ। आपने तमाम उम्र शायरी की है और मैंने विल्कस्द एक मिसरा कभी मौजूँ नही किया। लेकिन बुरा न मानिएगा। हकीकत यह है कि अभी तक आप शायरी के मफ्हूम से भी वाकिफ नही। इल्में जमाल जो फ़न्ने शेर का माखज और अस्ल उमूल है उसका नाम भी आपने न सुना होगा। खैर आपकी उम्र का वहुत वडा और कीमती हिस्सा तो इम लगवियात मे सर्फ हो चुका। अव भी तौव: कीजिए और चन्दरोज़. हयात को किसी ऐसे काम में सर्फ कीजिए जिससे खुदा की खुदाई का या कुछ आपही का भला हो। और अगर 'वफहवाए खोए वद दर तवीअते कि नशस्त', आप इससे वाज नही रह मकते तो अपने साथ होनहार ना-तजर्वेकार लडको को तो न तवाह कीजिए। हज़रत आपका पन्द्रह रुपया वसीक: था इससे निभ गई। यह वेचारे अगर इस शगलें वेकारी मे पड़े तो मारे फ़ाको के मर जायँगे।

और हाँ खूव याद आया। तुम हमे भूल गए...अलख। यह शेर आप ऐसे सिनरसीद की तरफ से मुझ वुड्ढे की शान मे किस कद्र मौजूँ है। मुआफ फरमाइए और आइन्द ऐसे खुतूत से कभी मुझको याद शाद न फ़र्माया कीजिए।

आपका कदीम मलामतगर—आविद

विलायत से एक दोस्त का खत

जनाव मिर्जा साहव, तस्लीम। मैं हस्वुल इर्शाद आपके पैरिस के उस कुतुव-खाने मे जिमका पता आपने तहरीर किया है खुद गया और हकीम उमर खैयाम का अलजव्रा देखा। वाकई जिस मसले के वाव में गुफ्तगू थी, वह कदीम मुसलमानों को मालूम था। आपका खयाल विलकुल दुरुस्त है। मुझे पेरिस मे वहुत ही कम ठहरना था। इसलिए उस किताव की नकल हासिल करने की कोशिश न कर मका। और मेरे खयाल मे शायद मुमकिन भी न हो। व्रिटिश म्यूज़ियम से शायद हर किताव की नक्ल मिल सकती है मगर व सर्फे कसीर। आजकल मेरे जिम्मे वहुत काम है। इमलिए तफ्मीली खत न लिख सका। मुआफ फर्माइए। आइन्द: तातील में आपकी फर्माइशात की तामील करने की कोशिश करूँगा।

आपका खादिम-अव्दुलहमनैन

जनाव मन, आप वैरिस्टरी की धुन मे हैं। मालूम हो गया कि आपसे मेरा काम न होगा। आपकी "शायद" और "कोशिश" ने मुझे विलकुल मायूस कर दिया। वह अल्फाज़ जो अफादह मानिएं शक और शर्त का करते हैं, उनसे मेरी तमल्ली हरगिज न होगी। पेरिस आप गए और लाइव्रेरी मे भी पहुँचे, इसके लिए आपको वक्त मिल गया, जिमका मैं मम्नून हुआ। लेकिन अगर क्यूरेटर से इतना और पूछ लेते कि नक्ल मिल मकती है तो किम तरह, तो कुछ वहुत जियादा वक्त सर्फ न हो जाता। फ्रेंच भी आप काफ़ी तौर से जानते है, लिहाज़ा अजनवीयतें ज़वान का भी उज़्

नही चल सकता। यह कहिए कि याद नही रहा और याद क्यो न रहा। इसका सवव मुझसे पूछिए। आपको तहकीकँ उलूम का जाती शौक नही है। मुआफ कीजिए मैं कुदरती साफ-गो हूँ। लिहाजा वेतमीज वाक़ै हूँ।

ब्रिटिश म्यूज़ियम आप एक न एक दिन जा सकते है। वशर्ते कि उस दिन पार्क जाना मुल्तवी कीजिए। मै यकीनन अर्ज करता हूँ कि आपकी सेहत को एक दिन पार्क न जाने से कोई जरर नही पहुँच सकता। तफसीली खत लिखिए, दो जुमले लिखिए, मगर मतलव के। जियाद. शौक। आपका दोस्त-आविद

शेख साहव, तस्लीम। आप मुझको वर सवीलँ शिकायत लिखते हैं कि मेरें ज़िले में जो मज़हवी मुनाजिरह हुआ तो उसमे मैं क्यो न गया। क्या जरूर है कि जिस किस्म की तवीअत आपकी हो वैसी वेऐनि मेरी भी तवीअत हो। मैने किसी मुनाजिरह का यह नतीजा नही सुना कि किसी ने ऐसी महफिलो के जरीये से कोई फैज हासिल किया हो। न कोई सुन्नी शिया हुआ, न कोई शिया सुन्नी। न कोई ईसाई मुसलमान हुआ न विलअक्स। हाँ जिद और तअस्सुब किसी कद्र जरूर वढ जाता है। और इन कूवतो के वढाने की मुझको जरूरत नही मालूम होती; वल्कि हत्तलइमकान मैं इसके खिलाफ कोशिश करता हूँ और खुदा से दुआ है कि मुसलमानो की ज़िद और तअ्स्सुव के माद्दे में कमी वाक़ै हो। उलमाए मिल्लत ने काफी सरमाएँ तहकीक का मोहय्या कर दिया है। खुसूसन अहलँ इस्लाम ने तो इस वाव मे वहुत कुछ सओ[1] की है। यह सरमाय. तहकीक एक अम्र के मुतालआ करने के लिए काफी है। तू-तू, मैं-मैं से क्या फायदा। पहलेँ कुछ फिक्रँ मआश कीजिए और जब यह हासिल हो जाये तो खल्कुल्लाह की भलाई की कुछ कोशिश या कम अज कम अपनी भलाई की सई फरमाइए। वस्सलाम

आपका नियाजमन्द—आविद

जनाव आप मुझसे परदए निस्वाँ के वाव मे राए तलव फर्माते है। हजूत इस वहसँ वसीअ की अमूमी हैसियत से क़ता नजर करके मैं एक वात इस मुल्क के वाव मे अर्ज किये देता हूँ, जहाँ का मैं भी रहने वाला हूँ और आप भी। यानी यह कि हिन्दुस्तान जन्नत निशान। औरतो का परद तो एक तरफ, मेरी राए तो यह है कि अगर इख्लाक की दुरुस्ती मजूर है तो मर्द भी पर्दे मे वैठे। शहरो की गलियो मे जो फॉहश गालियो की वौछार हर चहार तरफ से रहती है, खुदा न सुनवाए। आजादीए खयाल के साथ वेगैरती मशरूत नही है। पहले अपने मुल्क के इख्लाक को इस दर्ज पर लाइए कि लोग इफ्फत[2] के मफ्हूम की कद्र करे और सेल्फरिस्पेक्ट का खयाल पैदा हो। फिर औरतो के पर्दे के वाव मे कलाम कीजिएगा। अगरेजो की मिसाल न लाइए। वह साहवँ हुकूमत है। सव उनका रोव मानते है। उनकी निस्वाँ जव वाज़ार मे वगैर नकाव के निकलती है तो कोई मजाहम नही होता। हमारी

१ कोशिश २ सतीत्व।

औरतें अगर बतरीकएँ अरब और फारस नकाबपोश भी निकले तो क़ियामत हो जाय। मुझे शहर के गली कूचों मे खुदा से डरने वाले कही नजर नही आते। मिर्जा रुस्वा साहब की राय इस बारे मे निहायत ही लतीफ और माकूल है। वह परदए निस्वाँ के मुख़ालिफ हैं। मगर उनका ख़याल है कि इस बाब मे कोई अम्र इमसे जियादः मुअस्सिर नही है। बल्कि जो साहब परदे के मुख़ालिफ है उनको लाजिम है कि वह औरत को बेपर्दगी की इजाजत दे ताकि और लोगो के लिए एक मिसाल हो जाय। रफ्तः रफ्तः यही तरीकः लोग इख़्तियार करें और जब तक कोई साहब ख़ुद लीडर न बनेंगे यह रस्म कबीह[1] दूर न होगी।　　　　　　　　वस्सलाम

ख़ादिमुल्-अह्बाब—आबिद

अब्बा जान, बाद आदाब व तस्लीमात के अर्ज परदाज हूँ। मेरे साथ के पढने वाले तालिबें इल्म अक्सर आपके इफादात से मुस्तफीद होने का शौक रखते है। इन मुरासिलात मे अक्सर कोई अम्र प्राइवेट नही होता। इसलिए मुझे इसमे कोई बाक नही होता कि और लोग उसे सुनें या पढे। यह मुरासिलः जिसका जवाब मै लिख रहा हूँ मेरे एक दोस्त मौलवी सलाहुद्दीन बी० ए० ने मुझसे लेके पढा। उनका ख़याल है कि शायद आप जीनियस के काएल नही। अगरचें मैने उनको यकीन दिलाया कि नही, ऐसा नही है। लेकिन उनको तशफ्फी नही होती। लिहाजा आप अपने ख़यालात से इस बाबें ख़ास में जियाद.तर तौजीह के साथ[2] मुस्तफीद फर्माइए।

ख़ादिम बाकर

अजीजी बाकरहुसैन सल्लमहू। मेरी तरफ से मौलवी सलाहुद्दीन साहब को सलाम कहना। नही यह बात नही है कि मैं जीनियस का कायल नही हूँ। मैने अपने पहले ख़त मे साफ लिख दिया है कि किसी काबिलीयत का हद से जियाद या कम होना अमूमन नही पाया जाता। औसत दर्जे की सूरत, दिमाग, जेहन, फितरत की तरफ़ से हर शख़्स को इनायत हुआ है। इस इबारत से जीनियस का इन्कार कही नहीं निकलता। मौलवी सलाहुद्दीन साहब का ख़ौफ इस बाबें ख़ास मे काबिलें कद्र है। जजाहुल्लाह ख़ैरन्जजा। मगर यह भी याद रहें कि लाज आफ नेचर को उसके लगवी माने मे मै हरगिज नही लेता, और न कोई आकिल दीनदार इसका कायल हो सकता है। यह एक आमियान. मुहाविर. है। मैं हर मौजूद हादिस को एक फाएल कादिरोमुख़्तार का फेल समझता हूँ। मेरा यह एतकाद है कि बस ऐसा ही होना चाहिए था जैसा कि हुआ।　　　　　　　　रकीम. दुआ—आबिद

इन ख़ुतूत के अलावा और बहुत से ख़ुतूत मिर्जा साहब के नाम आए और उनके जवाब लिखे गये और हर एक ख़त उनमे किसी न किसी मसलें इल्मी की बहस पर है। मगर अभी दस्तयाब नही हुए और इसी तरह वह मज़ामीन जो वक्तन् फवक्तन्

---

१ बुरी रूढि (कुरीति)　　　२ स्पष्ट।

उन्होंने लिखे हैं आइन्द. जब दस्तयाब हो जायँगे तो हम उनको बतौर मकातॅबात मिर्जा आबिदहुसैन साहब अलाहिद. छापकर शाया करेंगे।

मुहसिने कौम मिर्जा आबिदहुसैन साहब दामबरकातहू तस्लीम। खुदा आपकी हिम्मतों में बरकत दे। मैंने सुना है कि आप अक्सर बकारआमद इल्मो का तर्जुमा फर्मा रहे हैं। वाकई इससे कौम और मुल्क को बडा फ़ायदा पहुँचेगा। और जैसा कि आपका खयाल है उर्दू जबान की तरक्की भी उसी मे मुतसव्वुर है। खुदा आपको जज़ाए खैर दे।

जिस कद्र किताबें तबा होती जायँ, उसकी एक-एक जिल्द बजरियें वैल्यू पे-बिल पार्सल मुझको रवाना फ़र्माते रहिए। बल्कि मेरा शौक तो यह चाहता हैं कि जिस क़द्र अजज़ाए जिम किताब के छपते जायं वह मुझको पहुंचते जायँ।

इस मुआमिले मे आपके माथ मुत्तफिक हूँ। जब तक उलूम हमारी जबान मे न आएँगे, मुल्क और कौम की तरक्की नही हो सकती। मगर एक अम्र काबिलें गुज़ारिश है। उसे निहायत अदब के साथ अर्ज करता हूँ। वह यह है कि मुझे खौफ है कि यह तर्जुमे जो आप फर्मा रहे है—और जरूर है सर्फ-कसीर से छापे जायँ—इसके खरीदार मुल्क मे बहुत कम लोग होंगे; क्योंकि मुल्क मे दो किस्म की दर्सगाहे हैं। एक अगरेजी। उनमे उलूम अगरेजी जबान मे पढ़ाये जाते है। दूसरे मुसलमानो की प्रायवेट दर्सगाहे। अव्वल तो उनकी तादाद बहुत कम है, सिर्फ देहली या लखनऊ मे दो चार अहलें इल्म अपने घरों या मसजिदो मे दर्स[1] देते हैं। उनमे वही कदीम अरबी किताबें पढाई जाती हैं। सालहा माल से जो कोर्स मुकर्रर हो गया है उसमे किसी किस्म का तगैयुर[2] नही होता। और न मौजूद. हालत को देख के कोई कह सकता है कि उनमे कोई तगैयुर वाकै होगा। मैंने भी कुछ दिनो लखनऊ मे तालिबइल्मी की है। वहाँ के खयालात से मैं बखूबी वाकिफ हूँ। फिर इन तर्जुमो के खरीदार कौन लोग समझे जायँ। पंजाब यूनीवर्सिटी जब नई-नई काइम हुई थी तो वहाँ यह खयाल पैदा हुआ था कि मगरबी उलूम बजरिये देसी जबानो के तालीम दिये जायँ। मगर बाज़ अकलाएँ कदीम ने बड़े जोर से मुखालिफत की और वह मुखालिफत जमाने को देखते हुए बहुत बे-मौके न थी। इसीलिए पजाब यूनीवर्सिटी मे और ओरियेण्टल डिगरियो के उम्मीदवारो की फिहरिस्त रोज बरोज कम होती जा रही है। फिर आप के तर्जुमो की खपत कहाँ होगी। आखिर मेरा जाती शौक यही चाहता है कि जुमल उलूम अगरेजी बल्कि तमाम मगरबी जबानो से तर्जुमा होके उर्दू ज़बान मे आ जायँ, मगर यह एक किस्म की आरजू है और जरूर नही कि हर आरजू पूरी हो। अए बसा आरजू कि खाक शुद।

---

१ सबक २ परिवर्तन।

मैंने आपका वहुत सा कीमती वक्त ज़ाया किया। मुआफ कीजिएगा। वन्दः को एक मुख़लिस अपना तसव्वुर फ़र्मा के कारोवारें लायकः से याद फ़र्माया कीजिए। जियादः नियाज—

राकिम
वशीरुद्दीन अहमद एम० ए०
अज वरेली

जनाव वशीरुद्दीन साहव एम० ए० दाम अल्ताफहू तस्लीम। आपका खत मुर्सिला आया। वाकई आपकी राए वहुत सही है। और यह उमूर मैं पहले ही समझे हुए हूँ। मगर जव किसी अम्र की खूवी मुतहक्किक हो जाय उसको सिर्फ इस खयाल से कि लोग कद्र न करेंगे, तर्क कर देना हिम्मत से वओद है। अव तो यह काम मैंने शुरू किया है और खुदा चाहे तो पूरा भी हो जायगा। और रफ्तः रफ्तः कद्रदान भी निकल आयँगे। मैंने अपने सरमाए का एक जुज्ञ इस मतलव के लिए अल्लाहिदः कर दिया है। उससे यह कितावें छापकर रख ली जायँगी और वक्तन फवक्तन विकती रहेगी। वफजँ मोहाल जो कुछ आमदनी इस काम से होगी उसमे मैंने अपना कोई हिस्सा नही रखा, वल्कि वह उसी मक्सद के लिए सर्फ किया जायगा। अफसोस यह है कि मैं एक कलीलुल्विजाअ़त शख्स हूँ। सिर्फ पाँच हजार रुपया इस कारें ख़ैर के लिए मैं सर्फ कर सका। चन्द. माँगना मेरी चिढ है। मैं उसे बुरा नही समझता। मगर यह काम मुझसे नही हो सकता। जो अपने से हो सका वह मैंने कर दिया। शायद आपने सुना होगा कि मैंने वेव्सटर डिक्शनरी को भी उर्दू मे तर्जुमा करना शुरू किया है। अगर यह काम वख़ैरों-आफियत खत्म हो गया तो गोया कुल उलूम का तर्जुमा उर्दू मे हो गया। इसलिए कि शायद आपको इससे इन्कार न होगा कि न सिर्फ़ मुझको वल्कि मुल्क मे अक्सर साहवो को मिस्ल मेरे तर्जुमा उलूम का शौक है। लेकिन अक्सर तर्जुमे वेतुके होते हैं या यो कहिए कि हर तर्जुमे का एक जुदागान तुक होता है। इस सही डिक्शनरी का तर्जुमा हो जाने से एक जखीरः मायनो का (जिनमे से अक्सर मेरी गढी हुई होगी) जवानें उर्दू मे मोहय्या हो जायगा। जव तक कोई काम अंजाम को नही पहुँचता उसको मन्सूवः समझना चाहिए। खुलासा यह कि अभी तो यह सव मन्सूवे हैं। जव कोई काम अंजाम को पहुँचे तो तवीअ़त को तशफ्फी हो। जियाद. नियाज।

खादिम
आविद–लखनऊ

मिर्जा रुस्वा का खत आविदहुसैन के नाम

मख्दूमी व मुकर्रमी मिर्जा आविदहुसैन साहव दाम फैजहू तस्लीम। अल्हम्दु लिल्लाह आपकी सवानहउमरी तमाम हुई और हस्वुल्हुक्म आपके मैंने इसमे से अशआर को विलकुल महजूफ कर दिया। खुतूत की नकलें भी हो गईं। सिर्फ एक वात वाकी है और वह यह है कि इस सवान.उमरी का इख्तिताम[1] आपही के कलाम

---

[1] समाप्ति।

पर हो। लिहाज़ा मुतरस्सद हूँ कि वजवाब रकीमए हांजा इस अम्रॅ अहम से मुत्तला फर्माइए कि शेरो-शायरी से आपको इस कद्र तनफ्फुर क्यो है। आप यह समझ सकते हैं कि मेरा यह सवाल आपसे कुछ ऐसा वेजा नही है। इसलिए कि मेरी उम्र का एक वहुत बडा हिस्सा इस ख़ब्त मे बसर हुआ है। इस अम्र के लिखने की मुझे कोई जरूरत नही है कि आप अपनी राय निहायत बेतकल्लुफी से जाहिर फर्माएँगे। इस अम्र की न किसी को आपसे तवक्कु है और न होना चाहिए कि आप क़िसी अम्र मे किसी की मुरव्वत करेगे। इसलिए कि आप मुझसे बारहा फर्मा चुके हैं कि मुरव्वत का मफ्हूमॅ-आम एक खुल्की जोफ है और यह जोफ तरह-तरह की इख्लाकी बुराइयों का मूजिव होता है। नियाजमन्द-रुस्वा

जनाव मिर्ज़ा साहब तस्लीम। आपको मेरे बाज खुतूत से, जो इस सवानेः उमरी के साथ आपने शाया किये हैं, मालूम होगा कि मै तसावी इस्तॅदाद का काएल हूँ। जो खूबियाँ एक फर्देबशर मे पाई जाती है मै बाज कुयूद के, जिनका जिक्र उन खुतूत मे हो चुका है, उनको हर इसान के लिए आम समझता हूँ। अगर मेरा खयाल सही है तो मै कुछ कह सकता हूँ कि मैं भी मौजूँ-तबा और बिल्कूह शायर हूँ और इसी तरह आप विल्कूह मेकैनिक है। लेकिन मुझको वित्तबअ उन कामो से तनफ्फुर है जो वहुत से लोगो का शेआर हो जाता है। चुनाँचॅ आप खूब जानते है कि मैंने अपने वडे लडके वाकर सल्लमहू की तमाम उम्मीदो और उमगो को (जो उसके हम-उम्र नौजवानो को वाद दर्जएँ फजीलत पर फाएज होने के अमूमन हुआ करती है) खाक मे मिलाकर न उसे नौकरी करने दी, न वकालत का इम्तहान पास करने दिया। वल्कि अच्छा खासा हरवाहा वना लिया। अब वह माशा अल्लाह जराअत के कारोबार मे मुझसे वेहतर हो गया। दिमागी वरजिश का सरमाया भी मैंने उसके लिए काफी तौर से फराहम कर लिया था। अब उसके बाज तर्जुमे अरबी कितावो के अगरेजी ज़बान में विलायत पहुँचे। यकीन है कि अन्करीव शाया होकर आप तक पहुँचे। अगरेजी किताबों का तर्जुमा मुवाफिक उस मसूवे के, जिसको बाज उकला नामुमकिन समझ रहे है, बराबर हो रहा है। वेब्सटर डिक्शनरी का तर्जुमा होता जाता है। आप देखिएगा कि उस निअमत से उर्दू जबान दफतन किस मरतब पर पहुँच जायगी। और उलूम के तर्जुमः करने वालों को कैसी सुहूलत होगी और इशा अल्लाह वहुत ही जल्द उसका समर. ज़ाहिर होगा। अक्सर कलो के नमूने जिनकी मुल्क व कौम को जरूरत है, हम वाप-वेटो ने मिलकर तैयार कर लिये। खुदा ने चाहा तो अन्करीव वह दिन आयगा जव मैं अपने फारम पर एक प्राइवेट नुमायश करके दुनिया को दिखादूँगा कि क़ौम के एक या दो मुतनफ्फिस भी आम खयालात और आमियान. अशगाल से वाज रह करके क्या कुछ कर सकते है।

फिर इस वात को एक मर्तवा दुहराने दीजिए। यह सव औसाफ मेरे ही लिए

मख्सूस नही है, और लोग मुझसे वेहतर इन कामों को अंजाम देगे। अव आप ही इंसाफ कीजिए कि अगर हम बाप वेटे शायरी की तरफ झुक जाते तो वह गजल कहता और मैं इसलाह देता। मुशायरो मे गजले पढी जाती। कुछ लोग खातिर से वाह-वाह कर देते तो उससे मुल्क और कौम को कौन सा फाएदा पहुँचता। शायरी का शौक मुसलमानों में एक अरसए दराज से नस्लन वाद नस्लन चला आता है और उसमें जिस कद्र एशियाई मफ़हूम शेर से हो चुकी है वह जरूरत से जियादः है।

मगर असली शायरी जो अहलें यूनान का मफहूम था या उमूमन अहलें योरप का है उस रास्ते मे अभी हमारे शोअरा एक दो कदम भी नही चले है। हमारे लिए वह तरीका विलकुल नया है। आपकी उम्र का एक वहुत वडा हिस्सा इस फन मे सर्फ हुआ है। अगर आप उसकी तरफ तवज्जुः फर्माएँ तो जेवा है। अगर्चे मैं उसे भी तर्कऔला कहूँगा। इसलिए कि आप खूब जानते है कि मै भूक से सदमे उठाए हुए हूँ। इसलिए मैं सवसे जियाद. जरूरी उन मशगलो को समझता हूँ जिससे उस दर्द का इलाज हो।

एक और वात भी मेरे जेहन में समा गई है कि इन कमेटियो और सोसाइटियो से कुछ होता नही है। वहुत बड़े-वडे काम शख्सी मेहनतों से हो सकते हैं। कमेटियो मे इख्तलाफॅ राय और चुना व चुनी मे वहुत सा वक्त जाया हो जाता है। मैं एक जगजू जाहिल कौम से हूँ। अगर-मगर से मुझे चिढ है। जो काम करना है उसको शुरू करके तमाम करना चाहिए। पराये भरोसे से दुनिया का काम नही चलता। कौम मे जो लोग जी-इल्म और जी-शऊर है वह खुद इस वात को समझ सकते है कि हमे किन-किन बातों की जरूरत है। उनमे से किसी एक जरूरत के पूरा करने के लिए अगर एक ही शख्स कमर चुस्त बाँध ले और कुछ कर चले तो वहुत कुछ हो-जायगा। मैंने खुद एक गलती की कि वहुत से काम अपने जिम्मे ले लिये। अगर मैं खुद सिर्फ एक ही काम वल्कि एक काम के कोई जुज की तकमील अपने ऊपर लाजिम कर लेता तो शायद जियाद फायदा पहुँचा सकता। मगर खैर जिन चीजों को मैंने इख्तियार कर लिया है, मैं उम्मीद करता हूँ कि उस काम को अजाम दे दूँगा।

अव मैं इस मुवारक फिक्रे पर अपने खत को, जो आपकी किताव का अजाम है, खत्म करता हूँ।

अस्सैयु मिन्नी वल् अित्मामु मिनल्लाहि।

नियाजकेश
आविद